Reg. No. 124726035RC0001 ISSN : 2562-6086

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

हमारे सुवर्ण चिकित्सक

October-December 2021

Pustak Bharati, Toronto, Canada

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

PUSTAK BHARATI RESEARCH JOURNAL

A Peer Reviewed Journal

त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष- 3, अक्टूबर-दिसंबर, 2021 अंक - 4

प्रधान संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे

रिव्यू कमेटी

डॉ. प्रो. तंकमणि अम्मा, तिरुवनन्तपुरम्
प्रो. हेमराज सुंदर, मारीशस
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, मुंबई
प्रो. डॉ. शांति नायर, केरल
डॉ. सिराजुद्दिन नुर्मतोव, उजबेकिस्तान
प्रो. दक्ष्य मिस्त्री, बड़ोदा
प्रो. कृष्ण कुमार मिश्र, मुंबई

संपादक मण्डल

प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, पश्चिम बंगाल
प्रो. अरुणा सिन्हा, वाराणसी
प्रो. विनोद कुमार मिश्र, त्रिपुरा
प्रो. उमापति दीक्षित, आगरा
प्रो. उपुल रंजीथ हेवावितानागामगे, श्रीलंका
डॉ. मैरम्बी नुरोवा, ताजिकिस्तान
प्रो. दर्शन पाण्डेय, दिल्ली

परामर्ष मण्डल

डॉ. तुलसीराम शर्मा, कनाडा
डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, नई दिल्ली
डॉ. एन. के. चतुर्वेदी, जोधपुर
प्रो. नीलू गुप्ता, अमेरिका
डॉ. मृदुल कीर्ति, आस्ट्रेलिया
प्रो. कमलेश शर्मा, कोटा

संरक्षक मण्डल

डॉ. यशवंत पाठक, अमेरिका
श्री रतन पवन, अमेरिका
श्री पंकज पटेल, अमेरिका

अनुक्रमणिका

संपादकीय

1. वेदों और उपनिषदों में योग की परंपरा 1
   डॉ. रामानंद तिवारी
2. ताजिक और भारत के साहित्यिक संबंधों के इतिहास से 7
   डॉ. मैरम्बी नुरोना
3. 'कामायनी' से ध्वनित सामाजिक मूल्य 14
   डॉ. विदुषी आमेटा
4. हिंदी कविता में संविधानिक मूल्य 24
   डॉ. सुधाकर शेंडगे
5. विदूषक का 'चरित्र' रूप एवं उसके बदलते आयाम 29
   डॉ.मोनिका ठक्कर
6. INDIA AND CENTRAL ASIA: COOPERATION FOR REGIONAL SECURITY AND STABILITY 38
   Tuychiyeva Rano Almamatovna
7. धूमिल के काव्य संवेदना की बुनावट 52
   डॉ. अजीत कुमार पुरी
8. HINDI TEXTBOOKS IN SCHOOL AND LYCEUM 60
   Aytjamol Abdulaziziovna Yunusova
9. राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका 70
   डॉ. सुषमा देवी
10. ज्योतिष शास्त्र का उद्गम वेद 77
    डॉ. मोहित शुक्ल

संपादकीय कार्यालय

Toronto, Ontario, Canada, M2R
email : pustak.bharati.canada@gmail.com
Web : pustak-bharati-canad.com

प्रबंध एवं वितरण

Pustak Bharati (Books-India)Publishers & Distributors
H.No. 168, Nehiyan,Varanasi-221202, U. P. India
email: pustak.bharati.india@gmail.com

पत्रिका का नूल्य / सदस्यता राशि Pustak Bharati Pubs.& Dists. के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मंगारी के खाता संख्या 5144696109 (IFSC: CBIN0281306) में जमाकर उसकी सूचना मेल या नं. +91-7355682455 पर दें।

* प्रत्येक शोध-पत्र में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय

रत्नाकर नराले

“2021”

इतिहास के कई वर्षों मे यह 2021 ऐसा महाभयानक वर्ष निकला कि जिसने अखिल विश्व के सभी देशों को हिला कर रख दिया. कितने लोगों की मृत्यु हुईं, कितने व्यापार बंद हो गए, कितने परिवार नष्ट हो गए, कितनों पर दुःखों के पहाड़ टूट पड़े, कितने काम ठप्प हो गए, रुक गए या मंदा हो गए ... सब अनगिनत! सभी लोग पतझड़ के पेड़ों की तरह अधीरता से धीरज धरे अच्छे दिनों की, अनुकूल काल की, हित के लक्षणों की प्रतिक्षा करते-करते साँस पकड़े थे कि अब 2022 में पदार्पण कर गए हैं. अब, 2022 आ ही गया है तो पीछे मुड़ कर देखें कि इस कठिन समय में, घर में बंद पड़े-पड़े हम सभी ने प्रगति की ओर कितने पाँव फैलाए हैं.

हमारे व्यक्तिगत दुर्भाग्य को कोविड का इतना भारी हादसा पर्याप्त नहीं था, इसलिए ऊपर से मुझे 1 दिसंबर, 2020 पर अचानक ब्रेन-हैमरेज की सर्जरी के लिए अस्पताल में भरती होना पड़ गया. सौभाग्य से प्राण तो बच गए मगर रिकवरी में लगभग सारा वर्ष बिस्तर में काटना पड़ा. बिस्तर में पड़े-पड़े साथी था लैपटाप कम्प्यूटर. बस, उस पर लिखते-लिखते पुस्तक भारती का भला करने में हम लग गए. पुस्तक भारती के रिसर्च जर्नल के साथ-साथ पुस्तक प्रकाशन पर भी गंभीर ध्यान देने का सुअवसर प्राप्त हो गया. फलस्वरूप, 2021 में पुस्तक भारती के लिए लिखी गईं छह अनुपम पुस्तकें - 1. कालिदास के आठ महाकाव्य, 2. भवभूति के महाकाव्य, 3. हिंदू राजतरंगिणी, हिंदी, 4. हिंदू राजतरंगिणी, इंग्लिश, 5. गीत रत्नाकर और 6. गीता की छंद मीमांसा. उसी प्रवाह में 2022 के लिए लिखी जा रही है बेजोड़ पुस्तक “अठारह पुराण विद्या आपके लिए.”

आशा है वर्ष 2022 पुस्तक भारती के लिए, आपके और आपके परिवार के लिए, हिंदी जगत के लिए और अखिल विश्व के लिए आशा की नई ऊँचाई लेकर आया हो. विश्व हिंदी दिवस आप सभीं के लिए शुभ हो.

हरि ओम्!

1 वेदों और उपनिषदों में योग की परंपरा

डॉ. रामानंद तिवारी

किसी भी दर्शन का उद्भव जिज्ञासा से होता है और जिज्ञासा की उत्सभूमि से भारतीय दर्शन की चिंतन-परंपरा का आरंभ हुआ। उसमें आत्मा, परमात्मा, जगत, माया और मोक्ष का तात्त्विक विवेचन देखने को मिलता है। दार्शनिक प्रणाली पर आधारित होने के कारण योग में भी इन तत्त्वों का निरूपण है। भारतीय दर्शन तत्त्वसाक्षात्कार की केवल सैद्धांतिक व्याख्या करते हैं; जबकि योगदर्शन तत्त्व-निर्णय में अन्य दर्शनों से चार कदम आगे निकल गया है। वह दार्शनिक तत्त्वों के साधनात्मक पक्ष पर जोर देता है। उसकी दार्शनिक परंपरा उतनी ही प्राचीन है, जितनी कि वेदों की प्राचीनता। महर्षि कपिल को योगशास्त्र का आदि उपदेष्टा स्वीकार किया जाता है। कपिल वैदिक कालीन ऋषि थे। पिशंग[1] वस्त्र धारण करने वाले ऋषियों के रूप में उनके योगोचित आचार का वर्णन ऋग्वेद[2] में हुआ है। योग सांख्य का ही दूसरा रूप है। सांख्य तत्त्वज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष है तो योग उसका क्रियात्मक।[3] योगसूत्रों के लिए 'सांख्यप्रवचन' का प्रयोग होता है। 'जयमंगला' टीका में योगसूत्रों के उद्धरण 'सांख्यप्रवचन' नाम से दिए गए हैं।[4] योग-साधना की एक वैज्ञानिक प्रणाली है; जिसका संबंध जीवन के क्रियात्मक पहलू से है। इसके अंतर्गत दार्शनिक तत्त्वों के साधनात्मक और चिंतनात्मक दोनों पहलू आ जाते हैं।

महर्षि पतंजलि ने योग का लक्षण इस प्रकार किया है—'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् चित्तवृत्तियों का निरोध योग है। मन, बुद्धि एवं अहंकार के सम्मिलित रूप को चित्त कहते हैं। समस्त स्थूल जगत रजोगुण एवं तमोगुण प्रधान परिणाम है तथा उसके बाहरी या भीतरी संसर्ग से चित्तसत्व में प्रतिक्षण होने वाले परिणाम को चित्तवृत्ति कहते हैं। प्रमाण (सत्यज्ञान), विपर्यय (मिथ्याज्ञान), विकल्प (शब्दभ्रम), निद्रा तथा स्मृति— चित्त की ये पाँच वृत्तियाँ हैं। योग के उक्त लक्षण में निरोध शब्द का अर्थ वृत्तियों का अभाव नहीं; अपितु वृत्तियों का अपने अधिकरण में लीन होना है। वृत्तिनिरोध चित्त की अवस्था विशेष है। योगदर्शन में क्लेश, कर्मविपाक और आशय से असंस्पृष्ट पुरुष विशेष को ईश्वर कहा गया है। वह नित्य, निर्विकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, पूर्ण, अनंत तथा अद्वितीय है। योगदर्शन के अनुसार आत्मा शुद्ध, बुद्ध तथा चैतन्यस्वरूप है; किंतु अज्ञानता के कारण वह भौतिक बंधन में पड़ जाती है। योग-साधना द्वारा जब समाहित चित्त आत्मानुभूति करता है तो बुद्धि सात्विक और निर्मल हो जाती है। इस प्रकार विवेकज्ञान की उपलब्धि होना ही कैवल्य है। इस दर्शन में पुरुष और प्रकृति के संयोग को जगत की सृष्टि और वियोग को प्रलय का कारण बताया गया है; किंतु इसमें विशिष्ट बात यह है कि जीवों के अदृष्ट के अनुसार प्रकृति और पुरुष के संयोग और वियोग

के लिए निमित्त कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार किया गया है।

वैदिक दर्शन के दो रूप हैं— सृष्टि पक्ष और योग पक्ष। प्रत्येक पक्ष एक-दूसरे के तत्त्वों से एकदम विपरीत दिशा में अपने दर्शन की व्याख्या करता है। ऋग्वेद में इसका स्पष्ट उल्लेख है।[5] वैदिक साहित्य में योग की साधना और प्रक्रिया का उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है और जहाँ भी 'योग' शब्द का प्रयोग हुआ है, वह योग-साधना के ही अर्थ का परिचायक है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार भी वेदमंत्रों के निर्माण-काल में योग-मार्ग विद्यमान था।[6] वेदों में योग को यज्ञ कहा गया है। वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान पं. हरिशंकर जोशी ने लिखा है—"योग एक यज्ञ है। वह मुख्यतः दो प्रकार का है; जिसे क्रम से सृष्टि यज्ञ और योग या अतिसृष्टि यज्ञ कहते हैं। जिन ब्राह्मादि सूर्यादि नित्य तत्त्वों का उत्तरोत्तर नाना विकास होता है, उसे सृष्टि यज्ञ कहते हैं; परंतु जिन अनित्य तत्त्वों से योग द्वारा नित्य तत्त्वों की सृष्टि करके अनुभूति की जाती है, उसे अतिसृष्टि या योग यज्ञ कहते हैं। समस्त वैदिक वाङ्मय इन्हीं दो प्रकार के सृष्टि और अतिसृष्टि यज्ञों के वर्णन से ओतप्रोत है।[7] पुरुष या सोम का भोक्ता नाम योग का अपना पृथक् नाम है। जब योगी सोमपान करता है तो सोम भी उस योगी के आत्मेंद्रिय, मन आदि का भोग करता है और आत्मेंद्रिय, मन भी सोमपान के रसास्वादन से अलग नहीं रह सकते। इस भोगावस्था का नाम विष्णु का 'परम पद' या 'परागति' कहा जाता है। ऋग्वेद में भी यह उल्लेख है कि इस परम पद को जाग्रत करने वाले योगी अपनी समाधि में वैसे ही स्पष्ट देखते हैं जैसे हम नग्न आँखों से आकाश में ज्वलंत सूर्य को देखते हैं।[8]

वेदों में योग-तत्त्वों का उल्लेख अनेक मंत्रों में देखने को मिलता है। ऋग्वेद में यह वर्णन आया है कि प्राण रूपी योगी ऋषि जाग्रत रहकर योग-प्रक्रिया में संलग्न होकर विष्णु के परम पद को समिन्ध करते हैं या उद्दीप्त करते हैं।[9] इसी प्रकार एक स्थान पर यह पूछा गया है कि कब वाजिनो या प्राण का योग रासभ के या रासमय ब्रह्म के साथ हो सकेगा; जिससे हे नासत्य! तुम इस सत्य नामक अमृत तत्त्व को प्राप्त हो सकोगे?[10] ऋग्वेद के ही मंत्र "युञ्जन्ति ब्रह्ममरुषं चरितं परितस्थुष: रोचन्ते रोचना दिव:"[11] में भी यौगिक क्रिया का वर्णन है; जिसका तात्पर्य है— ब्रह्म नाम के आदित्य से या सूर्य तत्त्व से अरुष नामक अग्नि और चरितं नामक वायु देवता परितस्थुष आसव वाले इन ऋषियों से संयुक्त हो जाते हैं, तब इनके शरीर के आभ्यंतर लोकों में स्वर्गीय ज्योति बिखर पड़ती है।[12] इसी प्रकार काम्या हरी या मर्त्यामर्त्य प्राणरूप अश्वों को उस ब्रह्म नामक सूर्य तत्त्व से संयुक्त करते हैं तथा इन दो प्राणों को अगल-बगल में जोता गया है। जब ये नर नामक विश्वानर सूर्य को वहन करते हैं, तब वे रक्त वर्ण तेजोमय वाक् से लोहित वर्ण वाले-से लगते हैं।[13] "स घा नो योग आभुवत..."[14] इत्यादि मंत्र में प्रार्थना की गई है कि वह इंद्र हमारे योग में साधक हो तथा ब्राह्मणस्पति के बारे में यह लिखा गया है कि उसके बिना कोई योगादि यज्ञ सिद्ध नहीं हो सकता; क्योंकि वह ज्ञानमय तत्त्व होने के कारण योग-साधक देवता है।[15] एक स्थान पर तो यह उल्लेख है कि हम प्रत्येक योग-प्रक्रिया में, प्रत्येक

यज्ञ में तेरा आह्वान करते हैं; क्योंकि तुम्हीं बलशाली संरक्षक हो; आभ्यंतर योग-यज्ञ में हमें तुम्हारी शक्ति की तथा ब्राह्म यज्ञ के ब्रह्मोद्य में वाग्यज्ञ के बल की बार-बार प्रशंसा करते हैं।[16] ऋग्वेद में यह भी बताया गया है कि अलौकिक दीप्ति से युक्त संवित् तत्त्व का पान करने के लिए योग के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है।[17] इसके अतिरिक्त ऐसे अनेक सूक्त[18] हैं; जो योगमार्गी अतिसृष्टि का ही विवेचन करते हैं।

यजुर्वेद में योग-प्रक्रिया को 'सवे' या अतिसृष्टि के रूप में यह लिखा गया है कि हम युक्त अथवा एकाग्र मन से सविता देवता की स्वर्गीय शक्ति के लिए अतिसृष्टि करते हैं।[19] यजुर्वेद में योग के लिए यह भी वर्णन आया है कि सविता देवता योग द्वारा स्वर्ग की ओर जाते हुए प्राणों को उनके देवताओं से संबद्ध करके स्वर्गीय ज्योति उत्पन्न करके फिर उन देवताओं की ज्योतियाँ जगमग कर देता है।[20] योग के वर्णन में इसी प्रकार यम को योग की पथ्या का मार्गदर्शक बताते हुए यह कहा गया है कि हम तुम्हारी जागृति का योग करते हैं।[21]

ऋग्वेद के यम-यमी-संवाद के द्वारा भी योग का वर्णन किया गया है। पं. हरिशंकर जोशी ने यम-यमी के सांकेतिक संबंधों को स्पष्ट करते हुए लिखा है— "यम-यमी दो पृथक् तत्त्व तो हैं; पर एक शरीर या यमी के शरीर में यम आत्मा है। इसी को यमल कहते हैं। आत्मा पुरुष कहलाता है, शरीर स्त्री...यम योगी है; अमृत या मुक्ति चाहता है। अतः वह यमी के शरीर रूप मर्त्य शरीर में नहीं रहना चाहता।[22] हमारे तत्त्व रूप ऋषियों में से सर्वप्रथम योगकर्ता पुरुष ही योग-तत्त्व है। ऋग्वेद में जिस सूर्या के विवाह की योजना अश्विनौ से की गई है,[23] वह योगमाया के स्वरूप का वर्णन है। इसी प्रकार ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण में जो शुन:शेप का आख्यान मिलता है, वहाँ पर भी योग का ही वर्णन है। वेदों में योग का नाम योगक्षेम भी है;[24] क्योंकि योग ही कल्याण की एकमात्र प्रक्रिया है।[25]

वैदिक साहित्य के अंतर्गत उपनिषदों में ज्ञान का असीम भंडार है। उपनिषद कई प्रकार के हैं; जिनमें तत्त्वज्ञान की मीमांसा करके अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा की गई है और योग-साधना की विभिन्न क्रियाओं एवं युक्तियों का वर्णन भी देखने को मिलता है। उनमें जिस योग-साधना का विश्लेषण है, उसका प्रमुख उद्देश्य कुंडलिनी-शक्ति का जागरण करके आत्मसाक्षात्कार करना है । श्वेताश्वतरोपनिषद में योगपरक युक्तियों का बाहुल्य है। इस उपनिषद में योग का बहुत अच्छा विवेचन हुआ है। उसमें योग को सर्वोत्तम फल कहा गया है तथा साधना की विभिन्न क्रियाओं का भी उल्लेख है। उसमें योग की महत्ता के प्रतिपादन में यह बताया गया है कि योग-साधक का शरीर रोग, बुढ़ापा अथवा मृत्यु को प्राप्त नहीं करता।[26] इस उपनिषद में योग को सर्वोत्तम फल कहा गया है तथा उसमें साधना की विभिन्न क्रियाओं का भी उल्लेख है।[27] श्वेताश्वतरोपनिषद में योगाभ्यास के लिए स्थान-निर्धारण के संबंध में यह बताया गया है कि कंकड़, पत्थर, अग्नि तथा बालू से रहित ऐसी शुद्ध, सुहानी और समतल भूमि होनी चाहिए; जो चित्त को आह्लादित कर दे। इसके लिए योगी को शांत गुफाओं को ढूँढ़ना चाहिए;[28] क्योंकि योग-साधना के लिए वही सर्वोत्तम और एकांत स्थान

हो सकता है। योग-साधना का चरम उद्देश्य समाधि की उस अवस्था को प्राप्त करना है; जिसमें जीवात्मा को परमात्मा का साक्षात्कार होता है और अंत में वह उसी में लीन हो जाती है। श्वेताश्वतरोपनिषद की समाधि-अवस्था का वर्णन पतंजलि योगसूत्र के अनुरूप है।[29] इस उपनिषद में कहा गया है कि साधक अपने इष्ट देव को स्वयं में लीन करके मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इसमें सांख्य और योग को समस्त बंधनों से मुक्ति पाने के लिए अत्यंत उपकारक बताया गया है।[30]

बृहदारण्यकोपनिषद सबसे पुराना उपनिषद है। इस उपनिषद में 'हिता' विशेषण वाली अनेक नाड़ियों का उल्लेख है।[31] इन नाड़ियों का उपयोग योग-क्रिया के अंतर्गत किया जाता है। 'प्राण' की महत्ता का प्रमाण भी इस उपनिषद के प्रथम अध्याय में मौजूद है। वस्तुतः योग के प्रक्रियात्मक पक्ष का आधार प्राण ही हैं।[32] इस उपनिषद में आत्मसाक्षात्कार के लिए योग की प्रक्रिया एवं उसकी महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।[33] इसमें पंच प्राणों का भी उल्लेख किया गया है। सनत्कुमार का कथन योग-साधना की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।[34]

तैत्तिरीयोपनिषद में 'योग' शब्द का अर्थ विज्ञानमय कोश की आत्मा बताया गया है।[35] इस उपनिषद में सुषुम्ना नाड़ी का उल्लेख करते हुए योग-प्रणाली के आधार पर जीवन के साधनात्मक पक्ष को उद्घाटित किया गया है।[36]

मैत्रायणीयोपनिषद में षडंग योग के विधान का बड़ा महत्त्वपूर्ण वर्णन है। उसके आधार पर ही कालांतर में महर्षि पतंजलि अष्टांगयोग विकसित हुआ। इस उपनिषद में समाधि-अवस्था के अंतर्गत अनाहत नाद के रूप में सुनाई पड़ने वाली नदी, घंटा, धातुपात्र, पहिया, मेढक की बोली इत्यादि ध्वनियों का भी उल्लेख किया गया है।[37] उसमें योग के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए यह कहा गया है कि योग के द्वारा चित्त की शुद्धि एवं परिष्कार होता है और अविद्यादि मल नष्ट हो जाते हैं। साधक समाधि-अवस्था में पहुँचकर अलौकिक सुख की अनुभूति करता है। उसे वाणी के द्वारा व्यक्त नहीं सकता; क्योंकि उस आनंद को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है।[38] मैत्रायणीयोपनिषद में योग-प्रक्रिया के क्रमिक विकास का वर्णन इस रूप में दिखाई देता है; जो अन्य उपनिषदों में उपलब्ध नहीं है।

कठोपनिषद में योग-साधना के लिए इंदिय-निग्रह की आवश्यकता पर बल दिया गया है तथा उसमें स्थिर इंद्रिय-धारणा को योग कहा गया है। उस अवस्था में साधक प्रमाद रहित हो जाता है। इस उपनिषद में कहा गया है कि जो 'प्राण' को ऊपर भेजता है तथा 'अपान' को नीचे फेंकता है, उस मध्य में रहने वाले वामन को विश्वदेव भजते हैं[39] और अध्यात्म योग के द्वारा साधक देव को भली प्रकार से जानकर हर्ष और शोक को त्याग देता है।[40] मुंडकोपनिषद में भी योग के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। उसमें यह कहा गया है कि योगीजन उस सर्वतोव्यापी ब्रह्म को प्राप्त करके उसी में प्रवेश करते हैं तथा साधना के द्वारा शुरू, सत्य एवं परामृत होकर मुक्त हो जाते हैं।[41] प्रश्नोपनिषद में योग-प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में प्राणों के स्वरूप तथा उनके विविध प्रकारों, शक्तियों एवं स्थानों का वर्णन किया गया है।[42] इसी प्रकार,

गर्भोपनिषद में भी मुक्ति के लिए संख्या और योग के अभ्यास को अत्यंत उपयोगी बताया गया है।[43]

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वैदिक काल में योग-साधना के अंतर्गत श्वास-निरोध की प्रक्रिया किसी-न-किसी रूप में मान्य हो चुकी थी और उसका अभ्यास भी किया जाता था। परवर्ती उपनिषदों में भी योग की साधना-प्रक्रिया और उसके महत्त्व का विस्तृत वर्णन किया गया है। योग की यह परंपरा वेदों और उपनिषदों से लेकर उत्तर वैदिक काल— रामायण, महाभारत, योगग्रंथों, संस्कृत-साहित्य और अवांतरकालीन हिंदी साहित्य की निर्गुण संत-परंपरा में देखने को मिलता है। योग न केवल साधना की दृष्टि से, अपितु शारीरिक-मानसिक आरोग्य के लिए भी बहुत आवश्यक है। आज के समय में भी योग के प्रचार-प्रसार की महती आवश्यकता है।

संदर्भ-सूची :

1. पिशंग शब्द कपिल का पर्यायवाची है— "कडार: कपिल: पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ।" — अमरकोश, प्रकाशन : वरदा बुक्स 'वरदा', पुणे, 1990, पृष्ठ 30
2. ऋग्वेद, 10/136/2
3. सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।। —श्रीमद्भगवद्गीता : 5/4
4. द्रष्टव्य— भूमिका, पातंजलयोगदर्शन सं. रामशंकर भट्टाचार्य, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1963), पृष्ठ 28
5. ऋग्वेद, 10/126/2
6. मध्यकालीन धर्म-साधना, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1952, पृष्ठ 58
7. वैदिक योगसूत्र, पं. हरिशंकर जोशी, चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1967, पृष्ठ 72
8. तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। —ऋग्वेद, 1/22/20
9. तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। —वही, 1/22/21
10. कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन सत्यं नासत्योपयाथः। —वही, 1/34/9
11. वही, 1/6/1
12. वैदिक योगसूत्र, पं. हरिशंकर जोशी, पृष्ठ 88-89
13. युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विवक्षसारथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा। —ऋग्वेद, 1/6/2
14. ऋग्वेद, 1/5/3, सामवेद, 1/2/10/3, अथर्ववेद, 20/69/1
15. यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपिश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।। —ऋग्वेद, 1/18/7
16. योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।। —वही, 1/30/7, यजुर्वेद, 11/13
17. ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचकं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम्। चित्रामघा यस्य योगेऽधिजशे तं वां हुवे अतिरिक्तं पिबध्यै।। —ऋग्वेद, 8/58/3
18. वही, 4/26, 4/42, 10/48, 10/49, 10/125, 10/159, 10/183 इत्यादि।
19. युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे। स्वर्ग्याय

शक्त्या।। —यजुर्वेद, 11/2

20. युक्ताय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम्। बृहज्ज्योति: करिष्यत सविता प्रसुवाति तान्।।
—वही, 11/3

21. युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चित:। —वही, 11/5

22. वैदिक योगसूत्र (लेखक : पं. हरिशंकर जोशी), पृ. : 183-84

23. ऋग्वेद, 10/85

24. योगो वै क्षेम:, क्षेम: वै यज्ञो वा। —वही, 5/8/11, यजुर्वेद, 11/4

25. योगक्षेमो न: कल्पन्ताम्। —यजुर्वेद, 22/22

26. श्वेताश्वतरोपनिषद, 2/12

27. प्राणान् प्रपीड्येह स युक्तचेष्ट: क्षीणे प्राणे नासिकोच्छ्वसीत्।
दुष्टाश्वयुक्तमिव वाहमेन विद्वान् मनो धारयेता प्रमत्त:।। —वही, 2/9

28. वही, 2/10,13

29. तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थाम्। —पातंजल योगसूत्र, व्याख्याकार नंदलाल दशोरा, रणधीर
प्रकाशन, हरिद्वार, 1997) पृष्ठ 14

30. नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशै:।। —श्वेताश्वतरोपनिषद, 6/13

31. बृहदारण्यकोपनिषद, 5/3/20

32. वही, 4/4/23

33.तस्मादेवं विच्छांतो दान्तउपरतस्तितिक्षु: समाहितो भूत्वाऽऽत्यन्तमेवात्मानं पश्यति। —
बृहदारण्यकोपनिषद, 4/4/23

34. वही, 3/13/1-6

35. तैत्तिरीयोपनिषद, 2/4

36. वही, 1/6/1

37. मैत्रायणीयोपनिषद, 6/22

38. समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत्।
न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।। —वही, 4/9

39. कठोपनिषद, 12/2/3

40. अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति। —वही, 1/2/21

41. संप्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः।
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति।।
मुंडकोपनिषद, 3/2/6
वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे।।
वही, 3/2/7

42. प्रश्नोपनिषद, 1/3/3-12

43. यदि योन्यां प्रमुञ्चामि साङ्ख्यं योगं समाश्रये।
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकम्।। —गर्भोपनिषद, श्लोक-4

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
जवाहर नवोदय विद्यालय, दुरेड़ी,
बाँदा, उत्तर प्रदेश (भारत)

2 ताजिक और भारत के साहित्यिक संबंधों के इतिहास से

डॉ. मैरम्बी नुरोना

Abstract

In the modern world, the value of translation is increasing day by day and creates a kind of unity and union of cultures and the enlightenment of peoples. And, undoubtedly, the quality of translation of a particular work plays a special role in this process.

Each language has its own winged expressions, phraseological turns, allegories and local dialects, which in general terms express its nature and essence, and their translation into another language is a very hard work. Since in cases of their incorrect translation, language features are lost, and sometimes the meaning of the text is distorted. The purpose of conveying meaning and meaning is also violated, and the reader cannot find what he is looking for.

The people of India have established cultural, literary, trade and economic, political and social ties with many neighboring countries. Therefore, the genres of fairy tales, anecdotes, proverbs, etc. in the folk art of neighboring peoples they have much in common in content, plot, image.

In this article researches some of the features of the translation into Hindi of proverbs and sayings in the works of the founder of Tajik Soviet literature Sadriddin Aini by the writer and translator of modern Hindi literature Rahul Sankrtyayan.

Rahul Sankrityan is a skillful translator and a very intelligent person who managed to convey to the Indian reader the idea and purpose, feelings, color and semantic connotation of words, the national identity of the Tajik people and the peculiarities of that time.

ताजिक और भारत के बीच साहित्यिक संबंधों का एक प्राचीन इतिहास है। मध्य एशिया और भारत के व्यापारिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध, जो प्रचीन काल से अस्तित्व में हैं, उन के प्रगति और गठन में दोनों देश एक दूसरे का योगदान करते हैं।

यह मुख्य रूप से इन दो जातियों की एकता को संदर्भित करता है। शोध के परिणामस्वरूप, भाषाविद्-वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हिंदी भाषा और ताजिकी ज़बान की उत्पत्ति का स्रोत भाषाओं के एक ही परिवार से है, जिसे प्राचीन काल में इंडो-आर्याई कहा जाता था। वैज्ञानिक बोबोजोन ग़फ़ूरोव ने अपनी कृति «ताजिक लोग» में कांस्य युग में मध्य एशिया की जनसंख्या की जातीय संरचना तथा मध्य एशिया में अनुसंधान और व्यक्तिगत पुरातात्विक खोजों के परिणामस्वरूप आर्यों के मुद्दे पर अपनी राय व्यक्त की और निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचे[7]।

"उनकी बोलियों और इंडो-यूरोपीय सक्रिय बोलियों के साथ ईरानी भाषाओं का अनुसंधान, अध्ययन और तुलना, विशेष रूप से «अवेस्तो» और फ़ारसी की प्राचीन भाषाऐं, और दूसरी ओर वैदिक और संस्कृत, आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि ये भाषाऐं पहली बार अपनी

उपस्थिति में, और व्याकरणिक संरचना की संरचना के दृष्टिकोण से, और बुनियादी शब्दावली के दृष्टिकोण से, उनमें समानताऐं थीं।"

भारतीय और ईरानी लोगों की प्राचीन सभ्यता की धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत और साहित्य का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक महाकाव्य और पौराणिक कथाओं और कृतियों की कई समानताओं की पुष्टि करते हैं। ये समानताएं ईरानी और इंडो-आर्यन संस्कृति के सुदूर अतीत की अन्य शाखाओं में भी देखी जा सकती हैं। ताजिक लोगों की प्राचीन किंवदंतियों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इंडो-यूरोपीय लोगों की अवधारणा की घटनाएँ उनके स्वभाव में छिपी हुई हैं।

विशेष रूप से, रूसी इतिहासकार म.स. अंद्रेएव लिखते हैं कि «... पौराणिक पिता-स्वर्ग (फीदर-ओस्मोन) और धरती-माता (मोदर-ज़मीन) «ऋग्वेद» के «दो महान माता-पिता» अभी भी ताजिक लोगों की कल्पना में होते हैं और अभी भी कविताओं में उपयोग किए जाते हैं जो बहुत अर्थ पैदा करते हैं। और आज ताजिकिस्तान के यज़्गुलाम के इलाके में आकाश को दादा-पिता और पृथ्वी को नैन-माता आदि कहा जाता है। «ऋग्वेद» में पृथ्वी और आकाश दोनों को माता और पिता के रूप में भी वर्णित किया जाता है, «एक अविभाज्य युगल», जो यूरोप की जातियों के बीच भी पाया जा सकता है[3] ।

ताजिक साहित्य के इतिहास में, कविता «कलिला और डमना» को महान कवि अबूअबदुल्लो रुदाकी (ओदामुशशुआरो, 858–941) की सर्वश्रेष्ठ कविताओं में से एक माना जाता है, जो भारतीयों की संपत्ति है। और इसे «पंचतंत्र» कहा जाता था और इसकी रचना संस्कृत में की गई थी। «पंचतंत्र» का आधार दार्शनिक और नैतिक ज्ञान से बना है, इसलिए, तेजी से फैलते हुए, वे जल्दी से अपनी वास्तविक मातृभूमि - भारत के आसपास के लोगों के बीच प्रसिद्ध हो जाते हैं। खुसरौ-ई-परवीनि सासानी के शासनकाल के दौरान, जब अनुशेर्वोनी आदिल (मेला अनुशर्वों, शासन 531–579 ई. कुछ समय बाद, अरबी भाषी फ़ारसी-ताजिक लेखक इब्ने मुकाफ़ा (724–759) ने पहलवी भाषा से कलिला और डमना का अरबी में अनुवाद और संपादन किया। पेरिस में फ्रांसीसी प्राच्यविद् ज़ोटेनबर्ग द्वारा «गुरुरी अखबोरी मुलुका-एल-फ़र्स» शीर्षक के तहत प्रकाशित अपने काम «गुरूर-ए-सियार» में अरबी से ताजिक-फ़ारसी भाषा अबूमांसुरी साओलाबी में उनके अनुवाद पर, निम्नलिखित जानकारी प्रदान करता है: «यह पुस्तक («कलिला और डमना» – म. न. के मद्देनजर उपलब्ध) को फारसी बादशाहों के खजाने में रखा गया था ताकि इब्न-अल-मुकाफा ने इसे अरबी और रुदाकी ने, अमीर नस्र इब्ने अहमद के आदेश से, इसे फारसी में व्याख्यायित किया"[11] ।

ऐतिहासिक आवश्यकताओं का कारण यहा भी बन गया कि बीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक, फारसी-ताजिक भाषा, जो महाद्वीप के भूमि में व्यापक रूप से फैल रही थी, धीरे-धीरे इस देश के लोगों की मुख्य भाषाओं में से एक द्वारा प्रतिस्थापित की गई थी। 11वीं शताब्दी से, भारत में फारसी-ताजिक भाषा में कथा रचना लिखना एक परंपरा बन गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि फारसी-ताजिक भाषा धीरे-धीरे भारत में फैल गई और मेवारुन्नहर और खुरासान पर कई बेरहम मुगलों के हमले के बाद, और भारत देश टेमुरीड्स के लिए रास्ता खोजते हुए, यह व्यापक रूप से इस

शुद्ध भूमि पर विकसित हुई, जिस पर सैकड़ों फारसी भाषी थे। लेखकों को शिक्षित किया गया, विकसित किया गया। यदि एक ओर साहित्य की सीमाओं का विस्तार किया गया तो दूसरी ओर साहित्यिक संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई।

मसुदी सादी सैल्मान (1046-1121), अबुलफराज रूनी (1039-1108), अमीर खोसरोव देहलवी (1253-1325), हसन देहलवी (1253-1337), फैजी डकनी (1547-1590), अब्दुलक़ादिर बेदिल (1644-1721), मिर्जा ग़ालिब (1797-1869), अल्लामा मुहम्मद इक़बाल (1877-1938) ऐसे कवि हैं, जो भारत में रहकर भारत और भारतीयों के विषय को अपनी कृतियों में स्थान देने में सक्षम हुए, अपने कार्यों की सामग्री को समृद्ध किया। इनमें अमीर खोसरोव देहलवी[6] और फैज़ी डकनी[8] अधिक प्रगतिशील प्रतीत होते हैं, क्योंकि उनकी रचनाओं में भारत का विषय, उसकी संस्कृति और साहित्य, आदतें, रीति-रिवाज और उस देश में धर्म और मान्यताएँ अत्यधिक मिली हैं।

फारसी-ताजिक भाषा में कृतियों के निर्माण के साथ, अमीर खोसरौ देहलवी "... भारत के पहले चमत्कारी कवियों में से एक हैं, जिन्होंने उर्दू भाषा की नींव रखी, जिसे उस समय «रेख़्ता» की जबान कहा जाता था। उन्होंने संस्कृत में भी लिखा, जो सभी के लिए उपलब्ध नहीं था [5, 10]। अमीर खोसरव की इस अमूल्य सेवा की सराहना करते हुए, जवाहरलाल नेहरू ने लिखा: «खोसरव ने संस्कृत में लिखने से इनकार करते हुए, जो कि चुने हुए अल्पसंख्यक के लिए समझ में आता था, बुद्धिमानी से काम किया, और न केवल भाषा सीखने के लिए, बल्कि उनके जीवन, तौर-तरीक़ों और रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के इरादे से भी किसानों की ओर रुख किया। वर्ष के ऋतुओं को गाते हुए, उन्होंने एक प्राचीन भारतीय शैली, प्रत्येक ऋतु के लिए एक विशेष मक़सद और ख़ास शब्द भी पाया। उन्होंने जीवन और उसके विभिन्न संघर्षों, जवानी के दिनों, अलगाव और मिलन को महिमामंडित किया, बारिश के सम्मान में गाते हैं, जो पृथ्वी को जीवन देती है, सूरज की उमस भरी किरणों से सूख जाती है। आज इन गीतों के बोल लोग गाते हैं, इन्हें उत्तर और मध्य भारत के हर शहर में सुना जा सकता है। उदाहरण के लिए, बरसात के मौसम में, जब युवा लड़के और लड़कियाँ किसी गाँव में, झूले पर झूलते हुए, आम या पिकुल के पेड़ों की शाखाओं पर इकट्ठा होते हैं, तो वे ये गीत गाते हैं»[6]।

वास्तव में, फ़ारसी जवान को अमीर खोसरव, जो भारत में पैदा हुए और पले-बढ़े, काफी समृद्ध किया। दर असल उनके पिता मध्य एशिया से वहाँ चले गए थे। उन्होंने फ़ारसी और ताजिक साहित्य के कई शाश्वत विषयों के साथ-साथ भारत के लोगों के कई विषयों पर विशेष ध्यान दिया। भारतीयों की परंपराएँ और रीति-रिवाज, इस शानदार देश के लोगों के जीवन के रीति-रिवाज और जीवन के नियम अमीर खोसरव की रचनाओं में एक विशेष स्थान रखते हैं। और «खमसा» में तथा «दुवलरानी और ख़िज़्ख़ान» के दास्तानों में, और कवि - «दीवान» में भी, भारत और उसके लोगों के बहुत से विषय हैं।

इस समय और बाद में, प्रेमचंद, कृष्ण चंदर, ख्वाजा अहमद अब्बास, मुल्क राज आनंद, अमृता प्रीतम, यशपाल, मोहन राकेश, राजेन्द्र याजव, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, मेहरुनिनस्सा परवेज़, नासिरा शर्मा और अन्य भारतीय लेखकों की कृतियों का ताजिक भाषा में अनुवाद और प्रकाशन किया गया है, जिस से उनके कई पाठक मिले।

सांस्कृतिक भारतीय लोग भी लंबे समय से ताजिक लेखकों और कवियों के कृतियों से

परिचित हैं, अर्थात् सदरूद्दीन ऐनी के उपन्यासों से[2] ।

इस क्षेत्र में हिन्दी लेखक और अनुवादक राहुल सांकृत्ययन (1893-1964) का योगदान है। राहुल सांकृत्ययन ने सदरूद्दीन ऐनी, मिर्ज़ा तुर्सुनज़ादे, जलाल इकरामी, सोतिम उलुगज़ादे और रहीम जलील जैसे ताजिक लेखकों की रचनाओं का हिंदी भाषा में अनुवाद किया है ।

यह उल्लेख करना उचित है कि सन् 1952 में राहुल सांकृत्यायन ने जलोल इकरामी «शोदी» के उपन्यास का अनुवाद भी किया था।

राहुल सांकृत्यायन एक लेखक, अनुवादक, सार्वजनिक हस्ती, बहादुर स्वतंत्रता सेनानी और यात्री हैं। राहुल सांकृत्यायन का असली नाम केदारनाथ पांडेय है। अपने दिलचस्प उपन्यासों में, राहुल सांकृत्यायन ने कलात्मक और साहित्यिक दुनिया में लोगों और अधिकार के बीच लोकप्रियता प्राप्त की। प्रसिद्धि उन्हें प्राचीन विश्व, भारत और अन्य देशों के इतिहास, दर्शन और राजनीति पर उनके वैज्ञानिक कृतियों तथा रचनाओं की बदौलत मिली।

सांकृत्यायन एक अथक यात्री हैं, उन्होंने भारत के अधिकांश राज्यों की यात्रा की है, श्रीलंका, ईरान, पाकिस्तान (लाहौर) सहित दुनिया के कई देशों की यात्रा की है और सोवियत संघ में भी वह तीन बार आऐ। यूरोप की यात्रा करते हुए, उन्होंने फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से मुलाकात की। अपने देश के सच्चे देशभक्त, राहुल सांकृत्यान ने भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। राजनीतिक न्याय के लिए बोलते हुए, उन्हें एक से अधिक बार क़ैद किया गया था।

राहुल सांकृत्यायन की सोवियत संघ की पहली यात्रा, अर्थात् मास्को, सन् 1935 साल में 4-21 सितंबर में हुई थी। अपनी मातृभूमि लौटने पर, उन्हें कुछ समय के लिए बिमारी की वजह से अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उसके ठीक होने के बाद, सांकृत्यायन ने नई यात्रा की तैयारी शुरू कर दी।

सन् 1937 वर्ष में, उन्होंने दूसरी बार मास्को का दौरा किया जहाँ उन्होंने मॉस्को शहर में प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिकों से मुलाकात की। वे 17 नवंबर, सन् 1937 वर्ष से 13 जनवरी तथा सन् 1938 वर्ष तक इस शहर के अतिथि थे। लेनिनग्राद में उनकी मुलाकात एक रूस इंडोलॉजिस्ट एलेना कोज़ेरोवस्काया से हुई। एलेना कोज़ेरोवस्काया तिब्बत और भारत पर वैज्ञानिक कार्य लिख चुकी थी। कोज़ेरोवस्काया ने उसे रूसी भाषा सीखाया और उसने उसे संस्कृत पढ़ाया। यह सहयोग आपसी प्रेम में बदल गया। राहुल सांकृत्यायन और एलेना कोज़ेरोवस्काया जल्द ही पति-पत्नी बन गए।

राहुल सांकृत्यायन की सोवियत संघ की तीसरी यात्रा जुलाई 1945 से अगस्त सन् 1947 वर्ष तक ही हुई थी। इस समय के दौरान, ऐलेना कोज़ेरोवस्काया के साथ शादी से पहले से ही उन का बेटा सात साल का था। सांकृत्यायन की अपने बेटे से यह पहली और आखिरी मुलाकात थी। लंबी बीमारी के बाद 14 अप्रैल सन् 1963 साल को राहुल सांकृत्यायन का उनकी मातृभूमि स्वतंत्र भारत के दार्जलिंग में निधन हो गया।

राहुल सांकृत्यायन समकालीन हिंदी साहित्य के विपुल लेखक, विद्वान और अनुवादक हैं। उनकी रचनात्मक विरासत विभिन्न शैलियों की लगभग 125 रचनाएँ हैं, जिनमें 9 उपन्यास, कहानियों के 4 संग्रह, भारत के विभिन्न उच्च रैंकिंग वाले ऐतिहासिक आंकड़ों को समर्पित 16 मोनोग्राफ, संस्मरण और यात्रा के 22 कार्य, 11 दार्शनिक कार्य, साहित्य पर 10 वैज्ञानिक कार्य शामिल हैं तथा इतिहास, कला के 11 अनुवाद कृतियाँ हैं।

राहुल सांकृत्यायन की कलम से संबंधित ग्यारह अनुवादों में से पांच ताजिक लेखक

सदरूद्दीन ऐनी के हैं। हिन्दी भाषा में सदरूद्दीन ऐनी की कृतियों के माध्यम से भारतीय लोग ताजिकों के इतिहास से परिचित होते हैं। ताजिक लेखकों को भारतीयों से परिचित कराने के राहुल सांकृत्यायन का खास योगदान है।

1947 में, राहुल सांकृत्यायन ने सदरूद्दीन ऐनी के उपन्यास «दाखुन्दा» और «जो दस है» ताजिक भाषा से हिंदी में अनुवाद किया और प्रकाशित किए। 1948 में उन्होंने ताजिक भाषा से «अनाथ» कहानी का हिंदी में अनुवाद किया और 1951 में «अदीना» और «सूद्खोर की मौत» उपन्यासों का भी अनुवाद किया। «इसके साथ ही «अदीना» उपन्यास के अनुवाद के अंत के साथ, अनुवादक ने सदरूद्दीन ऐनी को एक पत्र लिखा और उसे अपने बारे में कुछ शब्द लिखने के लिए कहा। समरकंद शहर के सदरूद्दीन ऐनी ने 23 अप्रैल, 1947 को राहुल सांकृत्यायन के पत्र का उत्तर लिखा, जिसमें उन्होंने अपने जीवन के मुख्य क्षणों के बारे में जानकारी दी। उस्ताद की कहानी «अदीना» की प्रस्तावना में यह पत्र पूरी तरह से पुन: प्रस्तुत किया गया है»[1]।

राखुल सांकृत्यायन ने «अदीना» के उपन्यास की प्रस्तावना में प्रेमचंद (1880-1936) से सदरूद्दीन ऐनी की तुलना करते हुए लिखा है कि «सदरूद्दीन ऐनी सोवियत संघ के मध्य एशिया के प्रेमचंद हैं। «दाखुन्दा» और «जो दस है» जैसे उपन्यास न केवल कल्पना की कृतियाँ हैं, बल्कि उनमें से प्रत्येक एक ऐतिहासिक कृति है। सोवियत संघ के मध्य एशिया से परिचित होने के लिए निस्संदेह कई किताबें हैं, हालांकि, सदरूद्दीन ऐनी की कृतियों ने अतिशयोक्ति करने के बिना इसकी सेवा की»[2] ।

यहाँ एक और बात ध्यान देने योग्य है, कि प्राचीन काल से ही हमारे देश का भारत के साथ सामाजिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं, और सदरूद्दीन ऐनी की रचनाओं में भारत के विषय का भी एक से अधिक बार सामना किया है। उदाहरण के लिए, सदरूद्दीन ऐनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक «स्मृति» में लिखा है कि «कारवां सारय, जिसमें हिंदू रहते थे, न केवल बुखारा, वाबकेंड, कार्शी और बुखारा अमीरात की अन्य बस्तियों में थे। बुखारा में ही, तीन कारवां सराय थे, जिनमें भारतीय एक सौ से-एक सौ पचास लोगों के बड़े समूहों में सघन रूप से रहते थे। इसके अलावा, मध्य एशिया में हिंदुओं ने अपनी कुछ धार्मिक परंपराओं और अनुष्ठानों का पालन किया»[1]।

भारत में, न केवल ताजिक लेखकों के कार्यों का अनुवाद किया गया है, जो हमारे देश के सामान्य विषय को छूते थे। हालाँकि, ताजिक साहित्यिक आलोचकों ने, भारत और उसके निवासियों के विषय का ज़िक्र करते हुए, भारतीय लेखकों के रचनात्मक कार्यों से कई उदाहरणों का अनुवाद किया है। इसका एक उदाहरण 1947 में मिर्ज़ो तुर्सुनज़ादे की भारत यात्रा के बाद लिखी गई कविताओं की एक श्रृंखला है। इन कविताओं ने न केवल पूर्व सोवियत संघ में, बल्कि अनुवाद के बाद भी, इस शानदार देश के बारे में ताजिक साहित्यिक आलोचकों के काम के सबसे व्यापक और पठनीय कार्यों में से एक के रूप में पहचाना जाता है। यह संग्रह गहरे राजनीतिक और दार्शनिक विचारों से भरा है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि «किसाई हिंदुस्तान» के लेखन के तरीके और कविता के प्रकार की पसंद, इसकी सामग्री और अर्थ में योगदान, कवि की ईमानदारी के साथ, इस कविता संग्रह में भारत के बारे में कई

वास्तविकता और आधुनिकता का पता दे दिया है। अबुलक़ासिम लाहूटी, पयरव सुलैमोनी, मिर साइद मिरशकर और अन्य की कविताओं के अनुवाद पर भी जोर दिया जाना चाहिए, जिसने ताजिक और भारतीय लोगों के साहित्यिक संबंधों को अधिक से अधिक मजबूत किया।

ताजिकिस्तान गणराज्य की स्वतंत्रता की घोषणा के बाद, ये संबंध और अधिक मजबूत हो गये हैं। ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति एमोम आली रहमोन की ऐतिहासिक विरासत का हिंदी में अनुवाद, भारत के साहित्यिक विद्वानों और राजनीतिक हस्तियों के कार्यों का ताजिक में अनुवाद, भाषा, साहित्य, राजनीति, सामाजिक अध्ययन आदि पर वैज्ञानिक कृतियाँ लिखना है। भारत के बारे में ताजिक वैज्ञानिक और इंडोलॉजिस्ट, प्राचीन काल से ही दो लोगों के साहित्यिक संबंधों में एक नई प्रेरणा है, मैत्रीपूर्ण और पड़ोसी, जिनकी संख्या बहुत बढ़ी है ।

ताजिक और भारतीय जनता के सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनयिक, आर्थिक और व्यापारिक संबंध इन लोगों की भाषा, साहित्य ,संस्कृति और सभ्यता में समानताएं दिखाई देती हैं कि यह रास्ता कितना पुराना है। जैसे कि राष्ट्रीय शांति और एकता के संस्थापक राष्ट्र के नेता, ताजिकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति, श्री एमोम आली रहमोन याद दिलाते हैं - «संसार में सब को मालूम है कि दोनों देशों के रिश्ते) ताजिकिस्तान ओर भारत (प्रचीन काल से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि और विश्वव्यापी मूल्यों पर जो हमारे जीवंत आचार विचारों, सहनशील और मानवीय दर्शन और आलमगीर विचारधारा के असीम सागर से उद्भूति है, आधारित होते हैं।»

ताजिकिस्तान तथा भारत के संबंध की और एक शाखा है ताजिक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग। वह आजकाल भी ताजिकों को भारतवासियों की भाषा और परंपराओं से अधिक परिचित हो जाने में सहायता दे रहा है और प्रतिवर्ष इस विभाग को दस-पंद्रह विद्यार्थी ख़त्म करके द्विपक्षीय संबंधों के विकास और मजबूत बनवाने में लग जाते हैं। «ताजिकिस्तान गणराज्य भारत से उपयोगी संबंधों के लिए ईमानदारी से हितार्थी है और इन को भविष्य में सुदृढ़ और सुस्थिर बनाने मे बहुत कोशिश करेगा। हम दोनों देशों के बीच उपस्थित बहुपक्षीय संबंधों से लाभ उठाने के लिए हमेशा तैयार हैं।» सदा ज़िक्र करते हैं ताजिकिस्तान के राष्ट्र के नेता।

ताजिक और भारतीय साहित्यिक संबंध बहुत प्राचीन, ऐतिहासिक काल से विकसित हुए हैं और ये संबंध ताजिकिस्तान गणराज्य की स्वतंत्रता के बाद अच्छे रहे हैं। भारत में ताजिकिस्तान गणराज्य के दूतावास द्वारा आयोजित सांस्कृतिक विभिन्न कार्यक्रमों से ये संबंध और भी घनिष्ठ होते जा रहे हैं।

संदर्भ सूची:

1. ऐनी स. अदीना. – दिल्ली: प्रतीक प्रकाशन, 1980, पृष्ठ 184
2. ऐनी स. दाखुन्दा. – इल्लाहाबाद: साहित्य निवंधवानी, 1984, पृष्ठ 440
3. Andreev M.S. Iz materialov po mifologii tajikov // Po Tajikistanu. Kratkiy ocherk o rabote etnograficheskoy ekspeditsii v Tajikistane v 1925 godu, v. 1. – Tashkent, 1927, 26 p.
4. Afsahzod A. Odamushshuaro Rudaki. - Dushanbe, 2008, पृ. 312.

5. Baqoev M. Kushavi Dehkavi va dostoni u «Duvalroni va Khixrkhon». - Dushanbe, 1958, 134 p.
6. Baqoev M. Hayot va ijodiyoti Amir Khusravi Dehkavi. – Dushanbe, 1975, 280 p.
7. Ghafurov B. Tajiki. Tarikhi gadim, kuhan va asrimiyona. J. 1 va 2. –M.: Nauka, 1972, 664 p.
8. Nurova K. Khususiyathoi badei-estetikii qazakiyori Faizii Dakani. – Dushanbe, 2013, 212 p.
9. Nurova M. Sravnitelnoe izuchenie sovremennoy Tajikskoy prozi I prozi Hindi (na primere pomanov sovremennoy Tajikskoy literaruri I literature Hindi). – Dushanbe, 2017, 245 p.
10. Pulatova Sh. Hidustan dar ijodiyoti Mirzo Tursunzoda // Mirzo Tursunzoda va masoili nazariyavii farhangi muosiri tijikon. – Dushanbe, 2011, p. 201-219
11. Said Nafisi. Muhiti zindagi va ahvolu ashore Abuabdulloh Jafar ibni Muhammad Rudarii Samarqandi. – Tehron, 1309.

स्वतंत्र लेखन,
ताजिकिस्तान

3

'कामायनी' से ध्वनित सामाजिक मूल्य

डॉ. विदुषी आमेटा

छायावाद के आधार स्तंभ जयशंकर प्रसाद द्वारा 1935 ई. में रचित कामायनी महाकाव्य आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपनी वैचारिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक गरिमा के कारण महत्त्वपूर्ण माना जाता है। जल प्लावन की पौराणिक कथा को आधार बनाकर रची गयी कामायनी कृति पन्द्रह सर्गों में विभक्त है। जलप्लावन के पश्चात् संपूर्ण पृथ्वी प्रलय के गर्त में नष्ट हो जाती है और एकमात्र जीवित बचे मनु श्रद्धा के सहयोग से पुनः मानव सृष्टि का विस्तार करते हैं। प्रसाद का यह महाकाव्य पूर्ववर्ती सभी महाकाव्यों से भिन्न भूमिका पर प्रतिष्ठित है, क्योंकि इसमें स्थूल घटनाओं और पात्रों की नहीं, अपितु सूक्ष्म मनोवृत्तियों और भावनाओं के विकास क्रम की कथा कही गई है।

प्रसाद ने इस पौराणिक-काल्पनिक कथा में भारतीय संस्कृति को जीवंत किया है। कामायनी में स्थूल पौराणिक या ऐतिहासिक घटनाओं के भीतर निहित सूक्ष्म और चिरंतन भाव सत्यों की खोज करके उन्हें शाश्वत जीवन मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित किया है और उन्हें 'आत्मा की अनुभूति'[1] कहा है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा लिखती है- "प्रसाद जी की कामायनी महाकाव्यों के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती है, क्योंकि वह ऐसा महाकाव्य है जो ऐतिहासिक धरातल पर प्रतिष्ठित है और सांकेतिक अर्थ में महाकाव्य का रूपक भी कहा जा सकता है। कल्याण भावना की प्रेरणा और समन्वयात्मक दृष्टिकोण के कारण वह भारतीय परम्परा के अनुरूप है।"[2] कामायनी में उन्होंने भारत राष्ट्र के व्यापक जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति दी है। सामाजिक जीवन के कई प्रश्नों के काल्पनिक उत्तर इसमें निहित हैं।

कामायनी मात्र छायावाद की आधारशिला ही नहीं, वरन भारतीय संस्कृति का गौरव ग्रन्थ है। "कामायनी कालजयी कृतियों में है.....युग के बदलते सामाजिक परिवेश और उसके परिणामस्वरूप जनमने वाले आस्वाद और समीक्षा प्रतिमानों के आधार पर कामायनी बराबर नये विवेचन की माँग करती रहेगी। हिन्दी

स्वच्छंदतावाद, छायावाद के समापन काव्य के रूप में तो वह स्मरणीय रहेगी ही, पर उसमें कवि ने आधुनिक मूल्यों को पाने की सराहनीय चेष्टा भी की है।"[3] मुक्तिबोध भी कामायनी में अनुभूत जीवन समस्याओं और इच्छित जीवन परिस्थितियों का प्रक्षेप मानते हैं- "प्रसाद जी ने अतीत की भावुक गौरव-छायाओं से ग्रस्त, वेदोपनिषदिक आर्ष वातावरण से अनुप्राणित समाजादर्श से प्रेरित होकर, अपनी विश्व दृष्टि तैयार की। यह विश्व दृष्टि कामायनी में प्रकट हुई। संक्षेप में कामायनीकार अपने युग से न केवल प्रभावित था, वरन अपनी युग समस्याओं के प्रति उसने बहुत आवेग और विश्वास के साथ प्रतिक्रियाएँ की।"[4]

कामायनी का प्रारंभ जल प्लावन की घटना से होता है। देवताओं के निर्बाध विलास के कारण खण्ड प्रलय हो चुकी है। सम्पूर्ण देव सृष्टि नष्ट हो चुकी है, केवल मनु शेष है। किसी महामत्स्य का चपेटा खाकर कामायनी के नायक मनु की नौका उत्तर गिरि से आ टकराती है और वे इसी स्थान पर उतर पड़ते हैं । वहाँ बैठकर मनु देवों के अतीत वैभव, प्रलय की भयानक विभीषिका तथा जीवन की नश्वरता आदि का ध्यान कर चिंतारत हो जाते हैं ।

मनुष्य अहंकार के वशीभूत होकर मात्र विजय की कामना से जीवन यापन करता है तो उसका सामाजिक जीवन विघटित होने लगता है। देवताओं के अहंकारी समाज की अंतिम परिणति पुरुष के समक्ष प्रत्यक्ष है-

अरे अमरता के चमकीले,
पुतलों तेरे वे जयनाद।
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि,
बन कर मानो दीन विषाद।।[5]

प्रकृति सदैव दुर्जेय होती है। विलास के लिए विजय का अहंकार पालने वाला मनुष्य समाज स्व अस्तित्व खो देता है-

प्रकृति रही दुर्जेय पराजित,
हम सब थे भूले मद में।
भोले थे हाँ तिरते केवल,
सब विलासिता के नद में।।[6]

प्रसाद का मत स्पष्ट है कि उच्छृंखल वासना पर टिका समाज अवश्य पतन के गर्त में गिरता है। पाश्चात्य जीवन के प्रभाव से भारतीय समाज में नग्न विलास की प्रवृत्ति बढ़ी है। पश्चिमी देश युद्धों के संत्रास से त्रस्त हैं क्योंकि वहाँ भोग विलास व विजय कामना तीव्रतम है। प्रसाद की समाज कल्पना में युद्ध, विजय, नग्न विलास और उन्मुक्त वासना के लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसे समाज का भविष्य कामायनी के चिंता सर्ग में इस प्रकार बताया गया है-

भरी वासना सरिता का वह,
कैसा था मदमत्त प्रवाह।
प्रलय जलधि में संगम जिसका,

देख हृदय था उठा कराह।।[7]

जिस समाज में नारी विलास का साधन मात्र रह जाए, पुरुष उसे भोगने के लिए युद्ध करे और विजय प्राप्त करने पर वासना के पंक में डूब जाए, उस समाज को परतंत्रता की बेड़ियाँ अवश्य जकड़ लेंगी। प्रसाद का यह वासना विरोधी दृष्टिकोण आधुनिक जीवन शैली के लिए अत्यावश्यक है। आधुनिक युग में विज्ञान ने विलास के साधन बढ़ा दिए हैं जिसके कारण भोग, विलास और वासना का मनोविज्ञान पनपा है। प्रसाद वासना रूपी पशुता को विनाश का कारण बताते है। जिस प्रकार देवांगनाओं का विलास उनके लिए बंधन बन गया, उसी प्रकार देवयज्ञों (पवित्र कर्मों) की पशुयज्ञों (अपवित्र कर्मों) में परिणति भी विनाश कारक होती है।

प्रसाद व्यक्तिगत अहंकार को भी अनुचित मानते हैं तथा समाज में किसी भी व्यक्ति की श्रेष्ठता, अमरता आदि को स्वीकार नहीं करते। वे इन सब को जीवन की मरु मरीचिका और एक प्रकार की कायरता मानते हैं। जो मरने से डरता है, वहीं अमर बना रहना चाहता है। ऐसा अमरताकामी व्यक्ति समाज के लिए भार है क्योंकि वह समाज की प्रगति रोकता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रगति के लिए परिवर्तन आवश्यक है। प्रसाद परिवर्तनकामी हैं। यहाँ तक कि देवताओं की स्थिरता व अमरता भी उन्हें स्वीकार नहीं है-

देव न थे हम और न ये हैं,
सब परिवर्तन के पुतले।
हाँ कि गर्व रथ में तुरंग सा,
जितना चाहे जो जुत ले।।[8]

कामायनी का केन्द्रीय चरित्र श्रद्धा भी परिवर्तन की प्रक्रिया से परिचित है। पुरातनता एक केंचुल के समान है और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन जरूरी है-

पुरातनता का यह निर्मोक,
सहन करती न प्रकृति पल एक।
नित्य नूतनता का आनंद,
किए हैं परिवर्तन में टेक।।[9]

प्रसाद जीवन में होने वाले परिवर्तन के लिए ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। किसी भी समाज की सुन्दर संरचना व समुचित व्यवस्था के लिए मनुष्य के अतिरिक्त किसी आध्यात्मिक सत्ता की स्वीकृति आवश्यक है। मात्र वैज्ञानिकता के बल पर कोई समाज संगठित और जीवित नहीं रह सकता। पश्चिमी देशों में वैज्ञानिकता का भाव प्रबल है फिर भी आध्यात्मिक विश्वास बना हुआ है।

पश्चिमी मनोवैज्ञानिक सार्त्र की विचारधारा के अनुरूप भारत में कतिपय लोगों द्वारा ईश्वर की मृत्यु की घोषणा की जा रही है,

परिणामस्वरूप तथाकथित शिक्षित भारतीयों द्वारा शास्त्रों की उपेक्षा की जा रही है, वहीं पश्चिम में इसके विपरीत भारतीय दर्शन की व्याख्या और विश्लेषण किया जाने लगा है। प्रसाद प्राचीन भारतीय दर्शन की इसी महानता का प्रतिपादन इन शब्दों में करते हैं–

सिर नीचा कर किसकी सत्ता,
सब करते स्वीकार यहाँ ?
सदा मौन हो प्रवचन करते,
जिसका वह अस्तित्व कहाँ ?[10]

प्रसाद यहाँ किसी वैदिक युग, पौराणिक युग या मध्यकालीन समाज की बात नहीं कर रहे अपितु एक स्वस्थ समाज की कल्पना करते हैं जो समाज अपने भारतीय कलेवर में ही स्वस्थ रह सकता है। "उन्होंने मानव वृत्तियों का निरूपण करने वाले अपने काव्य में दार्शनिकता का आभास अवश्य दिया है, पर वह दार्शनिकता काव्य का अंग बनकर आई है और उसकी प्रकृति भावना भूमि पर ही अधिष्ठित है। वह काव्य के वस्तु वर्णन को और भावात्मक वर्णन को किसी प्रकार ठेस नहीं पहुँचाती।"[11]

प्रसाद को पश्चिम का 'ईगो' वाला अहं स्वीकार्य नहीं है जो किसी पर परमाणु बम गिरा सकता है, निरीहों को मार सकता है, यहाँ तक कि करूणा के पुतले, ईश्वर के दूत ईसा को मारकर भी अपना अस्तित्व बचाना चाहता है। वे उस भारतीय अहं को स्वीकृति देते हैं जो ईश्वरीय सत्ता के अधीन रहकर स्वअस्तित्व का सृजन करता है। मनु कहते हैं –

मैं हूँ यह वरदान सदृश क्यों,
लगा गूँजने कानों में ?
मैं भी कहने लगा 'मैं रहूँ',
शाश्वत नभ के गानों में।[12]

ऐसे अस्तित्वकामी पुरुष के लिए प्रकृति अपने विराट स्वरूप का उन्मुक्त विस्तार करती है। कुरुक्षेत्र महाकाव्य में दिनकर भी कहते हैं कि– "प्रकृति नहीं डर कर झुकती है कभी भाग्य के बल से, सदा हारती वह मनुष्य के उद्यम से, श्रम जल से।"[13] कामायनी के पुरुषार्थी मनु के लिए प्रकृति निज संपदा को उन्मुक्त कर देती है–

एक यवनिका हटी पवन से
प्रेरित माया पट जैसी।
और आवरण मुक्त प्रकृति थी
हरी–भरी फिर भी वैसी।।[14]

सहानुभूति, सहृदयता, त्याग, परसुखकामना, परसंतुष्टि की सामाजिक वृत्तियाँ समाज के अस्तित्व व विकास के लिए अनिवार्य है। कामायनी के नायक मनु के स्वभाव में इनकी सहज व्याप्ति है–

अग्निहोत्र अवशिष्ट अन्न कुछ,
कहीं दूर रख आते थे।
होगा इससे तृप्त अपरिचित,

समझ सहज सुख पाते थे।।[15]

समाज की प्रगति के लिए कर्मशीलता भी एक आवश्यक गुण है। कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता, प्रतिफल अवश्य मिलता है। इसीलिए कामायनी के नायक मनु अकेले होने पर भी कर्मरत हो जाते हैं –

तप में निरत हुए मनु,
नियमित कर्म लगे अपना करने।
विश्व रंग के कर्मजाल के,
सूत्र लगे घन हो घिरने।।[16]

यहाँ तप जीवन से पलायन नहीं, अपितु कर्म का पर्याय है। इस कर्म से जन्मी नवीन वासना शारीरिक भूख न होकर, सामाजिक भूख होती है जो दो से चार होने की कामना में परिणत होती है। यह समाज विस्तार की प्रथम सीढ़ी है।

कामायनी व्यक्तिवाद का विरोध करती है। मनु अकेलेपन से त्रस्त होकर समाज के लिए अधीर हो जाते हैं। उनकी अधीरता मात्र अकेलेपन का भय नहीं है वरन समाज में स्व के विलयन की माँग है। समाज भी ऐसा होना चाहिए, जिसके सदस्य परस्पर सुख–दुःख की कथा कह सकें, सुन सकें–

कब तक और अकेले ?
कह दो, हे मेरे जीवन बोलो।
किसे सुनाऊँ कथा ? कहो,
मत अपनी निधि न व्यर्थ खोलो।।[17]

भारतीय दार्शनिकों व मनीषियों ने राम–कृष्ण की पौराणिक कथा के माध्यम से सदैव व्यक्तिवाद के विरोध में समाजवाद को प्रतिस्थापित किया है। यहाँ परिवार, समाज और राष्ट्र सदैव महत्त्वपूर्ण रहे हैं, निर्गुणोपासक संतों ने भी सत्संग के नाम पर सामाजिक महत्त्व को स्वीकार किया है। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' की कहावत लोक में एकाकीपन की स्थिति का विरोध करती है। इसीलिए श्रद्धा के सम्मुख मनु भी अपनी अकेलेपन की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हैं–

कहा मनु ने नभ धरणी बीच,
बना जीवन रहस्य निरुपाय।
एक उल्का–सा जलता भ्रांत,
शून्य में फिरता हूँ असहाय।।[18]

मनु श्रद्धा को पाकर ऐसा अनुभव करते है जैसे तपन में शीतल बयार मिली हो या नीरस पतझड़ में वसंत आया हो। श्रद्धा भी ललित कलाएँ सीखने की कामना से भटक रही हैं। वह प्रकृति में हृदय की सत्ता का सत्य खोज रही थीं। प्रकृति सौन्दर्य में सत्य खोजने की यह व्याकुलता आधुनिक वैज्ञानिक युग के लिए भी आवश्यक है। यही कारण है कि आधुनिक साधन सम्पन्न लोग अपने आलीशान भवनों में कृत्रिम प्राकृतिक सौन्दर्य की रचना कर रहे हैं अथवा प्रकृति दर्शन के लिए सुदूर देशों की यात्रा कर रहे हैं।

कामायनी के जीवन मूल्यों में पारस्परिक

निश्छलता, सहानुभूति, प्रेम, अंहकारहीनता, वासना की निर्मलता, सहयोग, सेवा, परिवर्तन एवं कर्म के भाव सन्निहित है। ये गुण हर युग के समाज में अनिवार्य हैं। इनसे रहित होने के कारण आधुनिक समाज दिशाहीन हो रहे हैं। प्रसाद मनुष्य की स्वचेतना से सुन्दर इतिहास का सृजन करना चाहते थे। इस पृथ्वी तल पर विधाता की सृष्टि मानवता की कीर्ति से ही सफल हो सकती है।

कामायनी नारी-पुरुष समानता की पक्षधर है। सामाजिक विकास के लिए इस समानतावादी दृष्टि का यह महत्त्व है कि पुरुष नारी को सुरक्षा, प्रेम और पोषण दे तथा नारी भी प्रत्युत्तर में समान सहयोग भाव रखे। पुरुष के पास अगर नारी हित के लिए शौर्य, प्रेम, सहानुभूति, पुरुषार्थ और तप है तो नारी के पास दया, माया, ममता, मधुरिमा और अगाध विश्वास है। आधुनिक स्त्री विमर्श के लिए आदान-प्रदान की यह समानता निश्चित ही स्तुत्य रहेगी। नारी पुरुष समानता के नाम पर कर्मक्षेत्र में पुरुष की बराबरी से आधुनिक भारतीय समाज विकृति ग्रस्त होने लगा है। वर्तमान कथा साहित्य में इस संत्रास को अभिव्यक्ति दी जा रही है।

कामायनी के काम और लज्जा सर्ग समाज के आधार स्तंभ नारी-पुरुष संबंध की निर्मलता का प्रतिपादन करते हैं। काम सर्ग कर्म की मनोहरता के प्रति आकर्षित करता है तो वासना सर्ग सामाजिक विकास में पुरुष की औचित्यपूर्ण भूमिका से हटने पर पतन का बोध कराता है। अहंकार पुरुष को असामाजिक बनाता है। मनु भी अहंकारी होकर अनुचित कृत्यों में डूब जाते हैं। पूँजीवादी वृत्ति के अनुरूप मनु समस्त सुखोपभोग अकेले करना चाहते हैं और यहाँ वे सामाजिक की सहानुभूति खो देते हैं और पतन की ओर बढ़ने लगते हैं । आज विज्ञान के बल पर विकसित देश और पूँजी के बल पर पूँजीपति भी मनु के समान आचरण कर रहे हैं परन्तु, अंहकारी मनु अप्रत्यक्ष रूप से जिस प्रेम पूर्ण समाज की कामना करते हैं, वहीं कामना कहीं न कहीं इन विकसित देशों और पूँजीपतियों में भी अवश्य रहती होगी-

पशु कि हो पाषाण,
सब में नृत्य का नव छंद।
एक आलिंगन बुलाता,
सभी को सानंद।।[19]

समाज को त्यागकर मात्र व्यक्तिवाद के आधार पर आधुनिकता जीवित नहीं रह सकती है। संसार में सर्वत्र प्रेम भाव व्याप्त है, जिसे संचित करके मानवता और मनुष्य का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है। कामायनी का प्रणय इसी मानवता का

प्रतीक है। कामायनी में नग्न वासना का विरोध है पर शुद्ध प्रणय व्यापार वर्जित नहीं माना गया है। शुद्ध प्रणय की भूमिका पर पहुँचने पर वासना के स्थान पर सौन्दर्य उमड़ पड़ता है। लज्जा सर्ग इसी सौन्दर्य की रक्षा के लिए लज्जा को अवतरित कराता है। आधुनिकता के पुजारी लज्जा को पुरातन भाव कह सकते हैं, किन्तु लज्जा की उपयोगिता अवैज्ञानिक नहीं है। मन का संयम और कार्य से पूर्व सोच-समझ लेना हर विवेकशील नारी के लिए अनिवार्य है। लज्जा स्पष्ट कहती है-

इतना न चमत्कृत हो बाले,
अपने मन का उपकार करो।
मैं एक पकड़ हूँ जो कहती,
ठहरो कुछ सोच-विचार करो।।[20]

लज्जा सौन्दर्य व यौवन की धात्री है, वह उन्हें गर्व करना सिखलाती है-

उज्ज्वल वरदान चेतना का,
सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं ।
जिसमें अनन्त अभिलाषा के,
सपने सब जगते रहते हैं।
मैं उसी चपल की धात्री हूँ,
गौरव महिमा हूँ सिखलाती।
ठोकर जो लगने वाली है,
उसको धीरे से समझाती।।[21]

यहाँ लज्जा भाव व्यक्तिगत सीमा से हटकर सामाजिक अनिवार्यता के रूप में चित्रित है। लज्जा का सौन्दर्य और संयम बीसवीं शताब्दी की भारतीय नारी के मन का भी सहज अंग है। कामायनी में लज्जा की अनिवार्यता प्रतिपादित कर प्रसाद नारी विरोधी दृष्टिकोण को प्रदर्शित नहीं कर रहे है। वे नारी के प्रति श्रद्धावनत् हैं-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।।[22]

नारी और पुरुष के पारस्परिक संबंधों में श्रद्धा और विश्वास के भाव अनिवार्य है। परस्पर के समर्पण और सहमति से ही समाज में सक्रियता आती है।

कामायनी में पशु बलि का विधान कर्तव्याकर्तव्य का संकेत करता है। जीवन स्वप्नों की पूर्ति के लिए किए जाने वाले कर्म यज्ञवत् पवित्र होने चाहिए। मनु किलात और आकुलि के सहयोग से अपवित्र (अनुचित) कर्म करते हैं। इससे उनकी समाज चेतना कुण्ठित हो जाती है। पाठक की समस्त घृणा मनु के अनैतिक आचरण पर केन्द्रित हो जाती है। पशु बलि और आत्मजा इड़ा के साथ बलात्कार जैसे दो दुष्कर्म मनु को पतन की ओर ले जाते हैं। यह मनुष्य की आधुनिक पतनशील प्रवृत्तियों के सूचक हैं। आधुनिक बुद्धिवादी दृष्टिकोण से सुख-साधनों का संचयन कष्टों की ओर

बढ़ाने वाला है। यह द्वन्द्वात्मकता अन्तर्दाह उत्पन्न करने वाली है जिसे शांत किये बिना समृद्ध समाज की कल्पना संभव नहीं है। सामाजिक विषमता का मूल कारण मनुष्य का मनुष्य के प्रति छल, कपट और निर्ममता है। कामायनी इस कलुषता को मिटाकर जग हित का समर्थन करती है। जब तक मनुष्य मात्र का परस्पर व्यवहार संतुलित नहीं है, तब तक मानसिक रूप से स्वस्थ समाज की कल्पना संभव नहीं है-

दुर्व्यवहार एक का कैसे,
अन्य भूल जावेगा ?
कौन उपाय गरल को कैसे,
अमृत बना पावेगा।।[23]

सभी प्राणियों के प्रति सद्व्यवहार और समान अधिकार का भाव कामायनी का प्रबल स्वर है। श्रद्धा स्पष्ट कहती है-

औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सब को सुखी बनाओ।।[24]

इसमें उस समाज संरचना का संदेश है जो स्वातंत्र्य के लिए संघर्ष करता है, जो जाति, वर्ण, वर्ग, पद के विभिन्न स्तरों पर भेदभाव नहीं करता है। इसमें स्वेच्छाचारी, अहंवादी, व्यक्तिगत सुख भोग का आकांक्षी, निरंकुश मनु श्रद्धा के विवेक के सम्मुख पराजित होता है परन्तु, ऐसा व्यक्तिवादी आत्मग्लानि की आग में तपकर श्रद्धा के सहयोग से समाजोपयोगी बन सकता है। हमारी समाज संरचना का सबसे बड़ा दोष यही है कि हम छोटे-बडे, ऊँच-नीच और विशेषाधिकारों के आधार पर विभाजित हैं। कामायनी इस विचार का प्रतिरोध करती है।

स्वस्थ समाज संरचना में व्यक्ति की चारित्रिक पवित्रता भी अनिवार्य है। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी हमारा देश कई समस्याओं से जूझ रहा है। इसके लिए चारित्रिक पतन उत्तरदायी है। यदि हमें परम्परागत मान्यताओं से घृणा थी तो हमें समाज सम्मत नई मान्यताएँ अपनानी चाहिए थी पर हमने ऐसा नहीं किया परिणामस्वरूप आज हर जगह विसंगतियाँ व्याप्त हो गई हैं। इससे मुक्ति का मार्ग कामायनी द्वारा सुझाया गया है। सामाजिक उत्थान के लिए संकुचित दृष्टि का अंत आवश्यक है।

स्वप्न सर्ग में प्रसाद जी स्पष्ट कहते हैं कि समाज का बौद्धिक विकास भावात्मक विकास के समानान्तर न होने पर सामाजिक जीवन का समस्त सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। सारस्वत प्रदेश में समृद्धि की ओर बढ़ते मनु का पतन नैतिक पतन है। अधिकार भोग की लालसा के साथ आत्मजा के साथ अशुद्ध आचरण से प्रजातंत्र व्यर्थ हो गया। वर्तमान

भ्रष्टाचारी तंत्र भी इसी का एक स्वरूप है। आखिर इसका उत्तरदायी कौन है ? इसका समाधान चारित्रिक श्रेष्ठता ही है। व्यक्तिगत आकांक्षा और अहंकार से ऊपर उठकर समाज के सभी वर्गों के साथ अभेद आचरण, आवश्यक है। पाश्चात्य दर्शन यद्यपि व्यक्तिवाद को प्रश्रय देता है परन्तु, उसका दुष्परिणाम प्रत्यक्ष है। कामायनी में प्रसाद इसका उल्लेख करते हैं-

वह विज्ञानमयी अभिलाषा,
पंख लगाकर उड़ने की।
जीवन की असीम आशाएँ,
कभी न नीचे मुड़ने की।
अधिकारों की सृष्टि और उनकी
वह मोहमयी माया।
वर्गों की खाई बन फैली,
कभी नहीं जो जुड़ने की।।[25]

इन खाइयों को अभेद दर्शन से ही भरा जा सकता है जिसका प्रतिपादन कामायनी में सामाजिक-आध्यात्मिक भूमि पर हुआ है। मनु समस्त प्रजा को संगठित होकर स्वतंत्रता के आनंद को प्राप्त करने तथा अभेदता और समरसता से समृद्ध होने का उपदेश देते हैं। यह आनंद व समृद्धि जीवित का मोक्ष है। इसमें आधुनिक जीवन की समस्याओं का समाधान आध्यात्मिक जीवन सूत्रों से व्यापक सामाजिक भाव भूमि पर किया गया है। स्पष्टतः कामायनी भावात्मक एकता से सुख-साधना की ओर अग्रसर करती है। प्रसाद इसमें भारत की स्वतंत्रता और स्वस्थ समाज संरचना के लिए सचेष्ट दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ सूची:

1. जयशंकर प्रसाद, कामायनी की भूमिका, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 1992, पृष्ठ 4
2. गंगा प्रसाद पाण्डेय, कामायनी-एक परिचय, रामनारायण लाल पब्लिशर, इलाहाबाद, 1946, भूमिका, पृष्ठ 8
3. प्रेमशंकर, कामायनी का रचना संसार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 16
4. गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
5. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, चिंता सर्ग, पृष्ठ 2
6. उपर्युक्त, पृष्ठ 2
7. उपर्युक्त, पृष्ठ 3
8. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, आशा सर्ग, पृष्ठ 8
9. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, श्रद्धा सर्ग, पृष्ठ 17
10. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, आशा सर्ग, पृष्ठ 8

11. नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 71-72
12. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, आशा सर्ग, पृष्ठ 9
13. रामधारी सिंह 'दिनकर', कुरुक्षेत्र, तृतीय सर्ग, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 2007
14. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, आशा सर्ग, पृष्ठ 9
15. उपर्युक्त, पृष्ठ 10
16. उपर्युक्त
17. उपर्युक्त, पृष्ठ 12
18. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, श्रद्धा सर्ग, पृष्ठ 15
19. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, वासना सर्ग, पृष्ठ 29
20. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, लज्जा सर्ग, पृष्ठ 36
21. उपर्युक्त, पृष्ठ 37
22. उपर्युक्त, पृष्ठ 38
23. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, कर्म सर्ग, पृष्ठ 44
24. उपर्युक्त, पृष्ठ 47
25. कामायनी: जयशंकर प्रसाद, स्वप्न सर्ग, पृष्ठ 75

सह आचार्य, हिन्दी-विभाग,
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चुरू (राजस्थान)

4

हिंदी कविता में संविधानिक मूल्य

डॉ. सुधाकर शेंडगे

भारतीय संविधान भारतीय समाज की धरोहर है। यह वही संविधान है, जिसने भारत के हर व्यक्ति को नागरिक बनाया और उसे इस देश का नागरिक होने के सभी अधिकार प्रदान किये। भारतीय संविधान ही लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करता है। 29 अगस्त, 1947 को भारतीय संविधान की मसौदा समिति का गठन हुआ और डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को मसौदा समिति का अध्यक्ष बनाया गया। प्रज्ञावान डॉ. आंबेडकर ने विश्व के अनेक देशों के संविधानों को सामने रखकर एक आदर्श संविधान को अंतिम स्वरूप दिया। 26 नवंबर, 1949 को इसे संविधान सभा ने सर्व संमति से मान्यता प्रदान की और 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान को लागू किया गया।

भारत में 28 राज्य, 09 केंद्रशासित प्रदेश, कई धर्म, हजारों जातियां, तीन हजार से अधिक भाषाएं, अनेक पंथ, विभिन्न संस्कृतियां, अनेक प्रांत, अनेक परिवार और 136 करोड़ की जनसंख्या वाले विशालकाय देश को इकहत्तर सालों से एकसूत्र में बाँधकर रखने का काम भारतीय संविधान ने ही किया है। इससे भारतीय संविधान की नींव कितनी मजबूत है, इस बात का अंदाजा आ जाता है।

संविधान की उद्देशिका का प्रारंभ ही 'हम भारत के लोग' से होता है। इसे 'मैं' के बजाय 'हम' में तबदिल इसलिए किया गया कि, 'मैं' व्यक्तिगत होता है और 'हम' सामाजिक भी और सामूहिक भी। 'हम' में एकात्म भाव है जो हमारी प्रबुद्ध परंपरा, सभ्यता और संस्कृति को बनाये रखने की दृष्टि से आवश्यक है। वैसे तो 15 अगस्त, 1947 को ही यह देश स्वतंत्र हुआ लेकिन 26 जनवरी, 1950 को यह देश प्रजासत्तक बना अर्थात 1950 में भारतीय जनता को संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार प्रदान किये गये। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि, संविधान ने ही यहां के हर नागरिक को स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किये।

भारतीय संविधान हमें किन-किन बातों की स्वतंत्रता देता है, इस संबंध में उद्देशिका में स्पष्ट शब्दों में लिखा गया है कि, "सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता।"[1] अर्थात संविधान भारतीय नागरिक के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध है। व्यक्ति के रूप में वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। वह अब केवल व्यक्ति नहीं है बल्कि इस देश का प्रबुद्ध और अधिकार प्रदत्त नागरिक है, जिसे विचार, अभिव्यक्ति, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता है। भारतीय संविधान देश की एकता, अखंडता और बंधुता के लिए उत्तरदायी है। साथ ही साथ प्रतिष्ठा तथा अवसर की समता के लिए दृढ संकल्प है। इससे भारतीय संविधान का दायरा कितना व्यापक है, यह बात अपने आप स्पष्ट हो जाती है।

भारतीय संविधान ने लोकतंत्र को मजबूत बनाने का काम किया है लेकिन संविधानिक मूल्य जन-जन तक पहुंचाने में हम पूरी तरह से सफल नहीं हो पाये हैं। कविता ने हमेशा आम आदमी का पक्ष लिया है। धूमिल ने अपनी एक कविता में लिखा है,

"कविता

मुजरिम के कटघरे में खड़े
बेकसुर आदमी का
हलफनामा है।''[2]

अर्थात कविता अक्सर उस बेकसूर आदमी के पक्ष में लड़ती है, जिसे मुजरिम के कटघरे में खड़ा किया गया है। धूमिल इससे आगे बढ़कर लिखते हैं –

"सब के सब व्यवस्था के पक्ष में चले गये हैं
विपक्ष में सिर्फ कविता है।''[3]

अर्थात कवि और कविता दोनों भी अपना-अपना धर्म समझते हैं। सारी दुनिया आंखें मूँद सकती है लेकिन कवि को सजग रहना पड़ता है। जहां-जहां अन्याय, अत्याचार होता हो उसका यथार्थ चित्र पहुँचाना कवि का काम होता है। हिंदी कविता ही नहीं बल्कि समूची भारतीय कविता भारतीय संविधान द्वारा आम आदमी को दिये गये हक़ और अधिकारों की ही बात करते आयी है। विशेष कर साठोत्तरी कविता में जो दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी और अल्पसंख्य विमर्श से लेकर किन्नर विमर्श की कविता संविधानिक मूल्यों की मांग करनेवाली ही कविता है। इस बात का बहुत सुंदर उदाहरण हमें दुष्यंतकुमार की गज़ल में मिलता है। संविधान के संबंध में उनकी यह सार्थक पंक्तियां देखिए -

"सामान कुछ नहीं, फटेहाल है मगर
झोले में उसके पास कोई संविधान है।''[4]

दुष्यंत कुमार की इन पंक्तियों से संविधान की मूल्यवत्ता सिद्ध होती है।

भारतीय संविधान ने दीन-दलित, पीड़ित, आदिवासी, मजदूर, स्त्री को जो हक़ और अधिकार प्रदान किये हैं, उसी के फलस्वरूप उन्होंने मुक्ति की सांस ली है। दलितों के साथ जानवर से भी बदतर व्यवहार किया जाता था, उन्हें मनुष्य ही नहीं माना जाता था लेकिन भारतीय संविधान का कवच कुंडल मिल जाने से वे अपना हक़ और अधिकार मांगने लगे हैं। दलित कवि वाल्मीकि के शब्दों में -

"मरते-मरते मेरा बाप थमा गया
मेरे हाथ में कलम झाड़ू की जगह
कालग्रस्त अंधेरों की सिसकियां
और मुक्ति का घोषणापत्र....''[5]

भारतीय संविधान केवल दलितों की मुक्ति का ही घोषणापत्र नहीं है बल्कि जो-जो शोषित-पीड़ित है, उन सभी का घोषणापत्र है। इस पुरुष प्रधान संस्कृति ने स्त्रियों को उनके कई अधिकारों से दूर रखा था। अमीर तथा सवर्ण घर की स्त्रियां भी शोषण की शिकार थी और उनको शूद्र माना जाता था।

भारतीय संविधान ने उनके लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये। इस दिशा में फुले दंपति ने जो काम किया उसी के फलस्वरूप नारी पढ़-लिखकर आगे बढ़ी। उसकी तीसरी नेत्र खुल गयी और वे अपने हक़ तथा अधिकार के प्रति सचेत हुईं।

हमारी संस्कृति ने पत्नी को अर्धांगिनी माना परंतु इसमें भी वह पुरुष का अंग ही रह गयी है। उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व है कि नहीं? यही प्रश्न रजनी तिलक ने अपनी एक कविता में उठाया है –

"मैं नहीं मानती खुद को अर्धांगिनी
मैं सिर्फ एक शरीर नहीं हूँ
तुम मुझे अर्धांगिनी कहकर
मेरा अपमान मत करो
मैं हूं एक संपूर्ण शरीर, स्वतंत्र अस्तित्व
मेरे कंधों और मस्तिष्क का सदुपयोग
जाननेवाली व्यक्ति हूं इंडिविजुअल!''[6]

इस प्रकार आज-कल की महिला लेखिकाएं, कवयित्रियां अपने हक और अधिकारों की ही मांग करती हैं। ना केवल पति-पत्नी में बल्कि हम हमारे बच्चों में भी जो भेदभाव करते हैं, उसका चित्रण भी ये महिलाएं करती हुई दिखाई देती हैं। संविधान ने हमें स्वतंत्रता प्रदान की है परंतु स्त्री को स्वतंत्रता मिलती नहीं है। स्त्री के रूप में उसे

जन्म देना है या नहीं, यहीं से उसकी शुरुआत है। लड़की है तब तक उसका निर्णय बाप लेगा, शादी होनेपर पति और बूढ़ी होने पर बेटा। उसका कोई अस्तित्व है कि नहीं, यह प्रश्न है।

भेदभाव की यह शुरूआत हम अपने घरों में ही करते हैं। लड़की को वह सबकुछ नहीं देते जो लड़के को दिया जाता है। हमारी संस्कृति में लड़के को दीया माना जाता है। यह सोच ही पुरुषप्रधान है। बहुत बार यह दीया ठीक ढंग से जल भी नहीं पाता वह दूसरों को क्या प्रकाश देगा? कभी-कभी तो स्वयं जलने के बजाय माता-पिता को ही जलाता है। फिर यह दीया किस काम का? लड़का-लड़की के भेद के संदर्भ में अनामिका लिखती हैं-

"राम पाठशाला जा, राधा खाना पका
राम आ बत्ताशा खा, राधा झाड़ू लगा
भैय्या अब सोयेगा, जाकर बिस्तर बिछा
राम यह तेरा कमरा है, और मेरा?"[7]

भारतीय संविधान ने जितने अधिकार लड़के को दिये हैं, उतने ही अधिकार लड़कियों को भी दिये हैं फिर उनमें भेदभाव करनेवाले हम कौन होते हैं? हम राम को पढ़ने-लिखने का मौका देकर उसका भविष्य बनाना चाहते हैं परंतु लड़की को यह समान अवसर हम नहीं देते जबकि यह उसका संविधानिक अधिकार है। हमारा संविधान समताधिष्ठित मूल्यों की हिमायत करता है उस मानसिकता को क्या करें जो पुरुषप्रधान प्रवृत्ति को जन्म देती है। गर्भ में ही लड़की को मारा जाता है और बाप खुद हत्यारा बन जाता है। कवि सूरजपाल चौहान उस हत्यारे बाप से सवाल करते हैं –

"हत्यारे बाप से मिलकर तुम भी मां
मुझे गर्भ में फलने-फूलने दे
अधिकार दे फुदकने का...!"[8]

एक तो उसे इस दुनिया में आने से पहले ही मार दिया जाता है। मान लो आ ही गयी तो उसे सारे अधिकारों से वंचित रखा जाता है। उसे बंदी बनकर ही रहना पड़ता है। कितनी विडंबना है कि सारा घर जिसके भरोसे चलता है, उसकी ही घर में कोई कीमत नहीं होती, उसका कोई कुछ नहीं सुनता उल्टे उसको सबका सुनना पड़ता है। हमारी धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था ने उसे शिक्षा से वंचित रखने का षडयंत्र रचा लेकिन जब वह शिक्षित हुई, सचेत हुई तो अपने अधिकारों को समझने लगी। स्त्री इस समाज का आधा हिस्सा है। वे चुप थीं, मूक थीं इसका अर्थ यह है कि समाज की आधी दुनिया को हमने खामोश रखा। इसीलिए स्त्री विमर्श का जन्म हुआ। स्त्री-विमर्श की सारी कविताएं स्त्रियों की मानवीय और संविधानिक अधिकारों की ही मांग करती है। अब वह अपनी आवाज़ बनना चाहती है। रजनी तिलक के शब्दो में -

"इकाई नहीं हूं मैं, कराड़ो पदचाप हूं,
मूक नहीं मैं आधी दुनिया की आवाज हूं!"[9]

जैसे स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श अपने अधिकारों की मांग करता है, उसी प्रकार इन्हीं से प्रेरणा पाकर आदिवासी भी अपने हक़ और अधिकारों की बात करने लगा है। आदिवासियों की व्यथा-कथा तो और अधिक दु:खद है। दलित और स्त्री को गांव और घर में जगह तो है, आदिवासी तो गांव का हिस्सा भी नहीं थे। जंगल ही उनका गांव था। वही घास-फूस खाकर वे अपनी जिंदगी जीते रहे। गांववालों ने उनके दु:ख और दर्द को तो नहीं समझा उल्टे उनको चोर और उचक्के घोषित कर दिया। बड़ी विडंबना है कि एक ओर आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है और आदिवासी पाड़ों तक हम दो जून की रोटी भी नहीं पहुंचा पाये। वहां उनके बालक कुपोषित होकर मर जाते हैं। जिस जल, जंगल और जमीन के सहारे वे जीवनयापन हैं, उनसे ये छीनने की भरसक कोशिश की जा रही है। उन्हें खदेड़ा जा रहा है। महादेव टोप्पो लिखते हैं –

"वैसे सबकुछ से किया है तुमने बेदखल
घर-द्वार, खेत-खलिहान, भाषा-संस्कृति-अध्यात्म
जंगल, पहाड़, नदी-झरने, पेड़-पत्ते, हवा सबकुछ
शरीर का मांस भी नोच लेने के बाद
और क्या लोगे? हमारी आस्थियां?"[10]

यह सच है कि प्रजासत्ताक के सत्तर साल बाद भी हम आम आदमी के रोटी, कपडा और मकान जैसी मूलभूत समस्याओं का भी हल नहीं निकाल पाये हैं। 'भूख' दुनिया का सबसे बड़ा सच है। भूख कितनी खतरनाक होती है, इस संबंध में कवि नरेश सक्सेना लिखते हैं-

"भूख सबसे पहले दिमाग खाती है
उसके बाद आंखें
फिर जिस्म में बाकी बची चीजों को
छोड़ती कुछ भी नहीं है भूख
वह रिश्तों को भी खाती है।"[11]

कहा जाता है कि भारत कृषिप्रधान देश हैं। इस देश की आधी से भी अधिक आबादी कृषि पर ही निर्भर है। प्रश्न यह है कि इन पचहत्तर वर्षों में किसानों के जीवन में क्या परिवर्तन आया है। उसे अन्नदाता कहकर उसका गौरव किया गया, उसे 'बलीराजा' कहकर बार-बार उसकी बलि चढ़ायी गयी। आज़ादी के पचहत्तर सालों में हम किसानों के खेतमाल का मोलभाव नहीं कर पाये हैं। दुकान पर सूई जैसी छोटी-से-छोटी चीज का मोलभाव पहले से तय है परंतु सारी दुनिया के लिए अनाज पैदा करनेवाले किसान को अपनी फसल का मोलभाव करने का अधिकार नहीं है। जितनी उसकी लागत है, उतना भी उसे नहीं मिल पा रहा है। किसान एक ओर रोज आत्महत्या कर रहा है और देश अमृत महोत्सव का जश्न मना रहा है। धूमिल ने बहुत पहले किसानों को इन शब्दों में सचेत करना चाहा –

"वह सच्चा पृथ्वीपुत्र है
मगर तुम्हारे लिए कहा गया हर वाक्य
एक धोका है जो तुम्हें दलदल की ओर ले जाता
है"[12]

इस देश की यह सबसे बड़ी विडंबना है कि सबकी भूख मिटानेवाला ही भूखा सोता है। दूसरों के लिए वस्त्र बुननेवाला वस्त्रहीन है। दूसरों के लिए महल बनानेवाला झोपड़ियों में रहता है या खुले आसमान के नीचे सोता है। आज किसान और मजदूर सबसे अधिक लाचार है। किसान की समस्याओं को हल करना तो दूर लेकिन स्वाभिमान की रोटी भी उसके नसीब में नहीं है। किसान की इस खस्ता हालत का चित्रण जगवीर सिंह 'राकेश' इन शब्दों में करते हैं -

"किसान की मजबूरी है परिवार पालना
झूठा वरन् लगता है अधिकार पालना
धूल, कंकड़, मिट्टी, रोटी सब है मिट्टी
तभी तो बेचारे फांसी लगाकर
फंदों में झूले होते हैं और
नेता, सरकारे रोज मौज में,
नींद चैन की खूब सोते हैं"[13]

इस प्रकार हम देखते हैं कि, इस देश का दलित, वंचित, पीड़ित, आदिवासी, किसान, मजदूर, स्त्री से लेकर आम आदमी तक सभी अपने संवैधानिक अधिकारों से वंचित दिखाई देते हैं। भारतीय संविधान एक वैश्विक महाकाव्य है और संविधान की उद्देशिका एक सुंदर कविता है। देश के हर नागरिक को संविधान ने हक़ और अधिकार प्रदान किये हैं परंतु इन अधिकारों की रक्षा नहीं होती, कई बार प्रस्थापित व्यवस्था गरीब, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्याकों से उनके अधिकार छीन लिए जाते हैं या उनको उनसे वंचित रखा जाता है। यह हमारी राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक व्यवस्था किस प्रकार की है, उस पर निर्भर है। कवि संवदेनशील होता है इसलिए वह अपनी कविता द्वारा संवैधानिक और मानवीय मूल्यों की मांग करता है परंतु व्यवस्था निरंतर संवेदनाहीन होती है। इस संबंध में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की 'देश कागज़ पर बना नक्शा नहीं

होता' कविता बहुत मायने रखती है –

"देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता
कि एक हिस्से के फट जाने पर
बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बनें रहें
और नदियां, पर्वत, शहर, गांव वैसे ही
अपनी-अपनी जगह दिखें, अनमने रहे
यदि तुम नहीं मानते तो
मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है।"[14]

कवि और कविता तो निरंतर अपना धर्म निभाते आये हैं। जो अब तक चुप थे, मूक थे उन्होंने भी कविता के जरिए ही अपनी आवाज बुलंद की है। अब लोग काफी सचेत हो रहे हैं, व्यवस्था से लड़ रहे हैं और संविधानिक अधिकार मांग रहे हैं। इतने बड़े लोकतंत्र वाले देश में निश्चित रूप से लोग जीत जाएंगे और व्यवस्था ध्वस्त हो जायेगी क्योंकि जो भी संविधान में हाथ डालेगा उसके हाथ जल जाएंगे। इतना विश्वास तो हिंदी कविता ने ही जनसामान्य को दिया है।

संदर्भ :

1. संविधान उद्देशिका, पृ. 1
2. संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ. 9
3. संसद से सड़क तक (नक्शलबाडी), धूमिल, पृ. 48
4. साये में धूप, दुष्यंत कुमार, www.kavitakosh.org
5. अब और नहीं, ओमप्रकाश वाल्मिकी, पृ. 103
6. यथार्थवाद और हिंदी दलित साहित्य, सर्वेशकुमार मौर्य, पृ. 108
7. कवि ने कहा, अनामिका, पृ. 11
8. मेरी चुनिंदा कविताएं, सूरजपाल चौहान, पृ. 71
9. पदचाप, रजनी तिलक, पृ. 31
10. कलम को तीर होने दो, सं. रमणिका गुप्ता, पृ. 181
11. भूख, नरेश सक्सेना, www.apnamorcha.com
12. संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ. 51
13. भूख, जगवीर सिंह 'राकेश', पृ. 1-2
14. देश कागज़ पर बना नक्शा नहीं होता, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना www.kavitakosh.org

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
डॉ. बाबासाहब आंबेडकर
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद, महाराष्ट्र

5 विदूषक का 'चरित्र' रूप एवं उसके बदलते आयाम

डॉ.मोनिका ठक्कर

विदूषक यह रंगमंच के लिए एक संकेत ही नहीं, या केवल एक संस्था ही नहीं अपितु वह एक अभिनेता है। एक अभिनेता के रूप में प्राचीन लोकरंगभूमि से लेकर प्राकृत रंगमंच और प्राकृत रंगमंच से लेकर संस्कृत रंगमंच और संस्कृत रंगमंच से लेकर मराठी रंगमंच तक विदूषक एक अभिनेता के रूप में, एक चरित्र के रूप में, एक पात्र के रूप में अस्तित्व में दिखाई देता है, किंतु समय के साथ इस पात्र का स्वरूप बदलता रहा और बदलते स्वरूप के अनुसार इस पात्र को समकालीन स्थिति में परिवर्तित किया जाता रहा। विदूषक इस संज्ञा को अंग्रेजी में निम्नलिखित पर्यायी नामों से या पर्यायी संज्ञा से उल्लेखित किया जाता है।

१) क्लाउन - clown
२) मोकर - Mocker
३) जोकर - Joker
४) इंटरटेनर - Entertainer

इन 'चारों संज्ञाओं का अर्थ व्यंग और हास्य से संबंधित है। जो हंसाने के लिए ऐसी कृतियाँ करता है, जो मूर्खता भरी हो, जो विसंगत हो, जो छिछोरी हो, जो पागलपन की हो और इन्हीं सारी हरकतो से मजाक बनना या बनाना यही उसका काम होता है। विनोद, व्यंग और हास्य की निर्मिती कर लोगों का मनोरंजन करना यही उसका आद्य कर्तव्य होता है। स्वांग भरना, नकल करना, शारीरिक अंग विक्षेप द्वारा हास्य निर्माण करना। शाब्दिक व्यंग और हास्य का उपयोग करना विदूषक के प्रवृत्ति तथा प्रकृति का प्रतीक होता है। विदूषक का स्वरूप स्थितिओंनुसार बदलता गया यह वास्तव है, किन्तु उसकी जो मूल प्रकृति एवं प्रवृत्ति है वह सर्व कालों मे एक सी रही है, समान रही है।

विदूषककी उत्पत्ति :

भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार विदूषक की उत्पत्ति संस्कृत नाटक में हास्य रस निर्माण करने के लिए की गयी हैं।

"विदूषका: सुत्रधारस्तथा वे परि पार्श्वक: ।
यज्ञ कुर्वान्ति संजल्प तत्रापि त्रिगंत मतम् ॥
विदूषक स्त्वेकपदां सुत्रधारस्मितावहाम ।
असंबद्ध कथाप्रायां कुर्यात्कथनिका तत: ॥[1]

इसके अलावा संस्कृत भाव में विदूषक का अर्थ "विशेषेण दुष्यति इति विदूषका'' ऐसा भी बताया गया है। जिसका अर्थ होता है विशेष प्रकार का हितकारक दूषण देनेवाला अभिनेता अथवा कलाकार। अभिनव गुप्त ने भी विदूषक की व्याख्या अगल पक्तिओं में की है ।

"सूरतविषये संधीग्रहणे विग्रहे ना
विग्रहसंधिना दुषयति विदुषका: ।
विप्रलंभ विनोदेन दुषयति
इति विप्रलंभ सुहत: ॥

संधिविग्रह के आधार पर हितकारक दूषणों का उपयोग कर विप्रलंभ हास्य व्यंग का जो निर्माण करता है; वह कलाकार अर्थात विदूषक। भरत ने भी अपने नाट्यशास्त्र में विदूषक को मर्कटचेष्टा करने वाला बौना, कुबड़ा, हास्य उत्पादन करने वाला उट अर्थात विदूषक ऐसा कहा है। विदूषक के उत्पत्ति के बारे में कई सिद्धांत बताये

गए हैं।[2]

पिशेल के अनुसार कठपुतलिओं के खेल से विदूषक पात्र की निर्मिती हुई है।, विंडीश के अनुसार ग्रीक नाटक के Servus Cusrens इन पात्रों से संस्कृत नाटक में विदूषक की निर्मिति हुई है। जी. मुल्लर हेस के अनुसार रोमन मुकनाट्य (माईमस) Mimus के खेल में हास्य व्यंग निर्माण करने वाले मोकोस Mokos इस चरित्र से विदूषक का पात्र निर्माण हुआ है। हिलब्रन्ट लेव्ही और नोव्ह के अनुसार प्राकृत नाटकों से संस्कृत नाटकों ने विदूषक का अनुकरण किया है। 'कीथ' के अनुसार महाव्रत इस यज्ञांगविधि से विदूषक का पात्र लिया गया है। गो.के भट - वानर लिला से विदूषक पात्र की निर्मिति हुई है। वाजसनेय संहिता के अनुसार प्रमाद के लिए वामन वैसे ही हास्य के लिए 'कारी' यह पात्र निर्माण हुआ है। कारी का अर्थ विदूषक होता है; जिसका उल्लेख पुरूमेध तैत्तरीय ब्राह्मण और शतपथ ब्राह्मण में किया गया है। वराहमिहिर ने उसे हासज्ञ कहा है; कौटिल्य ने उसे कुहक या कुहकजीवी कहा है। वराहमिहिर और कौटिल्य के अनुसार विदूषक एक कलोपजीवी जाति होती थी। मनु, याज्ञवल्क्य तथा वात्सायन ने भी जीवन चरितार्थ और सेवा करनेवाली जाति के रूप में विदूषक का वर्णन किया है। गोदावरी केतकर के अनुसार ब्राह्मणों ने भरत कलाकारों को दिए गए श्राप से विदूषक का पात्र निर्माण हुआ है। सिल्वा लेव्ही के अनुसार प्राकृत लोकनाट्य में चित्रित किए गए भ्रष्ट ब्राह्मण के चरित्र से विदूषक की निर्मिती हुई है।[3] विदूषक के उत्पत्ति के ऐसे कई सिद्धांत आज प्रचलित हैं किन्तु इन सारे सिद्धांतों के पीछे एक सबसे अहम बात होती है वह है 'सेन्स ऑफ ऑडिअन्स', जो मुख्यत: विदूषक इस पात्र की निर्मिती की प्रेरणा रही है, कारण रहा है और इसलिए स्थल, काल संस्कृति, परिवेश तथा सामाजिक स्वरूप के अनुसार इस पात्र के संदर्भ में कई परिवर्तन किए गए और उसे अलग-अलग अभिनेता के रूप में, एक पात्र के रूप मे, ट्रिटमेंट दी गई।

विदूषक यह पात्र निभाना तुलनात्मक दृष्टि से सबसे जटिल कार्य होता है; क्योंकि इसका संबंध हास्य व्यंग की निर्मिती से होता है; इसलिए इस पात्र को संस्कृत रंगभूमि हो, लोकरंगभूमि हो, पाश्चात्य रंगभूमि हो या फिर आधुनिक रंगभूमी हो, उसे महत्त्वपूर्ण माना गया।

संस्कृत नाटकों मे विदूषक :

भरत ने नाट्यशास्त्र मे विदूषक चरित्र को महत्त्वपूर्ण माना है। एक अभिनेता के रूप में उसके अलग-अलग स्वरूप का भी निर्माण किए, उसकी बहुपयोगिता इस चरित्र का विशेष गुण रहा है। कभी उसे वीट, चेट, चेटी, पीठमर्द और विदूषक इन नामों से वर्णित किया गया, तो कभी परिवाश्वक परिहासक, दूत, मित्र, सखा, इन रूप में भी उसे खड़ा किया गया और इन नामों के अनुसार विदूषक को उन पात्रों के अनुसार अभिनय शैली प्रदान की जाती थी। विनोद, हास्यव्यंग, कायम रख उसे चरित्र के अनुसार ढाला जाता था। कई बार उसे गणिकाओं 'वैहासिक' (दलाल) बनना पड़ता था।[4]

संस्कृत नाटकों मे विदूषक इस पात्र को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना गया और इसलिए इन पात्रों को ब्राह्मण ही अभिनीत करते थे किन्तु ब्राह्मण होने के पश्चात् भी नाट्यशास्त्र के संकेतों के अनुसार उसे प्राकृत भाषा में ही बोलना पडता था। शारीरिक व्यंग को पूँजी बनाकर अभिनय में उसका उपयोग किया जाता था।

मूलत: हास्यरस और श्रृंगाररस विदूषक के अभिनय हेतु संस्कृत नाटकों में निश्चित किए गए है; इसलिए इसकी अभिनय शैली का निर्माण भी हास्यरस और श्रृंगार रस से जुड़ा हुआ है। संस्कृत रंगभूमि ने विदूषक के अभिनय हेतु शारीरिक प्रकृति के गुण भी वर्णीत किए है, जो

उसके अभिनय के लिए दिशा दर्शक बनते थे। भाषा के तौर पर प्राकृत भाषा का हास्य व्यंग नियोजित था, जो संस्कृत भाषा में प्राकृत भाषा शैली का भाषिक तौर पर निर्मित हास्य व्यंग की एक उत्कृष्ट मिसाल कही जाती है।[5]

इस प्रकार अभिनय हेतु संस्कृत रंगभूमी मे विदूषक को ट्रीटमेंट दी जाती थी। हास्य और श्रृंगार इस के अलावा गंभीर स्वरूप के विदूषक भी संस्कृत रंगभूमि पर बनाए गए है। ऐसे नाटकों में गंभीर स्वरूप के विदूषकों की अभिनय शैली के लिए अलग 'ट्रीटमेंट' दी जाती थी।

लोक रंगमंच पर विदूषक दशावतारी, ललीत में छड़ीदार, तमाशा में सोंगाड्या, तंजावरी नाटकों मे रायविनोदी, कंचुकीराय, यक्षगान में कोडंगी एवं हनुमनायक, दशावतार मे शंकासुर, दंढार मे विदूषक, भवई में रंगलों या प्रेमसखा, तेलगु यक्षगान मे कटीकबाहु या सुंकरी कोंटूट, भिमताल रामलीला में बद्रीनाथ पांडे, गम्मतीहा, पंचमी में लिंबोळया, रासलीला का मनसुखा, नौटंकी का मखोलीया, ख्याल में हलकारा, आदि लोक रंगमंच के विविध विदूषक हैं। विदूषक के रूप में इनका काम हास्यव्यंग की निर्मिती कर रंजन ही करना है किंतु लोकनाट्य के अनुसार या लोकनाट्य के बदलते रूप के अनुसार अभिनय शैली मे थोडा अंतर होता है। संस्कृत रंगमंच का विदूषक अपने ही संकेतो मे मर्यादित होता था। नाट्यशास्त्र के नियमों से वह बँधा था, किंतु लोकरंगमंच में उसका रूप अधिक मुक्त था; इसलिए यह विदूषक लोगों के अधिक समीप होता है। संस्कृत रंगमंच का विदूषक शास्त्र की उत्पत्ति है; तो लोकरंगमंच का विदूषक लोकप्रकृति एवं लोकप्रवृत्ति की निर्मिती होती है; इसलिए एक अभिनेता के रूप में लोकरंगमंच पर उसे संस्कृत रंगभूमि से अलग किया गया।

लोकरंगमंच ने उसे दर्शक और कलाकार इनके बीच माध्यम बनाया जो संस्कृत के विदूषक की तुलना मे अधिक लोकधर्मी दिखाई देता है, क्योंकि संस्कृत रंगमंच का विदूषक नाट्यधर्मी था और यही उनके अभिनय शैली मे भेद करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण कारण माना जाना चाहिए। लोकरंगमंच का विदूषक केवल हास्यव्यंग निर्माण करना, लोगों को हँसाकर उनका रंजन करना, यही तक सीमित नही है। दर्शकों का प्रबोधन करना, जनजागरण करना, लोगों मे चेतना पैदा करना, समसामायिक प्रश्नों से दर्शकों को अंतरमुख करवाना, यह काम भी यही विदूषक लोकरंगमंच पर करता है; तात्पर्य संस्कृत नाटकों में तत्कालीन संकेतों के अनुसार विदूषककी अभिनय शैली नियंत्रित होती थी, जो उसी प्रकार से उनके अभिनय पद्धति को नियत करती थी, किन्तु लोकरंगमंच पर लोकधर्मी नाट्यपरंपरा के अनुसार लोकधर्मी नाट्यशैली की ट्रीटमेंट विदूषक इस पात्र को दी जाती है। सही मायने में देखा जाय तो विदूषक एक सनातन पात्र हैं, जो नाटक के विधा में परंपरा से चला आ रहा है; किन्तु शास्त्र, लोकमान्यता और समय के साथ होते परिवर्तन के अनुसार उसे दी जाने वाली ट्रीटमेंट भिन्न-भिन्न होती थी; क्योंकि मूलतः यह पात्र ही बहुत लचीला है और इसलिए वह नये नाट्य प्रवाह के साथ वह बदलता रहा। संस्कृत नाटक लोकरंगमंच के बाद तंजावरी नाट्य परम्परा मे भी उसका अस्तित्व कायम रहा है; किंतु यह पात्र दंडधारी राजसेवक के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा, जहाँ उसे दरबारी परम्परा मे अपने कर्तव्य प्रकट करने होते थे। तात्पर्य यह विदूषकी कलाकार को दरबारी परम्परा के अनुसार ट्रिटमेंट दी जाती थी इसलिए अभिनय शैली मे भी तबदीलियां आईं क्योंकि राजदरबारी सेवक की भूमिका विदूषकके चरित्र को नियंत्रित करती है।

पौराणिक नाटकों मे विदूषक, भरत के

नाट्यशास्त्र के अनुसार संस्कृत के विदूषकको शास्त्रगत ट्रिटमेंट दी जाती थी। लोकरंगमंच मे उसका आविष्कार अधिक विमुक्त, अधिक लचिला और लोकधर्मी था।[6] तंजावरी नाटकों मे उसकी पहिली भूमिका राजसेवक के रूप मे थी और इसलिए इन निकषों के अनुसार, इन आवशकताओं के अनुसार उसे उस अनुरूप ट्रीटमेंट दी जाती थी। पौराणिक नाटकों मे उसे नाटक कंपनी के एक सेवक या कर्मचारी के रूप मे काम करना पडता था। कंपनी के कार्यालय की देखभाल करना, कुर्सियाँ उठाना, प्रौम्टिंग करना, अगर दर्शक बोरियत महसूस करने लगे तो उन्हे हँसाने के लिए बगैर कारण के रंगमंच पर अपने कर्तब दिखाना यह कार्य करने पड़ते थे। पौराणिक नाटकों मे उसे लोकरंजन के साथ अन्य कई भूमिकाएं भी निभानी पडती थीं। इन नाटकों मे उसकी भूमिका विदूषक से ज्यादा जोकर या Entertainer की होती थी; किंतु कुछ सालों बाद नाटक को गति देने वाला पात्र, नाटक को अधिक मनोरंजक करने वाला पात्र, इस रूप मे उसका विकास हुआ और वह एक संकेत या पात्र न रहकर एक चरित्र बन गया। लोकरंगमंच के विदूषक के माध्यम से हास्य व्यंग के दर्जे में सुधार हुआ। हास्य व्यंग को एक नई दिशा मिली, हास्य व्यंग को नया अर्थ देने की प्रक्रिया के साथ ही पारंपरिक संस्कृत नाटक के विदूषक को ढाचाबद्ध स्थितिओं से बाहर निकाला; वेशभूषा, रंगभूषा मे भी सुधार हुआ।

मराठी रंगभूमि एक नये आधुनिक विदूषककी रचना सर्व प्रथम सामाजिकता के जनक महात्मा फुले ने अपने नाटक तृतीय रत्न में की। पारंपरिक पौराणिक नाटकों के सूत्रधार को अनुसरण करने के बजाय उन्होंने एक नया सूत्रधार अपने में खड़ा किया जो हास्य व्यंग तो करता है, परंतु साथ ही वह सामाजिक विषमता का दर्शन करवा कर उस पर कड़ा प्रहार भी करता है। सबसे विशेष बात यह रही है कि यहां विदूषक सूत्रधार के रूप मे अभिनित किया गया है और इसकी एक और विशेषता यह है कि स्वयम् इस विदूषक की भूमिका मे महात्मा ज्योतिराव फुले ने अपने आप को प्रस्तुत किया है, इसलिए इस नाटक के विदूषक इस चरित्र को फुले ने अपनी कलम से एक नई ट्रीटमेंट दी है, जो चली आ रही परंपरा से विपरीत है। मानवी जीवनक्रम के विकास मे जो स्थान होमोसेपिअन और नियांडर थल इन समझदार, होशियार मानव का था, वही पारंपरिक विदूषककी परंपरा मे फुले के विदूषक का है। फुले द्वारा निर्मित विदूषक का चरित्र एक होशियार एवं समझदार विदूषक का था। इसके पीछे ज्योतिराव फुले की अपनी एक सामाजिक भूमिका थी और एक वैचारिक पार्श्वभूमि भी, इसलिए इस विदूषक को फुले ने एक अलग ट्रिटमेंट दी। पौराणिक नाटकों मे मर्कट या वनचर इस स्वरूप तक विकसित हुए विदूषकके प्रारूप मे तब्दीलिया होती गईं। विदूषक का पात्र कुछ लेखको ने प्रतिकात्मक रूप से प्रस्तुत किए। उदाहरण के तौर पर सन् 1939 मे के.सी. ठाकरे ने अपने 'टाकलेले पोरं' इस मराठी नाटक में हिरडा, बेहड़ा, आवलकंठी यह प्रतिकात्मक आयुर्वेदिक औषधिओं के पात्र विदूषक के रूप मे प्रस्तुत किए। उसके पूर्व सन् 1922 मे ना. भी. कुलकर्णी ने 'डाव जिंकला' इस मराठी नाटक में महाभारत के एक खलनायक शकुनी मामा को विदूषक बनाया। सन् 1924 मे क.कृ. जोशी ने 'संगीत बंधुप्रेम' इस मराठी नाटक मे शंभुक को विदूषक के रूप में प्रस्तुत किया। उन पात्रों के प्रतिमाओं के अनुसार विदूषकी ढांचे मे परिवर्तन किए गए; उसके पश्चात् कुछ नाटककारों ने विदूषक को पात्र और चरित्र नही अपितु प्रवृत्ति के रूप मे प्रस्तुत किया। नब्बे के दशक में प्रेमानंद गज्वी द्वारा लिखित 'गांधी आंबेडकर' इस नाटक मे और एक नये विदूषक की रचना की,

जो सभी परम्परागत विदूषकों से रूप-स्वरूप प्रवृत्ति और प्रकृति से भी मिलता था और इसलिए इस नाटक के निर्देशक ने लेखक की एक अलग विदूषकके निर्मिती को एक अलग ढंग से ट्रीटमेंट देकर एक नये विदूषक के परिमाण को प्रस्तुत किया। मराठी रंगमंच के लोकनागर एवं आधुनिक लोकनाट्य के प्रवाह मे विदूषक के कई भिन्न-भिन्न रूप सामने आते गये। मराठी लोकनाट्य तमाशा स्वरूप के अनुसार उसकी रचना की गई। यह पात्र तमाशा की जान होती है; इतना ही नहीं तमाशा की सफलता भी इसी पात्र पर निर्भर होती है। केवल मनोविश्रांति के लिए ही नही अपितु मनोचेतना के लिए विदूषक काम करता है। तमाशा का 'सोंगाड्या' यह पात्र तो तमाशा का आज हुकुम का इक्का है। बतावणी मे वह वर्तमानकालीन प्रश्नोपर टिप्पणी करता है। अब यह विदूषक केवल कर्मट, वनचर, शारीरिक विकृति वाला, कहां काम करने वाला नही रहा अपितु चतुर, मर्मज्ञ, ज्ञानी, हरहुन्नरी, हाजिरजवाबी, अभ्यासु हो गया है। लोकनाट्य का सोंगाड्या यह सही मायने मे व्यवहार पंडित होता है, वह भाषा प्रभु भी होता है। उपरोध, उपहास, विंडबन, वक्रोक्ति, व्याजोक्ति, तथा व्याजस्तूति इनके द्वारा वह वास्तव का मर्मग्राही चित्रण हास्यकारक ढंग से प्रस्तुत करता है। मनोरंजन के साथ प्रबोधन उसका निहित उद्देश होता है। सोंगाड्या यह पारंपरिक विदूषक का एक परावर्तित और उन्नत रूप है। शब्दनिष्ठ हास्य व्यंग तथा स्वभावनिष्ट हास्य व्यंग के माध्यम से इस चरित्र को अलग ट्रिटमेंट मिली है। इसके अलावा महाराष्ट्र में सत्यशोधक जलसा एवं आंबेडकरी जलसा भी मनोरंजन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है। यह माध्यम विज्ञानवादी, विवेकवादी, निरीश्वरवादी होने के कारण पारंपरिक विदूषक को परिष्कृत कर नये विदूषकों की रचना जलसों मे हुई है। ईश्वर के पात्रों को नकार तथा स्त्री पात्रों की विंडबनाओं को नकार इस वजह से विदूषक से संबंधित ऐसे दृष्य जलसा में प्रस्तुत होते रहे, किन्तु रंजन के साथ सामाजिक चेतना जगानेवाला विदूषक कभी, सूत्रधार कभी, सोंगाड्या तो कभी विचार विवेक रूपी पात्र प्रस्तुत किए जाते रहे। फुले आंबेडकरी विचार धारा के प्रचार एवं प्रसार के लिए उचित तथा समर्थक पात्र की रचना जलसो मे की गई। यहां एक विचारधारा को पार्श्वभूमि होने के कारण तथा लोक प्रबोधन यह उद्देश होने के कारण इस पात्र को उसी प्रकार की ट्रीटमेंट दी जाती रही। जब स्त्री विदूषक की भूमिका निभाती है, तब उसकी भिन्नता कुछ अलग ढंग से दिखाई देती है। तमाशा मे मावशी नाम का एक विदूषक सदृश्य ही पात्र होता है और यह पात्र सोंगाड्या ही अभिनित करता है। एक पुरूष द्वारा स्त्री का पात्र मंचित करना अपने आप मे ही एक हास्यव्यंग का कारण बन जाता है, क्योंकि यह पात्र अर्धनारी, अर्धपुरूष के स्वरूप होता है। मराठी रंगमंच पर प्रारंभिक काल मे देवदासी महिलाओ द्वार मंचित नाटकों मे महिलाए ही विदूषक का चरित्र प्रस्तुत करती थीं और वह स्त्रीरूप मे पुरूष रूप का स्वांग रचती थीं। महिला विदूषक होने के कारण अपने आप में एक नये अभिनय शैली का निर्माण होता था। आधुनिक मराठी रंगमंच पर प्रेमानंद गज्वी द्वारा लिखित 'गांधी-आंबेडकर' नाटक में स्त्री विदूषक की रचना की गई। यह विदूषक के बदलते परिमाणों का एक प्रतिकरूप था। प्रस्तुत शोध पत्र में लेखिका ने भी अपने 'मी... माझे... अन.. मन' इस नाटक में 'मन' यह चरित्र भी स्त्री विदूषक द्वारा प्रस्तुत किया है। तात्पर्य जब विदूषक यह पात्र या चरित्र, स्त्री द्वारा अभिनित किया जाता है, तब उसके प्रस्तुति मे निश्चित ही भिन्नता दिखाई देती है। महिला तो वो है ही किंतु बदलते स्वरूप के अनुसार विदूषक यह संज्ञा न पुलिंगी रही ना स्त्रीलिंगी अपितु वह उभयलिंगी

बन गई है। यह आधुनिक परिवेश में आधुनिक नाटककारों ने विदूषक के इस चरित्र को दी हुई ट्रीटमेंट है, जिसने विदूषक की इस चरित्र की संकल्पना को व्यापक किया है। विदूषक के इस संकल्पना का भवितव्य देखते पता चलता है के आज यह संकल्पना बदल गयी है।

विदूषक और आधुनिकता :

विदूषक के इस संकल्पना का अभ्यास करते समय यह स्पष्ट होता है कि इस संकल्पना का स्वरूप रंगमंच के आसपास ही सीमित नहीं है अपितु वैद्यकीय क्षेत्र मे भी अपनी जड़े फैला रहा है। विदूषक के इस संकल्पना का आधुनिक रूप समझना भी आवशक है। ता. 14 अगस्त 2012 के 'टाइम्स लाइफ' इस अखबार मे आए लेख से मिली जानकारी इस प्रकार है-

'डॉक्टर शायद शारीरिक व्याधि अथवा बीमारी दूर कर सकता है किन्तु MBBS डिग्री के परेह भी हसी की उपचार पद्धती है। जो बीमार व्यक्ति को दिल खोलकर और पागलों की भांति प्रस्तुत होकर हसाते है और उन्हे बीमारी से मुक्त होने मे सहायता करते है। ऐसे विदूषक अथवा विदूषक संकल्पना को 'मेडिकल क्लाउन' इस सज्ञा से संबोधित किया जाता है। इस प्रकार के उपचार यह मानसिक उपचार होते है। बीमारी के कारण आए निराशा से बीमार व्यक्ति को बहार निकालने के लिए और उसकी मानसिक अवस्था ठीक करने हेतु तैयार की हुई यह एक उपचार पद्धती है। मेडिकल क्लाउन यह संकल्पना विशेषरूप से किस क्षेत्र मे कार्य करती है, इस विषय मे अश्वत भट कहते है-

"जो लोग अस्वस्थता से त्रस्त होकर आत्महत्या का विचार करते है अथवा कोई भी कारणवश आत्महत्या का प्रयत्न करते है, ऐसे लोगो को निराशाजन्य परिस्थिति से बहार निकालने हेतु मेडिकल क्लाउन का अस्तित्व प्रस्थापित हुआ है।"

जगविख्यात विदूषकचार्ली चॅप्लिन कहते है-

"To truly laugh, you must be able to take your pain and play with it."

आप अगर अपने दिल से हँसते हैं, तो आप अपने दु:ख पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और इसी के साथ खेल भी सकते हैं, अर्थात यह कह सकते हैं कि, हास्य से बीमारी और नैराश्य के परेह की अवस्था हमें प्राप्त हो सकती है। जहां हम स्वयम्-स्वयम् के साक्षी बनते हैं।

भूतपूर्व बैंक अधिकारी तपस्या दासगुप्ता इन्होंने जब पहलीबार थिएटर गराज प्रोजेक्ट का क्लाउन वर्कशॉप किया तब उन्होने अपना अनुभव इस प्रकार साझा किया-

"मैं पहली बार जब कार्यशाला मे आयी, तब मेरी मानसिक अवस्था ठीक नहीं थी, कारण मेरी माताजी कर्करोग से ग्रस्त थीं। उनका इलाज चल रहा था; मुझे पता था की अब अंत समीप है, लेकिन विदूषकने मुझे सिखाया की आगे बढ़ो, हसो, अपने आप को स्वच्छ करो और जो चाहिए वह पाओ।"

विदूषक संकल्पना मूलत: देवस्वरूप है, जो पामरजीव को जीने की कला सिखाती है और परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना सिखाती है।

दूसरे विद्यार्थी ने बताया -

'I began to think like a child again and the explorer in me was triggered. The mind boggles, when one understand how wild our imagination can be and just how much creative potential we have.'

विदूषकी चेष्टाओं से व्यक्ति बाल्य अवस्था को अनुभव कर सकता है। अपने मन मे छिपी संकल्पना को सांझा करने हेतु आवश्यक खुलेपन को अनुभव कर सकता है। अपने अंदर की क्षमता को समझ सकता है। व्यक्ति को स्वयं को जानने के लिए विदूषक होना अवश्यक है। मेडिकल क्लाउन इस भूमिका मे कार्य करते समय अश्वत भट अपनी

भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-

"अस्पताल यह निराशाजनक वातावरण से भरा होता है; ऐसी परिस्थिति में एक विदूषक के नाते मुझे केवल बीमार व्यक्ति के लिए ही नहीं अपितु वहां के कर्मचारिओं के लिए भी आनंददायी वातावरण की निर्मिती करनी होती है।"

अर्थात् विदूषक के नाते उनका काम दुगुना हो जाता है। कई अभ्यासकों ने कहा है कि, रंगमंचपर हँसना अथवा सार्वजनिक जगह हँसना अथवा हँसाना यह सम्पूर्ण जग मे जटिलकारी माना जाता है। अश्वत भट यह विदूषक के नाते अस्पताल में काम करते हैं, तब उसका अनुभव वह साझा करते हैं, जो इस प्रकार है-

"मेडिकल क्लाउन के नाते काम करते समय बहोत थकान प्रतीत होती है और रोज इसका अभ्यास करना भी संभव नहीं। इसमें आवशकता होती है व्यक्ति की भावना समझकर संवेदनशीलता से उपचार पद्धति करने की।"

मेडिकल क्लाउन के नाते काम करते समय रंगमंच पर जो लचीलापन होता है, वह मर्यादित हो जाता है। रंगमंच पर किसी की भाव-भावनाओं का विचार न करते हुए सामाजिक प्रबोधन खुली आखों से और प्रखरता से कर सकते हैं। मेडिकल क्लाउन के नाते कार्य करते समय बीमार व्यक्ति की भाव-भावना को संजोकर केवल उन्हें आनंद प्रदान करना इतना केवल एक मार्ग स्वीकारना होता है। इस ढ़ाँचे मे काम करते समय सहज ही लचीलेपन को जकड़न प्रतीत होकर थकान आती होगी।

बेंगलुरु के संजय बलसावर और उनका दल 'kidwai Memorial Institute of Oncology and Colombia Asia.' इस अस्पताल मे क्लाउन डॉक्टर के नाते कार्यरत हैं। Snt. Philomena`s hospital मे Neonatologist and Paediatrician डॉ. अर्चना बिलागी कहती हैं- Children come here with a lot of anguish, suffering and their parents are naturally very anxious and depressed. When someone comes along and makes them smile, they forget what they are here for and feel happy.'

अपना दु:ख भुलाने का सबसे रामबाण इलाज अर्थात् हास्य है। विदूषक यह पात्र हास्य निर्मिती की दृष्टि से तैयार किया हुआ पात्र है। आज यह संकल्पना अवश्कता बन गयी है।

इस आधुनिक और भागदौड़ भरी जिंदगी मे विदूषक इस संकल्पना का प्रयोग वैद्यकीय उपचार के रूप मे होने लगा है।

आज विदूषक की यह संकल्पना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी वैद्यकीय उपचार उपक्रम मे सहभागी है जिसमें जर्मनी की संस्था 'क्लाउन विदाउट बार्डर' (CWB) जो समाजकार्य विदूषक के माध्यम से कर रही है।

"हम समकालीन विदूषक प्रस्तुतीकरण करते हैं। कारण अन्य लोग भी हमारे साथ उत्सव मना सकते हैं। बदलते स्वरूप का विचार करें तो, आधुनिक युग मे समकालीन संदर्भ और परिवेश के साथ प्रस्तुतिकरण यह समय की मांग को पहचानकर प्रस्तुतीकरण को महत्व प्राप्त हुआ, जिस कारण सामान्य जनता भी प्रस्तुतीकरण मे सहभागी हो सकते है।"

इस संस्था मे काम करने वाले विदूषक यह विनामूल्य सेवा देते हैं उनके नाम इस प्रकार है।

1) Georgia Huber, 39
2) Alexander sturb, 42
3) chistine Berger, 41
4) Andreas Schantz, 44
5) Stefan knoll, 46
6) Manfred Lehner, 58 (photographer)
7) Herbert Thomas, 42 (Tour Manager) (6 march 2012)

यह पूरा दल जगभ्रमण कर सामाजिक कार्य हास्य उपचार पद्धति से करते हैं।

डी. एन. ए.- 15 जनवरी, 2013 में अखबार में आए एक लेखद्वारा प्राप्त जानकारी इस प्रकार है- "जिस प्रकार उपचार पद्धति मे विदूषक इस संकल्पना का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है, उसी प्रकार महाविद्यालय के स्तर पर भी विदूषक इस संकल्पना का जागृति हेतु The East India Comedy इस संस्था द्वारा पूर्व परीक्षा आयोजित की गयी और हास्यनिर्मिती करने मे यशस्वी हुए विद्यार्थियों को बी.कॉम. (बॅचलर ऑफ कॉमेडी) यह डिग्री भविष्य मे प्रदान की जाएगी।" इसमे कुछ नियम और पुरस्कार भी थे जो इस प्रकार है-

"while one act will talk about Pick-up lines abroad, another will be on chartered accountants asking for direction. The winner of the show will walk away with a two month comedy contract with the East India co-medy, while other will get cash prizes, college pride and cheap, card-board certificates."

विदूषक यह संकल्पना सामान्य जनता के दिलो में बसाने के लिए, महाविद्यालय के स्तर पर कार्य आरंभ हो गया है। आज के समय मे विदूषक का महत्व बढ़ता दिखाई देता है। सम्मी सुगार और समीर खुल्लर यह कनाडा मे स्थित भारतीय, स्टीरिओटाइप्स अर्थात रूढ़िवादी हास्य निर्मितिकार हैं; जिन्होने 30 विविध देशो मे 1000 से अधिक प्रयोग किए हैं।

डी. एन. ए.- 21 सितंबर, 2011 के अखबार मे प्रस्तुत लेखानुसार विदूषकी कार्य अत्यंत गंभीर स्वरूप का है-

"किसी को भी हँसाना यह एक गंभीरता से करने का कार्य है; यह अधोरेखित करते समय जब क्लाउन इस संकल्पना को जोकर इस संकल्पना से जोड़ा गया, तब दोहरी छानबीन अथवा द्विधा स्वरूप प्राप्त होता है।"

विदूषक की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति अथवा अभिनेता यह गंभीरतापूर्वक विचार करनेवाला होना चाहिए। विदूषक केवल हँसाता ही नहीं अपितु आनंद भी प्रदान करता है। विदूषक जिस प्रकार हास्य निर्माण करता है, उसी प्रकार शिक्षा भी प्रदान करता है। असम मे स्थित एक शहर ॲब्रोकोट इस जगह श्री प्राणबज्योति हीरु नामक एक कलाकार विदूषकवेश धारण कर बच्चों के लिए योगाभ्यास मे रुचि बढ़ाने का एवं जागृति करने का कार्य करते हैं। बच्चों को योगासन सिखाते हैं और भीड़ की जगह जाकर लोगो को प्रबोधन देने का कार्य भी करते है।

अभीतक हमने विदूषक की इस संकल्पना के अभिनय और कर्तव्य इस विषय पर चर्चा की। इस के परे जाकर विदूषक इस संकल्पना की महती अर्थात् उसके हास्य की चर्चा करना अवश्यक है। बॉम्बे टाइम्स ता॰ 6 सितंबर, 2013 इस अखबार मे प्रस्तुत लेख के आधार पर जानकारी इस प्रकार है-

"'जोकर स्माइल सर्जरी' यह एक नया कक्ष प्रगतिपथ पर है। इसमें होठों के कोने काटकर ऊपर की दिशा में उठा कर सील दिए जाते है, जिससे उस व्यक्ति की स्माइल जोकर जैसी लगे। बॉलीवुड की कई जानीमानी अभिनेत्रिओं ने यह सर्जरी कारवाई है।"

विदूषक यह रंगमंच से वैद्यकीय उपचार की ओर बढ़ा। इससे पहले वह सर्कस जैसे मजेदार खेल में दिखाई दिया; जिसमे प्राणियों के खेल, विदूषक का खिलखिलाकर हँसना, जादू के खेल और दिल दहला देनेवाले स्टंट; ऐसी सर्कस की यात्रा होती है, जो विदूषक के बिना अधूरी सी होती है। मनोरंजन क्षेत्र का विचार करते समय सर्वप्रथम दर्शक के रूप में सामने आते हैं 'बालक' और पालनकर्ता दुय्यम स्थान पर होता है।

ऐसे इस अफलातून सर्कस कला को भी अवरोही कुंजियों को झेलना पड़ा। सर्कस के तम्बू के लिए मैदानों की कमी, मनोरंजन के अनेक साधन होने

के कारण सर्कस का आकर्षण कम होना स्वाभाविक है। मैदान यह सर्कस के लिए गंभीर कारण न बने इस हेतु से पृथ्वी थिएटर की संचालक संजनाजी कपूर इन्होने सर्कस को पृथ्वी थिएटर में आयोजित करने का संकल्प लिया और 3 जून, 2012 में पूरे चार खेल पृथ्वी थिएटर में आयोजित किए गए; जिसमें उन्हे दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

विदूषक यह संकल्पना भरत का नाट्यशास्त्र, लोककला, लोकरंगभूमि, मराठी रंगभूमि यहां तक ही सीमित नहीं है अपितु इस संकल्पना की कक्षा और भी विस्तृत है। यह संकल्पना अब एक वैद्यकीय उपचार पद्धति के रूप में अपना अस्तित्व प्रकट करना चाहती है। कला से विज्ञान की ओर ऐसी विदूषक संकल्पना की यात्रा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. केतकर, गोदावरी, भरतमुनीचे नाट्यशास्त्र, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, दूसरा संस्करण, 1963, पृष्ठ 25
2. जोशी, महादेवशास्त्री, भारतीय संस्कृती कोश, खंड आठवा, भारतीय संस्कृति कोश मंडळ, पुणे, चतुर्थ संस्करण, 2004, पृष्ठे 693, 694
3. शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल, भरतमुनी प्रणीत हिन्दी नाट्यशास्त्र, भाग 4, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2001, पृष्ठे 498,499
4. भट, गोविंद केशव, विदूषक संशोधनात्मक आणि विवेचक प्रबंध, महाराष्ट्र ग्रंथ भंडार, कोल्हापुर, प्रथम संस्करण, 1959, पृष्ठ -100
5. कालिदास महाकविकृत (प्रा. राम शेवाळकर), अभिज्ञान शाकुंतलम्, प्रसाद प्रकाशन, पुणे, प्रथम संस्करण, शके 1916
6. पाडुरंग आणि अण्णासाहेब किर्लोस्कर, संगीत सौभद्र, बळवंत पुस्तक भांडार, मुंबई 1883, प्रथम संस्करण, अंक दूसरा, पृष्ठ 49, 50

सहायक प्राध्यापक,
लोककला अकादमी,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

6

INDIA AND CENTRAL ASIA : COOPERATION FOR REGIONAL SECURITY AND STABILITY

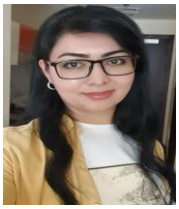

Tuychiyeva Rano Almamatovna

ANNOTATION

This article describes the history of India's cooperation with the countries of Central Asia, the main factors that led to its development or decline, as well as the current state of bilateral relations. The study focuses on data and analysis of areas of security and stability in interregional relations.

Keywords: India, Central Asia, regional security, stability, defense system, bilateral and multilateral relations, border issues, Afghan problem and etc.

INTRODUCTION

The countries of the region are pursuing an active foreign policy to achieve peace and sustainable development in Central Asia. Making Central Asia a zone of peace and good neighborliness has also been identified as a priority of Uzbekistan's foreign policy. At a time when today's sources of global threat are increasing, ensuring security in Central Asia has become one of the most important tasks facing the countries of the region. Areas of trade and economic, transport and transit-logistics, security and stability, completion of issues related to state borders, fair use of water resources, strengthening cultural and humanitarian ties, friendship and good neighborly relations between nations are being developed between the two countries.

The Action Strategy for the five priority areas of development of the Republic of Uzbekistan for 2017-2021, adopted by the President of the Republic of Uzbekistan, states that the formation of security, stability and good neighborliness around Uzbekistan is a priority of our foreign policy in the near and medium term. and increased efficiency. In recent years, we have witnessed the growing geopolitical and geostrategic importance of the Central Asian region, its significant mineral and raw material resources, and the conflict of strategic interests of the world's major powers in the region.

Territorial security problems in the Central Asian subregion, as well as around the world, are characterized by terrorism, extremism, proliferation of weapons of mass destruction, drug trafficking, environmental degradation, global warming, deforestation, pandemic outbreaks and other threats. The risk of wars over the distribution of water resources is also growing. Additionally, the countries of the region have not yet been able to find adequate answers to many old and new problems of an internal, endogenous nature. These include domestic political and socio-economic instability, inter-ethnic tensions, conflicts between regional elites and government structures, poverty, widening income gaps and growing social imbalances, high youth unemployment, rampant corruption, low efficiency, willingness to raise its head in

the face of any political instability, and active use of social problems to discredit secular ruling regimes such as radical Islamism, drug trafficking, and the rise of religious extremism are emerging as major threats to regional security today.

The geopolitical features of Central Asia encourage the world powers to cooperate with the countries of the region, both in terms of developing their economic ties and militarily and strategically. Despite the fact that the region is located at the crossroads of Afghanistan, Pakistan, Iran and other Asian countries, creating instability for the region, the development of cooperation with the republics of this region is expected to provide other Asian countries with important guarantees for global and regional security.

Don MichaelLein Gill describes the efforts made by states to connect with Central Asia, calling this a clear manifestation of Helford McKinder's Heartland theory. According to him, the Heartland is a very important geographical area, whoever takes control of this region will be able to control the rest of the world. If we look at the Heartland theory and the maps provided by Mackinder, the Central Asian region is at the very center of the Heartland. In addition, McKinder's "Geographical Turn Point of History" clearly describes the strategies for entering and influencing Central Asia in international affairs and the benefits that can be seen from it[1].

METHODS AND ANALYSIS

In particular, India's relations with Central Asia date back to the ancient millennia, and in recent years, countries have exchanged ideas, cultures and goods through the Silk Road. With the collapse of the Silk Road, the beginning of the European "era of discoveries," as well as the growing influence of the Russian and Chinese empires on Central Asia, the region fell short of India's strategic vision for some time. During the British Empire's "Great Game" of the 19th century, India's foreign relations were largely limited to areas bordering modern Central Asia[2]. After India gained independence, the country's foreign policy was mainly focused on solidarity with its close neighbors, major powers in the international system, and other African-Asian colonies. Thanks to the country's strong diplomatic, defense and economic cooperation with the Soviet Union, warm relations between India and Central Asia began to be restored. In the 1990s, when the five Central Asian republics of Kazakhstan, Kyrgyzstan, Tajikistan, Turkmenistan and Uzbekistan gained independence, India was faced with challenges such as adapting to the post-Cold War international order and domestic economic reforms. Over the decades since then, India's relations with the region have developed slowly, despite having a number of advantages.

According to Frederick Starr, after the collapse of the former Soviet Union, border weakness, political instability and economic hardships paved the way for the spread of terrorist groups in the CA republics. New Delhi, on the other hand,

[1] **Don McLain Gill. India Needs a "China Strategy" in Central Asia. 2020. https://www.geopoliticalmonitor.com/india-needs-a-china-strategy-in-central-asia/**

[2] Peter Hopkirk, The Great Game: On Secret Service in High Asia. John Murray, London, 2006.

was also concerned that neighboring countries were supporting extremist groups, as this would also pose a direct threat to India's national security, especially as the Kashmir problem deepens. Moreover, India was in the process of consolidating its geopolitical position in the international arena. This, in turn, required the country to join international efforts to address global issues such as terrorism and religious conflicts[3].

Ayjaz Wani, on the other hand, although Pakistan was the first to recognize the independence of the CA states and established diplomatic relations with them, has lagged far behind India in the development of bilateral relations in recent years. One of the main reasons for this is that the CA states have expressed distrust of Pakistan because of its role in supporting the movement of terrorist groups[4].

As India began to adapt to the post-Cold War regime, its foreign policy developed and focused on relations with India's "neighboring neighborhood," including Central Asia. Former Indian Prime Minister Narasimha Rao, who visited the region four times in the 1990s, in addition to agreements between the parties to expand trade, investment and aid to the region, stressed common threats - religious fundamentalism, ethnic chauvinism, terrorism, drugs, violence and crime - must be tackled together[5].

The current serious threats to India in the region were exacerbated by the Taliban's takeover of control of Afghanistan in 1996, the crossing of the India-Pakistan nuclear threshold in 1998, and the growing American and Chinese influence in Central Asia. Over the next decade, as India's economy grew, its demand for energy and the need to diversify resources outside the Gulf increased. During this period, Central Asia also sought to provide energy to rapidly developing countries in Asia, such as India and China, to eliminate their dependence on pipelines passing through Russia. However, the existence of serious financial, political, security and technical constraints between India and the region, the difficulty of communication by any planned means, has frustrated oil and gas diplomacy. For example, the Turkmenistan-Afghanistan-Pakistan-India (TAPI) project, supported by the Asian Development Bank (ADB), was proposed in the mid-1990s, but the intergovernmental agreement was officially signed in 2010. In the ensuing period, instability in Afghanistan and the situation between India and Pakistan came to a halt again[6].

[3]S. Frederick Starr. Reconnecting India and Central Asia Emerging Security and Economic Dimensions. Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program – A Joint Transatlantic Research and Policy Center. 2010. Pp.8-10

[4]Ayjaz Wani. India and China in Central Asia: Understanding the new rivalry in the heart of Eurasia. Observer research foundation. 2020. https://www.orfonline.org/research/india-and-china-in-central-asia-understanding

[5]Emilian Kavalski, 'India's Bifurcated Look to "Central Eurasia": The Central Asian Republics and Afghanistan', in David Malone, C. Raja Mohan and Srinath Raghavan (eds), The Oxford Handbook of Indian Foreign Policy. Oxford University Press, New Delhi, 2015, pp. 424-437.

[6]Angira Sen Sharma, 'Uncertainty Still Looms

However, it can be said that in 2001-2010, India's relations with the CA republics reached a new level. Since the early 2000s, India has traditionally expanded the supply of pharmaceuticals, tea, clothing, leather goods, cosmetics, cotton fiber, textiles, rice, electronics, fertilizers and more. New Delhi has begun to become one of the largest trading partners in the region. The trade volume between India and CA reached $ 500 million. However, there are some issues that hinder the further development of this sector, the main of which was the problem of trade routes. India, for its part, has based its demand on natural gas and energy resources in the negotiations (over the past 30 years, India has become one of the world's largest consumers of energy. In 2002 alone, it consumed 26 billion cubic meters of natural gas. the figure reached 37 billion cubic meters, and in 2010 it reached 51 billion cubic meters[7]). Therefore, India's relations with the Central Asian states, which are rich in energy resources, have become important both geostrategically and economically.

In 2002 alone, India signed more than a dozen trade agreements with the CA republics. The region has also become one of the world's strategic zones where the interests of Russia, China and a number of major Middle Eastern countries intersect politically. In addition, the region has emerged as a region rich in oil, natural gas, gold, copper, aluminum, iron and other important natural resources. The geographical proximity of foreign players such as Russia, China, the United States, and even Afghanistan and Pakistan has had a significant impact on India's bilateral relations in the CA. The phrase "New games in Central Asia" soon appeared in the analysis of the world's major politicians[8].

Regional competition was mixed with religious radicalism and terrorism. This has led to a climate of mistrust in South Asia towards the CA. At the same time, the moderate movement of Turkey in the MO, the radical actions of Iran and Saudi Arabia, the support of the Taliban movement in Afghanistan by Pakistan and its direct threat to the CA began to negatively affect the development of India-Central Asia relations. Nirmala Joshi noted that India's efforts to strengthen relations with Central Asia over the years have strengthened its domestic political-strategic, economic, peace and security system on the basis of "expanded neighborhood", joint solution to terrorism and Afghanistan, strengthening its energy supply and trade and economic ties. was done according to their development needs[9].

Large Over TAPI', Indian Council of World Affairs, September 28, 2012, https://icwa.in/pdfs/IBunsertanitystill.pdf

[7]Central Asia Atlas Of Natural Resources. Central Asian Countries Initiative for Land Management Asian Development Bank Manila, Philippines 2010. Pp.38

[8]Ayjaz Wani. India and China in Central Asia: Understanding the new rivalry in the heart of Eurasia. Observer research foundation. 2020. Pp. 3-4. https://www.orfonline.org/research/india-and-china-in-central-asia-understanding

[9]Nirmala Joshi. Reconnecting India and Central Asia Emerging Security and Economic Dimensions. Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program – A Joint Transatlantic Research and Policy Center.

As a result of attempts to increase its influence in the CA, the Russia-China-India triangle emerged in the region in the 2000s, writes Don MichaelLein Gill. During a visit to New Delhi in February 2002, former Russian Foreign Minister Igor Ivanov noted that "the development of this triangle in the CA region is slow but steady"[10]. India's influence in the CA has grown from year to year, and it has also relied on its historically close friend Russia in its activities in the region. In particular, in July 2002, a joint Indo-Russian Working Group was established, which aims to take practical measures to combat terrorism, religious extremism and organized crime in Uzbekistan and Afghanistan.

In April 2002, during the official visit of the Minister of Defense of India to Tajikistan, an agreement was signed on the construction of an Indian military base in Farkhor. This military base was also of great importance to Pakistan (Pakistan is very close to Tajikistan, separated only by the Vahan corridor, which belongs to Afghanistan). According to the agreement of the three countries (India, Pakistan and Tajikistan), the military base will operate without compromising its national security, taking into account the sovereignty of Tajikistan[11].

RESULTS AND DISCUSSIONS

Rhea Menon and Sharanya Rajiv focused on India-Kazakhstan relations, noting that the two countries have been actively visiting each other since 2001, mainly on security and countering modern threats in the region. they write. The main tasks in the fight against bilateral military-technical and international terrorism are reflected in the Memorandum of Military-Technical Cooperation signed between the Governments of the Republic of Kazakhstan and the Republic of India[12]. At a 2003 meeting of the two countries' defense ministers, former Indian Defense Minister George Fernandez said: "... we will focus on counter-terrorism in our cooperation. That is what the current situation demands. " After that, the India-Kazakhstan Joint Counter-Terrorism Working Group was established and active practical work was launched[13]. At the initiative of Kazakhstan, the Conference on Interaction and Confidence Building Measures in Asia was established, which includes not only India and Kazakhstan, but also Kyrgyzstan, Tajikistan, Uzbekistan, Afghanistan and Pakistan.

The Indian strategy aimed at strengthening military-technical and military-political influence in the region has remained strong in recent years. India has been actively involved in the construction and equipping of hospitals for Tajik servicemen. He initiated the opening of a joint high-level military research center in neighboring Kyrgyzstan and the

2010. Pp.15-17

[10]Don McLain Gill. India Needs a "China Strategy" in Central Asia. 2020. https://www.geopoliticalmonitor.com/india-needs-a-china-strategy-in-central-asia/

[11]Вызовы безопасности в Центральной Азии /Ин-т мировой экономики и междунар. Отношений РАН; Фонд перспективных исследований и инициатив и др.; отв. ред. И.Я. Кобринская. – М.: ИМЭМО РАН, 2013. – 148 с.

[12]Rhea Menon, Sharanya Rajiv. Realizing India's Strategic Interests in Central Asia. December 01, 2019 https://Carnegieindia.Org/2019/12/01/Realizing-India-S-Strategic-Interests-In-Central-Asia

[13]Roman Muzalevsky. Unlocking India's Strategic Potential In Central Asia. Strategic Studies Institute and U.S. Army War College Press, 2015. Pp. 18.

organization of training for Kyrgyz soldiers to serve in UN peacekeeping missions. According to Ayjaz Wani, India has also found a good language with Uzbekistan on security issues. At the same time, India's resentment and desire to fight extremist religious organizations in Pakistan, which is trying to spread religious extremism on its territory, has helped India[14].

It should be noted that by this time, terrorist groups threatening Central Asia from Afghanistan and Pakistan began to have an equally dangerous impact on India. Despite India's growing military-political influence in the region and high-level propaganda on instability in Afghanistan and Pakistan, it has had a more "soft" foreign policy relationship with the CA than its other foreign partners. Roman Muzalevsky concludes in his research that "... that is why India could not compare itself not only with the Russians, Chinese and Americans, but also with the European Union, Iran and Turkey as a competitor in the CA region ..." [15].

Today, efforts to reconnect New Delhi with the region are starting anew. Over the past decade, Central Asian states have been looking for practical partners, especially in the economic and security spheres. Both sides are interested in combating radicalization and terrorism, curbing illegal trade and exploring opportunities for economic cooperation. India's deep ties with the region provide an excellent environment for both sides to take advantage of existing opportunities and find new and innovative ways to develop current cooperation. India has also explored the possibility of connecting to Central Asia through Iran's Chabahar port and land corridors through Afghanistan, and agreements on the project have been signed.

The first India-Central Asia Dialogue, held in Bishkek in June 2012, was an important step for the country in establishing long-term cooperation with the region. The main purpose of this conference is to hold an annual forum of conversations between academics, scientists, government officials and businessmen in India and CA, as well as to jointly build universities, hospitals, information technology centers and their electronic networks in the CA area, develop mutual trade and tourism. improvement of air communication, organization of joint scientific research, strategic partnership on defense and security issues and reaching new agreements in a number of other areas. At the conference, former Indian Foreign Minister Edapakat Ahmad also announced the "Linking to Central Asia" project, which sets out India's strategy in Central Asia. Within the framework of this project, work has been started on the construction and improvement of modern hospitals, universities, information technology and electronic site development centers.

In addition to the economy, regional security issues in Central Asia are among the main concerns of India in the region, and their relevance is growing day by day. The rise of Islamic radicalization has

[14]Ayjaz Wani. India and China in Central Asia: Understanding the new rivalry in the heart of Eurasia. Observer research foundation. 2020. https://www.orfonline.org/research/india-and-china-in-central-asia-understanding

[15]Roman Muzalevsky. Unlocking India's Strategic Potential In Central Asia. Strategic Studies Institute and U.S. Army War College Press, 2015. Pp. 67.

become a major security issue for regional governments. It is estimated that between 2,000 and 4,000 Central Asian terrorists migrated to join the group after the start of the civil war in Syria and the emergence of the Islamic State (ISIS). In addition to men in the region, who make up 5-10 percent of foreign fighters, these migrants include families, especially women and children[16]. Given the experience of successfully pursuing ISIS domestically and limiting its influence, India's plan for Central Asia also includes the fight against terrorism and radicalization. In addition, India has expanded its civil nuclear cooperation with the region to secure energy interests[17].

Over the past period, factors such as the US presence in Afghanistan, the deep-rooted religious extremism and terrorism in Pakistan, and China's growing influence in Central Asia have created a number of problems and obstacles in the development of Central-South Asian relations. In particular, three main factors of conflict - the Kashmir issue, the situation in Afghanistan and instability in the Xinjiang region - have had a significant impact on the definition of trends and relations in the Central Asia-India direction. The escalation of problems such as terrorism, religious extremism, drug trafficking, border conflicts, cyber threats, illegal migration and human trafficking, which revolve around such major conflicts, has exacerbated the security situation in the two regions.

In particular, Mezb-i-Harak-Jihad, Dukdas-al-Irshad, and other non-governmental religious extremist organizations operating in Pakistan conduct various trainings every year that call on more than 100 young people from Central Asian countries to carry out terrorist attacks. by organizing courses and carrying out their destructive propaganda work. In particular, over the past few years, Uzbekistan has established strong ties with terrorist forces in Pakistan and has been fighting insurgents in the southern part of the country bordering Afghanistan, which has become a hotbed of terrorism. Drug trafficking, which is inextricably linked to terrorism, is also one of the most pressing issues facing the region.

The growing level of danger of the problem for Central Asia can be seen in the position of the countries of the region in the Asian ranking of drug exports and imports[18]. The amount of drugs entering Uzbekistan from Afghanistan has increased by 11% over the past five years. About 50-65% of black drugs exported from Afghanistan are transported through the Central Asian republics. Today, drug trafficking is also booming in India and Pakistan, and clandestine groups working

[16]Edward Lemon, Vera Mironova, and William Tobey, 'Jihadists from Ex-Soviet Central Asia: Where are They? Why Did They Radicalize? What Next?', Russia Matters, 7 December 2018, https://www.russiamatters.org/analysis/jihadists-ex-soviet-central-asia-where-are-they-why-did-they-radicalize-what-next

[17]Rikar Hussein and Asim Kashgarian, 'Analysts: Central Asin States Must Learn From IS-Linked Citizens', Voice of America, 17 June 2019, https://www.voanews.com/extremismwatch/analysts-central-asian-states-mustlearn-linked-citizens

[18]https://www.unodc.org/unodc/en/data-and-analysis/wdr2021.html

in the field are able to find permanent partners in CA countries. As a result, drug-related crime is on the rise across a very large network. Attempts to commit prohibited crimes due to the large amount of profits from them are leading to an increase in corruption and economic imbalances in countries[19].

Historically, Afghanistan has actually been a bridge to CA for India. During the country's stabilization, India's trade and economic ties with Afghanistan have been strengthened, and Kabul has been a good bridge to further expand ties with the CA countries. While there is significant cooperation in the trade, economic, political, cultural and social fields, New Delhi has primarily sought to strengthen energy cooperation with the CA to meet its growing energy needs. But the future of the initiatives will depend on what political and security scenarios emerge in Afghanistan in the coming years. Most importantly, all countries should take political initiatives to minimize the conflicting features of regional policy in the region.

Prime Minister Modi's official visit to Central Asia in June 2015 was not only a symbolic but also a smart strategic step for Indian diplomacy. Now the Indian government is focusing on rebuilding ties with the Central Asian region in a modern way. The first, through regional ties, is the resumption of long-delayed projects, with Prime Minister Modi visiting Iran in 2016, India's bridge to Central Asia. During this visit, both sides signed an agreement on the development of the port of Chabahar[20]. While these steps have given new life to India's vision of Eurasian relations, New Delhi needs to combine skilled diplomacy with practical efforts to ensure the sustainability of these projects in the face of U.S.-Iran conflict. The second is through strengthening multilateral cooperation platforms with Central Asian states and other external forces. On the economic front, the Eurasian Economic Union, which includes India and Central Asian states Kazakhstan and Kyrgyzstan, set up a Joint Research Group in 2015 to explore the possibilities of a Free Trade Agreement[21].

India's accession to the Shanghai Cooperation Organization in 2017 shows that there have been significant changes in the country's approach to the entire region. Recognizing this as a positive step, India began to see the region not as part of mechanisms involving bilateral or other external forces, but as a high-potential partner with the potential to communicate in general. India's accession to the SCO has also given its member states the task of cooperating primarily in the fight against terrorism, drug trafficking, extremism and

[19]Галишева, Н.В. (2018). Центральноазиатский вектор внешноэкономической политики Пакистана: основные проблемы и перспективы. Вестник РУДН. Серия: Международные отношения. http://journals.rudn.ru/international_relations

[20]'India Takes Over Operations of Part of Chabahar Port in Iran', Economic Times, 7 January 2019, https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/india-takes-over-operations-of-part-ofchabahar-port-in-iran/articleshow/67424219.cms?from=mdr

[21]'Joint Statement Between the Russian Federation and the Republic of India: Shared Trust, New Horizons, 24 December 2015', Ministry of External Affairs, 24 December 2015, https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/26243/Joint_Statement

religious discrimination in the region. India then offered its practical assistance in solving the following problems:

- Establishment of a joint working group on combating terrorism in the MO;
- development of information and intelligence exchange mechanisms;
- Training and provision of modern weapons for the military forces of the MO;
- assistance in eliminating the root causes of terrorism, unemployment, poverty, poverty and other factors;
- An issue that has a positive impact on the fight against terrorism - cooperation with the countries of the CIS on the establishment of stability in Afghanistan[22].

Although many of India's ambitions in Central Asia have not yet been realized, the region has become an important focus of India's expanded neighborhood policy. In addition, India has begun to pay more attention to projects in the framework of its "Connect to Central Asia" initiative, India-Central Asia Dialogue, North-South International Transport Corridor and the Shanghai Cooperation Organization to develop relations with the Central Asian region.

India's growing interest in the CA region means that India is trying to strengthen its position not only in the Asian region but around the world. Speaking about the importance of the region, the country's 12th Prime Minister Inder Kumar Gujral said that "Central Asian countries are India's closest foreign partners" [23].

Rhea Menon and Sharanya Rajiv also say that "as India looks beyond its borders, Central Asia provides India with the right platform to expand its political, economic and cultural ties and play a leading role in Eurasia" [24].

India's interests in the region included the implementation of energy security, trade and infrastructure development programs. At the same time, the CA is taking the initiative to establish strong cooperation with the republics on security in the region. The CA has to compete with foreign players such as the US, Russia and China in achieving its strategic goals. In particular, Pakistan's entry into the region is also motivating India to operate in a highly competitive environment. In particular, the unstable and complicated situation in Afghanistan is becoming a serious problem for Central and South Asia, expanding the scope of common security problems in the two regions. This situation confronts the countries of the two regions with issues that need to be addressed jointly and tasks that need to be fulfilled. Terrorism, drug trafficking, arms and human trafficking, ethnic and social conflicts, political instability and others have been added to the list of growing threats in the two regions. In the context of the current situation and the sharp dynamics of events, the relations between the two regions, in particular India's

[22]Stobdan P. The Strategic Dimension India and Central Asia 2020. Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi KW Publishers Pvt Ltd New Delhi. Pp.34-35

[23]Nirmala Joshi. Reconnecting India and Central Asia Emerging Security and Economic Dimensions. Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program – A Joint Transatlantic Research and Policy Center. 2010. P.85.

[24]Rhea Menon, Sharanya Rajiv. Realizing India's Strategic Interests in Central Asia. December 01, 2019 https://Carnegieindia.Org/2019/12/01/Realizing-India-S-Strategic-Interests-In-Central-Asia

relations with Central Asia, are attracting the attention of many experts and leading politicians in the international arena and are at the center of heated discussions.

The North-South International Transport Corridor project, developed by India, China and Russia and connecting 7,200 km from north to south of the Eurasian region, fully meets the interests of not only these countries, but also Central Asian countries, in particular Uzbekistan, in trade and economic spheres. This trade corridor covers the area from India to Russia, the Persian Gulf and the Caspian Sea, according to which goods and products are transported from the ports of Kandla and Jawaharlal Nehru in northern India to the Iranian port of Bander Abbas. It is then transported by road and rail to Moscow and St. Petersburg, Russia. As a continuation of the project, the construction of a new railway connecting the northern part of the Caspian Sea and Uzbekistan, Kazakhstan, Turkmenistan and Iran is expected. This project will reduce the time spent on transportation of goods in the countries of the region by 30%, and reduce prices by up to 40%.

India also aims to connect Jammu and Kashmir to the Great Silk Road system via the Greater Kashmir Railway, which connects Pakistan's Free Kashmir region. The restoration of the Great Silk Road across Kashmir will be the basis for positive economic and geopolitical changes not only in the region but around the world. The reopening of traditional trade routes will help harmonize the interests of the Silk Road partners, create a free trade zone and, most importantly, strengthen intercultural ties and resolve ideological conflicts peacefully.

Speaking on India's Central Asia policy, Weitz, in his "Averting a new Great Game in Central Asia" said: "New Delhi has made a significant contribution to ensuring sustainable development in the region, expanding trade and investment opportunities, tackling terrorism, drug trafficking and religious extremism, and ensuring energy security in order to develop cooperation without harming any third country"[25]. It should be noted that while CA is not a direct neighbor of India, the region is of great strategic importance to New Delhi. As we can see, over the years, both sides have worked hard to strengthen relations.

Experts say the main factor weakening India's role is its geographical remoteness from the region. While it will take time to resolve its long-standing problems and conflicts with Pakistan, as well as consolidate regional instability, loud official statements alone are not enough. All this makes India a "small player." In our opinion, these statements are also true to some extent, but most of the world's political forecasters overestimate the development potential of India-Central Asia relations. This is due to the fact that since the establishment of formal relations, the interests have not weakened, on the contrary, the scope of cooperation has expanded, jointly developed long-term plans, successful joint projects have emerged. An atmosphere of mutual understanding and cooperation on key international and regional issues has been formed. This is a clear indication that close

[25]Weitz, R. (2006). Averting a new Great Game in Central Asia. The Washington Quarterly, 29 (3), 155–167.

human relations have emerged between the countries as a result of hundreds of years of mutual cultural, political and economic influences.

Over the past years, in the framework of cooperation between India and the SCO, the dynamics of growth and development has been observed in the modern relations of the country with its members in all areas, especially in the field of security. Bilateral and multilateral cooperation between India and Central Asia is being reshaped through official visits of heads of state and, of course, the Shanghai Cooperation Organization and active official meetings, and is being implemented through new approaches and advanced initiatives. This is undoubtedly a clear indication that the interests of the two regions are converging. We can confirm that the last decade has been the beginning of close cooperation between India and the Central Asian Republics in the fields of security and defense.

From the above figures, it can be seen that with a good understanding of the close connection of geoeconomics with geopolitics, along with economic cooperation between India and CA countries, great attention is paid to military training and efforts to develop strong defense ties by strengthening strategic and security cooperation. Security cooperation between India and the CA also includes conducting joint military-defense research, coordinating counter-terrorism measures and closely consulting on Afghanistan, whose security is of paramount importance to both sides.

Another major reason why India is trying to strengthen its position in the CA is its traditional foreign policy rivals - China and Pakistan - in their efforts for success in the region. "While competition with China in the region is focused on the economic sphere, tensions with Pakistan are related to security issues in the CA," said Yogesh Joshi and Ankit Mukherjee[26]. Here, India faces two challenges: the country needs to increase its capacity and potential as a worthy competitor to China in the region, and reduce Pakistan's influence. A number of experts have been using the phrase "the fate of the late" in reference to India's policy in the region. Two French researchers working in Washington discuss several reasons for the current situation in their book, Central Asia on a World Map: Indian Ideas and Strategies[27].

According to Naboka A.V., by this time, the convergence of views and interests on fundamental issues had formed between the Central Asian republics and India: a) secularism and commitment to democracy, and the struggle against religious fundamentalism; (b) Recognizing the threat of cross-border terrorism, arms and drug trafficking, religious extremism and ethnic and religious discrimination to regional security and stability; (c) Observance of the principles of the territorial integrity of States and the inviolability of state borders; d) development of economic, scientific and cultural cooperation; d) Ensuring a

[26]Yogesh Joshi & Anit Mukherjee. From Denial to Punishment: The Security Dilemma and Changes in India's Military Strategy towards China, Asian Security. 2019. Pp. 25-43

[27]Sébastien Peyrouse, Marlène Laruelle. Mapping Central Asia. Indian Perceptions and Strategies. Routledge, 2016. 262 Pages

peaceful and peaceful neighborhood in Afghanistan, etc[28].

"Central and South Asia: Regional Interdependence" held in Tashkent on July 14-15, 2021. In his speech at the international conference "Threats and Opportunities", President Mirziyoyev said: "... I am confident that active and open dialogue between the countries of Central and South Asia will create unique opportunities for the full realization of our huge trade, economic, cultural and civilizational potential[29]". It also called on the participating States to join forces in the fight against threats to security and stability, to fight terrorism, extremism, transnational crime, in particular cybercrime, and to develop a joint drug action plan with the United Nations Office on Drugs and Crime. one of the main directions in which it is necessary to unite forces is to combat the threat of terrorism. This event itself confirms that the strengthening of cooperation between the Central Asian and South Asian regions has become a very important factor in ensuring peace and stability in these regions.

CONCLUSION

In conclusion, the importance of Central Asia for India is very high in the distant and recent past, even today, and this importance will undoubtedly remain strong in the future. With the increasing threats and threats of religious extremism, terrorism and aggressive nationalism to the integrity and security of the Indian nation, the strategic value of Central Asia for the country has further increased. In India's strategic thinking, Central Asia has become an important part of its expanded neighborhood. For India, stability and security in the region came first. Afghanistan is inextricably linked to India's problems in Central Asia, which is characterized by the fact that Tajikistan, Uzbekistan and Turkmenistan share common borders with the destabilized region. In the immediate context, India's concerns are related to the unstable security scenario that is emerging in the region. The threat of non-traditional threats poses a serious threat not only to the integrity of India and Central Asian states, but also to the existence of democracy and open societies. However, it is clear that the integration of South and Central Asia will bring great economic benefits to all parties, which will lead to positive results for stability and security in the region. Strategically and contextually, both India and Central Asia will continue to adhere to this concept.

[28]Набока А.В. Роль Международного Сотрудничества В Обеспечении Безопасности В Центральной Азии. DOI:10.20542/2307-1494-2016-2-87-100.

[29]President of the Republic of Uzbekistan Shavkat Mirziyoyev. "New Uzbekistan Strategy". Speech at the international conference "Central and South Asia: Regional Interdependence. Threats and opportunities"// https://president.uz/uz/lists/view/4484

References

1. Angira Sen Sharma, 'Uncertainty Still Looms Large Over TAPI', Indian Council of World Affairs, September 28, 2012, https://icwa.in/pdfs/IBunsertanitystill.pdf
2. Ayjaz Wani. India and China in Central Asia: Understanding the new rivalry in the heart of Eurasia. Observer research foundation. 2020. https://www.orfonline.org/research/indi

a-and-china-in-central-asia-understanding
3. Central Asia Atlas Of Natural Resources. Central Asian Countries Initiative for Land Management Asian Development Bank Manila, Philippines 2010.
4. Don McLain Gill. India Needs a "China Strategy" in Central Asia. 2020. https://www.geopoliticalmonitor.com/india-needs-a-china-strategy-in-central-asia/
5. Edward Lemon, Vera Mironova, and William Tobey, 'Jihadists from Ex-Soviet Central Asia: Where are They? Why Did They Radicalize? What Next?', Russia Matters, 7 December 2018, https://www.russiamatters.org/analysis/jihadists-ex-soviet-central-asia-where-are-they-why-did-they-radicalize-what-next
6. Emilian Kavalski, 'India's Bifurcated Look to "Central Eurasia": The Central Asian Republics and Afghanistan', in David Malone, C. Raja Mohan and Srinath Raghavan (eds), The Oxford Handbook of Indian Foreign Policy. Oxford University Press, New Delhi, 2015.
7. Frederick S. Starr. Reconnecting India and Central Asia Emerging Security and Economic Dimensions. Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program – A Joint Transatlantic Research and Policy Center. 2010.
8. https://www.unodc.org/unodc/en/data-and-analysis/wdr2021.html
9. 'India Takes Over Operations of Part of Chabahar Port in Iran', Economic Times, 7 January 2019, https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/india-takes-over-operations-of-part-ofchabahar-port-in-iran/articleshow/67424219.cms?from=mdr
10. 'Joint Statement Between the Russian Federation and the Republic of India: Shared Trust, New Horizons, 24 December 2015', Ministry of External Affairs, 24 December 2015, https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/26243/Joint_Statement
11. Nirmala Joshi. Reconnecting India and Central Asia Emerging Security and Economic Dimensions. Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program – A Joint Transatlantic Research and Policy Center. 2010.
12. Peter Hopkirk, The Great Game: On Secret Service in High Asia. John Murray, London, 2006.
13. Rhea Menon, Sharanya Rajiv. Realizing India's Strategic Interests in Central Asia. December 01, 2019 https://Carnegieindia.Org/2019/12/01/Realizing-India-S-Strategic-Interests-In-Central-Asia
14. Rikar Hussein and Asim Kashgarian, 'Analysts: Central Asin States Must Learn From IS-Linked Citizens', Voice of America, 17 June 2019, https://www.voanews.com/extremismwatch/analysts-central-asian-states-mustlearn-linked-citizens
15. Roman Muzalevsky. Unlocking India's Strategic Potential In Central Asia. Strategic Studies Institute and U.S. Army War College Press, 2015.
16. Sébastien Peyrouse, Marlène Laruelle. Mapping Central Asia. Indian

Perceptions and Strategies. Routledge, 2016. 262 Pages
17. Stobdan P. The Strategic Dimension India and Central Asia 2020. Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi KW Publishers Pvt Ltd New Delhi.
18. Weitz, R. (2006). Averting a new Great Game in Central Asia. The Washington Quarterly, 29 (3), 155–167.
19. Yogesh Joshi & Anit Mukherjee. From Denial to Punishment: The Security Dilemma and Changes in India's Military Strategy towards China, Asian Security. 2019.
20. Вызовы безопасности в Центральной Азии /Ин-т мировой экономики и междунар. Отношений РАН; Фонд перспективных исследований и инициатив и др.; отв. ред. И.Я. Кобринская. – М.: ИМЭМО РАН, 2013.
21. Галишева, Н.В. (2018). Центральноазиатский вектор внешноэкономической политики Пакистана: основные проблемы и перспективы. Вестник РУДН. Серия: Международные отношения. http://journals.rudn.ru/international_relations
22. Набока А.В. Роль Международного Сотрудничества В Обеспечении Безопасности В Центральной Азии. DOI:10.20542/2307-1494-2016-2-87-100.

researcher,
Uzbek State University of World Language,
Uzbekistan

7

धूमिल के काव्य संवेदना की बुनावट

डॉ. अजीत कुमार पुरी

सन् साठ की हिन्दी कविता का स्वर वह नहीं सुनाई पड़ता जो नई कविता का है। साठ के बाद की लिखी गई हिन्दी कविता की संवेदना और उसकी अभिव्यक्ति के ढंग में बदलाव नजर आता है । इस बदलाव में जिन कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई सुदामा प्रसाद पांडेय 'धूमिल' उनमें मुख्य हैं । स्वाधीनता के बाद दस - पंद्रह वर्षो तक यह भ्रम बना हुआ था कि भारत बहुत तेजी से चहुंमुखी विकास कर रहा है। इस भ्रम का कारण एक तो लोक लुभावन और आकर्षक योजनाएँ थीं तो दूसरी ओर यह मानसिकता की अब तो स्वराज मिल गया है, सारे अभाव और निर्धनता स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे । देखा जाए तो " 1939 भारत के लिए राजनीतिक अर्थों में कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है । इस वर्ष सितंबर में विश्वयुद्ध छिडा, जो भारत की स्वतंत्रता का बीज कारण बना । अंग्रेजों की उपनिवेशवादी सत्ता चरमरा उठी । कांग्रेस के नेताओं को सौदा करने का अवसर हाथ लगा, जिसका परिणाम 1947 में निकला ।"[1] अंग्रेजों के स्थान पर उनको ही आदर्श मानने वाले लोग सत्ता मे आ गए ।

यह तो सर्वविदित तथ्य है कि अंग्रेजों ने भारत के विकास पर केवल दिखावटी ध्यान दिया था, वे तो भारत को लूटने में लगे थे किंतु भारत के लोग जब शासन में आएंगे तब देश का सर्वांगीण विकास होगा, ऐसा बहुत से देशवासी सोचते थे। प्रारंभ में कुछ लोगों को व्यतिगत विकास के अवसर मिले भी लेकिन आगे चलकर ये निरंतर कम होते गए और विशेष लोगों को छोडकर अधिकांश को निराशा और विफलताएं ही हाथ लगीं । इन विसंगत परिस्थितियों का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर पडना स्वाभाविक था जिससे धूमिल जैसे कवि कब तक बचे रह सकते थे।

देखा जाए तो धूमिल मनुष्य और मनुष्य के बीच के संबंधों की अवधाराणत्मक संवेदन को बिगाड़ने वाले तत्वों के संदर्भ में तीखी प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं। इसलिए उनकी कविता में एक अकर्मण्यता विरोधी और विध्वंसक का चित्र उभरता है । समकालीन संदर्भों में मनुष्यता के पड़ताल की संचेतना और अतिरिक्त मोह की अनुपस्थिति ही इसके मूल कारण कहे जा सकते हैं। इस संबंध में ब्रह्मदेव मिश्र ने का कथन विचारणीय हो जाता है कि- "धूमिल सोच एवं संवेदना के धरातल एक साथ चलने वाला कवि है । उसकी कविता कहीं भी इनमें से निखालिस एक के तार नहीं बुनती । वह सोच और संवेदना का ऐसा यौगिक है जिसका अपना अलग प्रभाव है और जो नई एवं पुरानी दोनों ही पीढियों को ही समान रूप से उद्वेलित करती है । उद्वेलन का कारण भले ही अलग हो, धूमिल को पढ़कर निष्क्रिय नहीं रहा जा सकता ।"[2]

मनुष्य को कविता के केंद्र में रखकर काव्य-प्रक्रिया को देखने का धूमिल का दृष्टिकोण तथाकथित आधुनिकतावादी नागरिकों से अलग था । धूमिल की कविता में अमानवीयकरण के विरुद्ध एक कारगर विद्रोह की चेष्टा है, केवल नियति के हाथों अपने आप को छोड देने का आग्रह नहीं। धूमिल की दृष्टि में समसामयिक कविता की

सार्थकता इसी बात में है कि वह अपने को इस तथाकथित आधुनिकतावादी संकटों से बचाए । बचाव के इस प्रयास से ही मनुष्य और उसकी मनुष्यता को बचाया जा सकता है । यह कार्य केवल नारों, सिद्धांतों और आप्तवचनों की तीखी अभिव्यक्ति मात्र से नहीं हो सकता । तथाकथित विचारवादी नारों की झनझनाहट धूमिल के सिर नहीं चढ़ी, तो केवल इस कारण कि वह मानते हैं कि मनुष्य विचारों से परे भी कुछ है और कविता का स्रोत उसी 'कुछ' में निहित रहता है । यह 'कुछ' मानवीय संवेदना का धरातल नहीं तो और क्या है?

साठोत्तरी हिंदी कविता में, खासकर खास तौर पर सातवें दशक की कविता में, मनुष्य टूटा हुआ है या विकृत मानसिकता से ग्रस्त है और वह भी यौन विकृति से अथवा वह लड़ने वाला मात्र हथियार है । हाड़ मांस से बना मानव संबंधों में जीता हुआ और जीवन स्थितियों से संदर्भित ठोस चरित्र नहीं नजर आता है । मनुष्य के उक्त दो रूपों के अलावा भी अन्य रूप हैं, इन रूपों को धूमिल के अतिरिक्त किसी अन्य कवि ने अभिव्यक्त नहीं किया है । सातवें दशक की हिंदी कविता में यह धूमिल का महत्वपूर्ण योगदान है । धूमिल का स्पष्ट मानना है कि –

" छायावाद के कवि शब्दों को तोड़कर रखते थे,
प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोल कर रखते थे,
नई कविता के कवि शब्दों को गोल कर रखते हैं,
सन साठ के बाद के कवि शब्दों को खोल कर
रखते हैं "[3]

सन् साठ के बाद के कवियों में धूमिल प्रमुख कवि हैं जिन्होंने मनुष्य के कई रूपों की पड़ताल की । सही मायने में कहा जा सकता है कि धूमिल ने जनता और काव्य के मध्य जो संवेदनहीनता की स्थिति आ गई थी उस अव्यवस्था को अपनी काव्य संवेदना के माध्यम से हटाने का प्रयास किया । धूमिल के काव्य में मनुष्य के जितने रूप आए हैं, उतने रूप किसी अन्य समकालीन कवि की कविताओं में दुर्लभ हैं । धूमिल के यहां विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि मनुष्यों- मध्यवर्गीय व्यक्ति, उच्च वर्ग के समृद्ध व्यक्ति, किसान, मजदूर और गरीब जनसाधारण के साथ-साथ समाज के विविध रूपों को चित्रित किया गया है । धूमिल की संवेदना सामान्य मनुष्य के साथ है । धूमिल मनुष्य को उसकी कमजोरियों से बाहर निकालना चाहते हैं । वह उसमें स्वाभिमान भरना चाहते हैं । वे कहते हैं-

"गीली मिट्टी की तरह हां हां मत करो
तनो
अकड़ो
अमरबेल की तरह मत जियो
जड़ पकड़ो
बदलो अपने आपको बदलो
यह दुनिया बदल रही है "[4]

संवेदना के धरातल पर साठोत्तरी कविता ने दो कार्य मुख्य रूप से किए हैं, एक 'नई कविता' में प्रस्तुत व्यक्तित्व की हृदय गरिमा का खंडन और दूसरे संसदीय प्रणाली की वास्तविकताओं का उद्घाटन । धूमिल इस कार्य में अपने समकालीन कवियों में बहुत आगे दिखते हैं । धूमिल देख रहे थे कि कैसे चुनावी राजनीतिक नैया पार लगाने के लिए सामान्य मनुष्य की निश्चल भावनाओं से देश का राजनीतिक वर्ग खेल रहा है । कैसे 'गरीबी हटाओ' जैसे नारे कुछ लोगों की गरीबी हटाने का माध्यम बनते जा रहे थे । समाजवाद की आड मे वह सब कुछ घटित हो रहा है, जिसकी निंदा मंचों से की जाती है , संसद में की जाती है । धूमिल इन

विसंगतियों पर मारक प्रहार करने का इरादा रखने वाले कवि हैं, जब वे कहते हैं कि –

" मुझसे कहा गया कि संसद
देश की धडकन को
प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है
जनता को
जनता के विचारों का
नैतिक समर्पण है
लेकिन क्या यह सच है ?
या यह सच है कि
अपने यहाँ संसद –
तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है "[5]

धूमिल को ऐसा इसलिए लिखना पडा क्योंकि वे देख और अनुभव कर रहे थे कि देश के लिए अपना बलिदान देने वाले और सर्वस्व लुटा देने वाले लोग कहीं हाँशिए पर पडे हैं । साधारण मनुष्य जो किसी दल या समूह का अनुयाई नहीं है, वह उपेक्षित है, अपमानित है । कुछ मुट्ठी भर लोग जो राजनीति या प्रशासन में हैं सबके भाग्य विधाता बन बैठे हैं। धूमिल जैसे राजनीतिक रुप से सजग कवि के लिए यह आवश्यक था कि इन जटिल और रूढ़ होती जा रही परिस्थितियों के विरुद्ध कारगर हस्तक्षेप करते । इसके लिए धूमिल को अपनी कविता से बड़ा हथियार क्या मिलता ? इसलिए धूमिल की कविता में जो व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह जैसा स्वर है तो इसके मूल में वह परायापन ही है जिसे तत्कालीन व्यवस्था ने अपने पूर्ववर्ती अंग्रेजी शासन से ग्रहण कर लिया था और इसे धूमिल का स्वाधीनचेता मन कभी स्वीकार नहीं कर सकता था ।

धूमिल ने अपने समय में साफ साफ देखा कि मनुष्य के आपसी संबंध बहुत कुछ उलझ से गए हैं । उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को बनाए रखने वाली जो सामाजिक ईकाईयां थीं वे टूटकर बिखर रहीं हैं । राजनीतिक व्यवस्था - समाज व्यवस्था, संस्कृति को अपने अनुसार ढालने मे लगी है । सर्वत्र बेलगाम नारों का बोलबाला है । तथाकथित बौद्धिक तबका जो इस व्यवस्था से पोषित हो रहा है वह भी साहित्य के नाम पर इसी नारेबाजी में बहता हुआ दीख जाता है । इसलिए धूमिल कविता को भाषा में आदमी होने की तमीज कहते थे । क्योंकि कविता अपने उद्भव काल से ही मनुष्य क्या सृष्टि के संपूर्ण परिवेश के साथ गहराई से जुड़ी है । तभी तो वधिक के पापकर्म, जीवहत्या से वाल्मीकि का कोमल हृदय द्रवित हुआ और कविता को हृदय से बाहर निकलने का अवसर मिला । इसलिए धूमिल यह मानने को तैयार नहीं थे कि कोई कविता या साहित्य मनुष्य से कटकर भी कभी गतिशील हो सकता है।

नई कविता नवजीवन के वस्तुनिष्ठ निर्माण के प्रति उत्तरदायित्व की नई चेतना से उद्‌भुत थी । उसने संवेदना की वस्तुनिष्ठता को अहमियत देते हुए उसने 'अनुभूति की प्रामाणिकता' को अपना प्रस्थान बिंदु स्वीकार किया । प्रयोग और प्रगति को एकाकार करने का, भारतीय परिवेश के अनुकूल, यह एक महत्वपूर्ण कदम था । किंतु उसकी अनुभूति की प्रामाणिकता वह नहीं रही, जिसकी घोषणा की गई थी । उसमें निहित वस्तुनिष्ठता धीरे धीरे छीजती चली गई और मूल्यवत्ता के नाम पर व्यक्तिनिष्ठता बढ़ती गई । कहना न होगा कि अपने व्याकरण के परिशिष्ट के रूप में उसने व्यक्तिनिष्ठता को ही स्वीकार कर लिया । फल यह हुआ कि सातवें दशक के मध्य तक पहुंचते-पहुंचते नई कविता द्वारा स्थापित आशा एवं उल्लास में नाटकीयता अधिक और प्रासंगिकता कम हो गई । जीवन मूल्यों का कल्पित और यथार्थ जीवनबोध से विच्छिन्न होकर

अपनी अप्रमाणिकता का इजहार करने लगा। लघु मानव के बहाने कवि कर्म की समीक्षा करने वाली नई कविता ने लघुता का दामन तो नहीं छोड़ा, किंतु सातवें दशक तक पहुंचते-पहुंचते ठोस जीवन संदर्भित मानव उससे अवश्य छूट गया । इस पृष्ठभूमि में साठोत्तरी कविता का विकास हुआ।

साठोत्तरी कविता ने पूर्ववर्ती नई कविता के 'पैटर्न' के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद किया। उसे लगा की जड़ीभूत व्यवस्था अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मूल्यों के इस परिप्रेक्ष्य का इस्तेमाल ढाल के रूप में कर रही है । इसलिए व्यवस्था विरोध को उन्होंने मुख्य विचार के रुप में स्थापित किया । देखा जाए तो इस विरोध का संदर्भ मात्र राजनीतिक नहीं; इसका सीधा सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना से अपना सुनिश्चित संबंध भी है।

धूमिल की चिंता कविता को उस विरोधी भूमिका में सशक्त और सार्थक बनाने की थी, जो युगीन संदर्भ में 'आवश्यक कार्यवाही' थी । इसके लिए आम आदमी का नारा मात्र काफी नहीं था, आवश्यक था उसको हालात से संवेदित करना और सक्रिय बनाना । यह समकालीन परिस्थितियों में गहरे उत्तरदायित्व बोध का उत्साह था। अन्यथा वह भी गम को गर्त करने के लिए बड़ी आसानी से 'जीभ और जांघ' के चटकारे ले सकता था । यह " सच्चाई है कि धूमिल की कविता में परिवेश के प्रति तीखी प्रतिक्रियाओं की बहुतायत है । लेकिन ये प्रतिक्रियायें उसे जीवन मूल्यों से विरत नहीं करती , बल्कि उनको प्रासंगिक सक्रियता के संदर्भ से जोडती हैं।"[6]

मूल्यों की सर्वकालिक महत्ता अक्षुण्ण होते हुए भी उनकी समकालीन विसंगति उसे उनकी सार्वभौमता के गीत गाने से बरज रही थी । कहीं ना कहीं धूमिल को लगता था कि स्थितियों को बदले बिना मूल्य साधना लेखक की उत्तरदायित्व का द्योतक है। जब धूमिल ने लिखा-

"मैंने बाहर महसूस किया है
कि नंगापन
अंधा होने के खिलाफ
एक सख्त कार्यवाही है।"[7]

तो वह उसके पूरे संदर्भ में देख रहे थे। लोगों के अंधेपन को दूर करने के लिए ही वे 'नंगेपन' की वकालत कर रहे थे। धूमिल का नंगापन आम आदमी की नग्न स्थितियों को कविता में रूपायित कर, उसके सौंदर्य बोध को कविता में शक्ल देने की प्रवृत्ति का द्योतक है, ना कि भदेसपन का । इसमें हालात को लेकर उनकी बेचैनी भी ध्वनित होती है। समकालीन कविता पर उनकी टिप्पणी कि

"लगातार बारिश में भीगते हुए
उसने जाना कि हर लड़की
तीसरे गर्भपात के बाद
धर्मशाला हो जाती है और कविता
हर तीसरे पाठ के बाद"[8]

उनकी उत्तरदाई बेचैनी को प्रकट रूप में संवेदित करती है । अपने तीखे कचोटते अनुभवों को वाणी देने के लिए धूमिल को कविता में ऐसी भाषा की तलाश थी जो सच्चाई को उसकी पूरी नग्नता में रूपायित कर हालात को बदलने की सक्रिय संवेदना से जोड़ सके।

धूमिल की कविता में व्यंग एवं व्यक्तव्य की चरितार्थता यही है कि उस के माध्यम से कथ्य को धारदार और असरकारक बनाने में सहायता मिलती है। उनकी बिंब योजना कविता की सपाट बयानी के बीच बिंबो को इस तरह से बुनती है कि वह उसके अनुभव को मूर्त करते हुए उसकी कभी भूमिका को भी सार्थक रूप से अभिव्यक्त करते हैं। उनके बिंब हालात के संदर्भ में उपजी गहरी पीड़ा

को संश्लिष्ट रूप में उजागर करते हैं। बिंबों की इस बुनावट में निःसंदेह वे साठोत्तरी कविता में अकेले हैं। 'मोचीराम' को इसके उदाहरण के रूप में रखा जा सकता है।

धूमिल का मानना है कि- "कविता के लिए पाठक की संवेदना और सहानुभूति उसी तरह घातक है जिस तरह बिजली के धक्के से होश होते आदमी को पानी पिलाना। कविता में साझेदारी ज्यादा सही है । और हो सके तो एक आवेग-हीन शब्द – शाबाश..... !! "[9] इस कथन के माध्यम से धूमिल यह बता देना चाहते हैं कि कोरी सहानुभूति व्यक्ति को अंदर से कमजोर कर उसे लक्ष्य से भटका देती है । इसलिए इसकी कविता या व्यक्ति को कोई जरूरत नहीं है।

साहित्य की समकालीन यथार्थ समझ के लिए धूमिल राजनीतिक चेतना को आवश्यक ही नही बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं । इसलिए इससे अलग होकर साहित्य रचना उनकी दृष्टि में एक प्रकार की दायित्वहीनता ही कही जा सकती है । देखा जाए तो धूमिल की कविता में विसंगतियों के प्रति विद्रोह यदि अराजकता की सीमा को छू जाता है तो इसके मूल में धूमिल का वह ग्रामीण परिवेश है जिसमें रहकर उन्होंने साधारण मनुष्य के जीवन में घटने वाली इन विसंगत स्थितियों का साक्षात्कार किया था । मोचीराम कविता में अभिव्यक्त धूमिल का काव्य विवेक यही कुछ बयां करता दिख जाता है , जब वे कहते हैं कि –

" मुझे हर वक्त यह ख्याल है कि जुते
और पेशे के बीच
कहीं – न – कहीं एक अदद आदमी है
जिस पर टांके पडते हैं
जो जूते से झांकती हुई अंगुली की चोट
छाती पर
हथौडे की तरह सहता है " [10]

धूमिल की राजनीतिक समाज का सक्रिय रूपायन इसी परिपेक्ष में एक प्रासंगिक कार्यवाही का पर्याय बनता है । उनकी कविता में प्रजातंत्र पर जितने तीखे व्यंग हैं वे प्रजातंत्रीय व्यवस्था के दावेदारों की कथनी और करनी की विसंगति को बेलौस उभारते हैं । प्रजातंत्र के वे कतई विरोधी नहीं, उनका विरोध तो उससे जुड़े उन संदर्भों से है जिन्होंने मानवीय चेतना की इस महत्तम उपलब्धि को विखंडित कर दिया है। धूमिल में विसंगति, स्थितियों के विरोध की भूमिका के कारण रचनात्मक उत्तेजना बहुत थी। किंतु उसी अनुपात में उनकी समझ भी गहरी और पैनी थी। जिससे वे आवेगों के तीव्र बहाव पर आवश्यक नियंत्रण रखकर चुस्त कविताएं बुनने में सफल हो सके। समकालीन परिवेश में उपजे अपने आक्रोश को धूमिल ने 'मोचीराम' जैसे सशक्त एवं ठोस चरित्र के माध्यम से रूपायित किया और उस बड़बोलेपन के दलदल में फंसने से बच गए जो आक्रोश की नियंत्रित बाढ़ से कविता में बन गया था । मुक्तिबोध की इस शिकायत को कि नई कविता में विचारों की अमूर्तन- श्रृंखला तो लंबी है, किंतु ठोस चरित्रों के, जो हमारे वास्तविक जीवन से लिए गए हों, सामान्यीकरण का अभाव है को धूमिल किसी हद तक दूर करने में कामयाब हुए।

साठोत्तरी काव्य परिदृश्य में धूमिल का उभार विरोध की उत्तरदायित्वपूर्ण समझ का सशक्त रचनात्मक विस्फोट है । कहीं भी उनकी कविता केवल संवेगों से परिचालित नहीं है । हर जगह उसमें समकालीन समाज का इस्तेमाल इस ढंग से हुआ है कि वह सार्थक कार्यवाही का पर्याय बन सके । उनकी कविता को समकालीन समाज की ईमानदार एवं उत्तरदाई अभिव्यक्ति मानकर देखने से ही उसके स्वर की मूल्यवत्ता को परखा जा सकता है, वरना उसमें फिकरेबाजी तथा

नाटकीयता से परे कोई विशिष्टता नजर नहीं आएगी । काफ्का के शब्दों में कहें तो "जब हम लोग राजनीतिक या आर्थिक मामलों में गलत राह पर चलने लगते हैं तो उसका (कवि का) गाना (कविता) हमें बचा लेता है। गाना अगर बुराई को दूर नहीं खदेड़ पाता तो कम से कम उससे मुकाबला करने की शक्ति तो देता ही है । "[11]

धूमिल की शक्ति का स्रोत भी इसी उद्देश्य में निहित था । उनकी कविता निश्चय ही हमें समकालीन भयावह और जटिल स्थिति के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति से संवेदित करती है । "धूमिल का भाव जगत अत्यंत व्यापक है । उन्होंने अपने काव्य में केवल वैयक्तिक अनुभूतियों को ही स्थान नहीं दिया है, अपितु अपने समकालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों को आत्मसात किया है और समाज के जन-सामान्य की घुटन,पीडा एवं संत्रास को बडी शिद्दत के साथ रेखांकित किया है । "[12] धूमिल के काव्य की यह शक्ति ही कही जा सकती है कि वह एक साथ गांव की पंचायत के यथार्थ को देश की सबसे बडी पंचायत संसद के साथ जोडकर रख देती है ।

धूमिल के काव्य में एक विशिष्टता और देखी जा सकती है कि तीखी से तीखी प्रतिक्रिया देते हुए भी वे अपने अनुभव जगत से हटकर के मात्र अमूर्त वैचारिक पक्ष का उच्च स्वर ही गुंजायित नहीं करते वरन अपने आसपास के परिवेश पर गहरी निगाह रखते हुए उसे सही भाषा में अभिव्यक्त कर देते हैं । इसलिए धूमिल के यहाँ ग्रामीण और नगरीय जीवन के अंतर्विरोधों का गहरा संश्लेषण मिलता है । जिस सच्चाई को धूमिल की कविता झुठलाकर आगे नहीं बढ़ सकती थी । इसलिए हम देखते हैं कि धूमिल की काव्य संवेदना सामयिक उत्तरदायित्व के साथ न केवल जुडते हुए चलती वरन कहीं - कहीं उसमें आक्रोश का स्वर ऐसा है कि समीक्षक उसमें एक गंवईं 'भदेसपन' भी ढूढ निकालते हैं, जिस बहाने धूमिल पर अश्लीलता का आरोपण भी कर दिया जाता है । जबकि देखा जाए तो धूमिल के यहाँ सामान्य मनुष्य के जीवन के समस्या की इतनी गहरी समझ है कि उस पर यह आरोपण बहुत देर तक ठहर नहीं पाता ।

जिस समय साठोत्तरी भूखी युवा पीढ़ी जब अपने क्रोध का प्रदर्शन विविध भंगिमाओं के माध्यम से प्रदर्शित कर रही थी, तब धूमिल उसके रचनात्मक अवधारणाओं की गहराई से परीक्षा कर रहे थे । गिंसवर्ग, जो कि विश्व की नाराज युवा मानसिकता का प्रतीक बन चुका है, से उसके वाराणसी प्रवास के समय धूमिल का गहरा संपर्क हुआ था । लेकिन धूमिल अपने परिवेश की स्थितियों से अच्छी तरह परिचित थे । इसलिए वे फैशन के तौर पर कुछ नया करने की अपेक्षा युग की मानसिकता को ठोस कार्यवाही में बांधना चाहते थे ताकि उत्तरवर्ती कविता ठोस जमीन पर खड़ी होकर उन सारे पेटर्नों का विरोध कर सके, जो रचना तथा जीवन दोनों को त्रुटिपूर्ण मार्ग पर धकेल रहे थे । यह सब केवल इसलिए संभव हो सका क्योंकि धूमिल ने अपने को उन अनुभवों से अगाध निष्ठा के साथ संबंध रखा जो उन्हें ग्रामीण परिवेश में उपलब्ध हुए थे और जिनके माध्यम से उन्होंने साधारण मनुष्य की जीवनगत विसंगतियों का सीधा साक्षात्कार किया था । धूमिल की रचनात्मक मनीषा ने भली-भांति उन्हें अवगत करा दिया था कि ऐसे अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें विषपायी बनकर जीना पड़ेगा और कविता को उसकी कारगर विरोधी भूमिका में स्थापित करना पड़ेगा ।

देखा जाए तो कांग्रेस की अगुवाई में 1947 के बाद जो व्यवस्था कायम हुई वह पूर्ववर्ती अंग्रेजी शासन से बहुत कुछ अलग नहीं थी । उसमें भी

नगर और उससे जुडी हुई समस्यायों की चर्चा ही मुख्य थी । गांव कहीं छूटता ही जा रहा था । पलायन की बाढ़ ने नगरों को भी जहाँ तहाँ विद्रूप बनाना शुरु कर दिया । मनुष्य एक यंत्र बनता जा रहा था । उसकी संवेदना तिरोहित हो रही थी । ऐसे समय में धूमिल को चुप बैठना गंवारा नही लगा । उन्होंने संसदीय लोकतंत्र के नाम पर जो ऊपरी दिखावा किया जा रहा था, उस दिखावे से, आडंबर से पर्दा हटा दिया और तथाकथित सुराजियों के पाखंड को कुछ इस तरह उडेल कर रख दिया -

" मगर चालाक 'सुराजिए'
आजादी के बाद अंधेरे में
अपने पुरखों का रंगीन बलगम
और गलत इरादों का मौसम जी रहे थे
अपने - अपने दराजों की भाषा में बैठकर
'गर्म कुत्ता' खा रहे थे
'सफेद घोडा' पी रहे थे "[13]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि धूमिल की काव्य संवेदना में, उनकी अपनी पीड़ा में, सामान्य मनुष्य की पीड़ा को उसके परिवेशगत सच्चाई के साथ सार्थक अभिव्यक्ति मिली है । उनकी कविता न आत्म-पीड़ा अथवा आत्मरोदन है न ही सैद्धांतिक ढांचे में बुना हुआ क्रांति-दर्शन । उसमें तत्कालीन परिवेश को सही परिप्रेक्ष्य में देखने तथा उसका उद्भव साक्षात्कार कराने की एक सक्रिय अंतर्दृष्टि निश्चित रूप से है । यह दृष्टि ही धूमिल की पहचान को दूसरों से अलग रखते हुए उन्हें साठोत्तरी कविता के दिशा निर्देशक के रूप में स्थापित करती है ।

धूमिल की सीमा को रेखांकित करना कठिन नहीं है, पर उसकी शक्ति को नकारना आगे की कविता को अंधेरी राह पर डालने जैसा प्रयास होगा । उनकी सारी शक्ति उसकी समकालीन समझ में है, जो निःसंदेह एक सत्यनिष्ठ प्रयास की सार्थक उपलब्धि कही जा सकती है । उनका संप्रेषण भोथरा और कुंठित कहीं नहीं है उन्होंने कोई मुगालता नहीं पाला था । क्योंकि राजकमल चौधरी की तरह वे कहीं भी अपनी कविता से बाहर नहीं हैं ।

संदर्भ सूत्र:

1. प्रभाकर श्रोत्रिय, रचना एक यातना है, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985 , पृष्ठ 4
2. ब्रह्मदेव मिश्र, धूमिल और उसका काव्य – संघर्ष, लोकभारती, द्वितीय संस्करण 1994, पृष्ठ 54
3. धूमिल, कल सुनना मुझे (भाषा की रात में- धूमिल की भूमिका), युग बोध प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1977, पृष्ठ 1
4. धूमिल, संसद से सड़क तक, राजकमल, प्रथम संस्करण 1972 , पृष्ठ 48
5. वही, पृष्ठ 127
6. ब्रह्मदेव मिश्र- धूमिल और उसका काव्य – संघर्ष, पृष्ठ 121
7. धूमिल - संसद से सड़क तक, पृष्ठ 27
8. वही, पृष्ठ 7
9. वधूमिल, कल सुनना मुझे(भाषा की रात में- धूमिल की भूमिका), पृष्ठ 1
10. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृष्ठ 40
11. सारिका, 1 जून, 1980, पृष्ठ 64
12. रमेश प्रताप सिंह, सुदामा प्रसाद पांडेय

'धूमिल', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ,
प्रथम संस्करण, 2016, पृष्ठ 76
13. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृष्ठ 46 - 47

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्याल, वाराणसी

8

HINDI TEXTBOOKS IN UZBEK SCHOOL AND LYCEUM

Aytjamol Abdulaziziovna Yunusova

ANNOTATION

This article is devoted to the analysis of grammatical topics in textbooks written for a specialized school of the Hindi language and a lyceum of oriental languages at the Tashkent State University. Friendly relations between Uzbekistan and India develops fruitfully and we, the Hindi language teachers, should also contribute to the development of these relations. The establishment of scientific cooperation between the two countries requires a high level of Hindi learning for our youth. Unfortunately, over the past twenty years, textbooks on the Hindi language for schoolchildren and students of lyceums have not been created. In this article, teachers of the school and lyceum were suggested to familiarize themselves with the teaching aids prepared by the author of the article, and the task was to create new textbooks under the guidance of teachers of the Hindi at University of Oriental Studies.

The article describes the step-by-step study of Hindi by elementary and senior schoolchildren. The 5th grade textbook includes introductory topics in Hindi phonetics, spelling and grammar. Various exercises and pictures are offered to keep students interested in learning Hindi, and helps to increase student activity in the language learning process. Textbooks for high school students contain more detailed phonetic and grammatical sources in Hindi; various topics are given, namely geography, history, texts telling about famous Indian statesmen, about the national holidays of India, grammar tables, dictionaries of each text (or lesson), oral and written exercises, performing tests increases knowledge of the Hindi language.

Hindi Textbooks in Uzbek school and lyceum

Huge changes are taking place in the social and political life of our country. Our country is facing the world, and the most developed Europe and eastern countries of the world are recognizing this. As a result, with the development of science in our country, have opened a wide field to the direction of oriental studies. The demand for learning oriental languages is growing. The development and strengthening of relations between Uzbekistan and India requires a deeper study of the culture, relations and existing languages of these countries.

The friendly relations between Uzbekistan and India have a long history. Scientific and cultural relations between Uzbek and Indian people have always been developing. The great scientist Beruni of the XI century also studied Indian and Sanskrit languages. Along with the creation of encyclopedic works on astronomy, mathematics, geography, mineralogy, Abu Rayhan Beruni also studied the way of life, culture and customs of the Indian people. He studied Hindi before his trip to India. Beruni translated the works “Sankhi” and “Yogasutra Patandzhal” from Sanskrit into Arabic, and the work “Euclid and Almagesi” by Ptolemy into Sanskrit. During his several years of living and working in India, Beruni created a major encyclopedic world famous work, named “India”. This work was translated into Arabic, Persian and Western languages, which became popular not only in India, Central Asia, but also around the world. Uzbek readers have read this book for centuries, got acquainted with the Indian Land and increased their interest in the Indian language. Trade and diplomatic relations between the two countries developed even more during the Baburids. Ambassadors of the Baburid court worked in Bukhara, Samarkand and Khorezm, while Uzbek ambassadors and academics also worked in India. Indian traders traded in Bukhara, Samarkand, Khiva, and Kokand. These ties greatly contributed to the formation of friendly relations between two nations. The

Baburid empire developed diplomatic relations for three centuries.

Currently, India is one of the developed countries in the world. We know that this country has been a leader in various field for the last twenty years. Higher education is especially important in training qualified professionals. Youth of many countries around the world are studying at prestigious universities in india. In particular, some of graduates of Almazar Academic Lyceum have studied at the universities of Delhi and Pune in India in various bachelor's degrees. At the present time, many uzbek youth are still interested in India through the study of Indian language and literature. And of course, these aspirations will help them to become qualified translators and professionals in the future. Many measures are being taken by the heads of our countries in the field of radical improvement of the education system. The president of our country always emphasized that the time of meeting with the young people, they should acquire knowledge in order to be literate and professionals, regardless of their field of study.[1] In turn, we have the task of creating new types of textbooks, teaching aids for both pupils and students. We know that Indo-Aryan languages are now spoken in India - Hindi, Urdu, Bengali, Punjabi, Marathi, Gujarati, Aryan, Sindhi, Assamese and others.[2] A large percentage of India's population speaks Hindi. Hindi is the state language of India. Uzbek people have been interested in India, its culture and art for many years. Especially, the Hindi language and songs are popular in Uzbekistan among the youth. Hundreds of young people learn Hindi . Hundreds of young people learn Hindi in school, lyceum and universities. Hindi is taught at L.B. Shastri school number 24 in Tashkent and Yunusabad lyceum Hindi has been teaching since 1956 in L.B.Shastri school №24 in Almazar district. Textbooks in Hindi for students of this school was created by teachers of the department of Indian languages Tashkent state university and the teachers of this school in 1960-1994 years. During several years, Hindi chrestomathy -Hindi topic book has been used, which was written for grades 5-8 (texts in Hindi) which was

written for 5-8 classes. In 2020, a textbook has been prepared for the 5th graders. The purpose of creating this book is to teach students the basics of Hindi, using modern pedagogical technologies and new teaching methods, to develop their knowledge and skills. The textbook consists of 50 lessons, each with 6 and 8 exercises on a variety of topics, small texts, and a vocabulary of the new words and phrases. This educational guide for schoolchildren is designed in contrast to the previous textbooks with an abundance of oral and written exercises, texts on different topics, various methods were used to study the existence, especially in the study of grammatical subjects. Children were given tables in different game forms to keep them interested in Hindi, to learn new lexical units, and to memorize them. The texts, which are intended to enrich oral speech and increase lexical reserve, more than 300 words include topics, which are composed of such subjects as school, family and our house. The course focuses on deepening student's grammar and developing oral and written communication skills. Questions and answer exercises, translations from Hindi to Uzbek and from Uzbek to Hindi, using a variety of drawings, posters, images, poems and videos can be effective to learn the Devanagari alphabet. The purpose of learning foreign language for young learners is theHindi language. The purpose of learning foreign language for young learners is exactly the same as in the books on the study of foreign languages. The 5th grade Hindi book also aims to increase student engagement through new innovative methods, videos, audio presentations in Hindi. To use instructional videos to better master the laws of Hindi phonetics and by performing phonetic exercises students develop not only writing skills, but also knowledge of correct pronunciation and expressive reading. As an example several different exercises are given in the course of the lesson. This exercise will help students learn to memorize them by writing word correctly, as well as increase vocabulary. The student with highest score will receive an excellent grade, which will allow the student to be active in the

classroom. Below we give examples of exercises that increase the cognitive skills of students.

अभ्यास 1. इन अक्षरों का प्रयोग करके नये शब्द लिखिये।

अ	आ	इ	ई
अनार	आलू	इमारत	ईख
.....	.....	.....	.....

Students memorize and write vowels and consonants based on the practice of writing exercises by putting a suitable letter instead of dots. Learning Hindi writing and spelling rules is done through written exercises. The competition to write new words on a cognitive map develops the ability to write new words correctly and to form correct sentences in Hindi.

अभ्यास 2. नये शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइये।

The division of nouns in the Hindi into two genders differs by the Uzbek language.

In the Hindi, the division of nouns into two genders, that is feminine gender and mas- culine gender, causes a little difficulty for students.[3]

For this, it is important that the teacher in each lesson will write down the belonging of nouns to the feminine and masculine genders. So non memorizing

words with genders leads to incorrect compilation of sentence. Especially, failure to well master the rules of making the plural form of nouns cause grammatic errors. To do this, it is recommended to perform exercises on the topic of memorization and conjugation of the plural form with the gender indicator of new words. It is expedient for students to perform simple exercises after obtaining a good mastering of the rules of mathematics before independently compiling sentences. The teacher controls the exercise of filling the table by dividing the words into the rocks feminine and masculine gender.

अभ्यास 3.निम्नलिखित शब्दों को लिंग के अनुसार पर टेबुल भरिये।

बेग, खिड़की, दरवाज़ा, अलमारी, तख़्ता, पुस्तक, चित्र, कापी, झंडा, पेंसिल, फल।

शब्द	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उदाहरण	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कमरा	कमरा	कमरे		
मेज़			मेज़	मेज़ें
कमरा	कमरे का दरवाज़ा	कमरों के दरवाज़े	कमरे की दीवार पर	कमरों की दीवारों पर

It is also of great importance that the correct use of the suffix-prepostions in Hindi. Most often, students make mistakes with prepostions in performing exercises with and translating sentences. To prevent this from happening, the teacher should regularly remind about the rules of grammar and monitor correct making sentences in Hindi.

अभ्यास 4. का विभक्ति के रूपों से नये वाक्य बनाकर अभ्यास पूरा कीजिये।

का	के	की
अहमद का बेग सईद का समाचार-पत्र	आज़ाद के दो भाई सईद के साथी	सईद की पुस्तक अनवर की ऐनक

दिलबर का घर भाई का रबड़ कमरे का दरवाज़ा	कमोल के बेग नादिरा के तीन गिलास कमरे के दरवाज़े	ज़मीरा की सहेलियाँ पाठशाला की कक्षाएँ कमरे की खिड़कियाँ

Composing sentences about school, school supplies, family members, friends, and professions, being able to talk about these topics, and doing question-and-answer exercises can help students improve their speaking skills. Regular learning of new words is important to increase students' vocabulary. The following example suggests the task of creating dialogues based on a professional dictionary.

अभ्यास 5.निम्नलिखित शब्दों को याद करके अपने घरवालाओं के पेशाओं के बारे में कहानी लिखिये।

worker	मज़दूर
farmer	किसान
nurse	नरस
seller	बेचनेवाला
chef	बावरची
lawyer	वकील
posbon	पुलिसवाला
craftsman	**कारीगर**

In order to prepare students for the university, new teaching aids were prepared from the Hindi grammar books. In particular, the first edition of the instruction manual of the Hindi for lyceum students was published in 2010, the second edition, which was filled and amended, was prepared and published again in 2017. New topics were introduced to the hand, samples were given from new innovative methods. According to the first stage training program, the emphasis was placed on the development of phonetic and grammatical themes, more than 1200 words and phrases related to Indian literature and culture. It is also planned to develop the skills of reading texts in Hindi, writing and explaining

one's own thoughts, translating into two languages, speaking skills. In addition, literature reading, supervisory work, independent work in Hindi were also included in. The first stage of teaching manual differs from the textbook prepared for the school in terms of size, the variety of subjects , in particular grammatic subjects , a lot of exercises and a dictionary of text. In the section “Phonetics and writing” of the manual, the pronunciation of vowels and consonants in Hindi and the rules of writing are given. This section is given transcripts, phonetic rules and exercises, which consist of seven lessons.In the process of performing phonetic exercises, students will have an understanding of Hindi alphabet, long vowels, types of vowels, rules of writing with their addition, as well as correct pronunciation.The sample exercise is given to understand the differences in writing and pronunciation of pure and breathing vowels.

अभ्यास 6. व्यंजन और महाप्राण व्यंजनों को लिख लीजिये।

at- āṫh	अत-आठ	pal-phal	पल- फल
koʻnā - khoʻnā	कोना-खोना	doʻl- dhoʻl	दोल-धोल
kāt-khāt	काट-खाट	tānā - thānā	ताना-थाना
goʻrī - ghoʻrī	गोरी-घोरी	sāt - sāth	सात-साथ
bāg - bāgh	बाग-बाघ	doʻnā - dhoʻnā	दोना-धोना
choʻr – chhoʻṙ	चोर-छोड़	pal - phal	पल-फल

In the grammatics section, topics related to the morphology of Hindi are taught. The category of horses in Hindi, the division of nouns into two genders and the legalization and application of analogs are fundamentally different from the Uzbek language. To know them, mastering the rules of grammatics is required. Students learn the subjects by doing the exercises. Grammar the rules are strengthened by the method of presentation, that is, with the help of slides. Students will also be able to independently display their presentations on topics in the course processes.In the first part of the textbook, pronouns in the Hindi,

counting, order and summing numbers, adjective, comparison of adjectives, predicates and verb tenses are given, according to the training program to master verb tenses such as “Present simple tense ”, “Past simple tense“, “Future simple tense“.After the studied grammatic subject, the control work is carried out and the level of knowledge of the students is analyzed. Students who have deeply mastered the topics of grammatics will have an increase in their knowledge of Hindi. In Part II of the textbook, topics such as Hindi verb tenses, complete simple adjective , wish declination, complete tense verbs, compound verbs are given.[4] Vocabulary and lexical exercises on texts serve to increase students ' vocabulary, lexical reserve, as well as the development of skills to compose sentences in Hindi. Students learn to read texts written about the geography, history , national holidays of India. Indian states , large cities[5] , industries, minerals are also mastered in the dictionary. Also in the texts on the history of India , such famous figures as Mahatma Gandhi , Javohirlal Nehru and Lal Bahadur Shastri , read texts about their lives and activities, watching video films and speaking them in Hindi. Information about the first Presidents and Prime Ministers of the Republic of India will also be studied. The presentation of the biography and activities of Javohirlal Nehru will be presented by the students in Hindi.

These books are published for the Hindi students of Lal Bahadur Shastri School no.24, inTashkent. Text materiasl for these books are compiled by text preparation committee comprising of the Hindi teachers of the same school and teachers of South and South-East Asian Languages Department, Tashkent State University for Oriental Studies. On the recommendation of the Indian Embassy, and Lal Bahadur Shastri Center for Indian culture in Tashkent, were printed with the Financial grant of Indian Council for Cultural Relations, New Delhi.

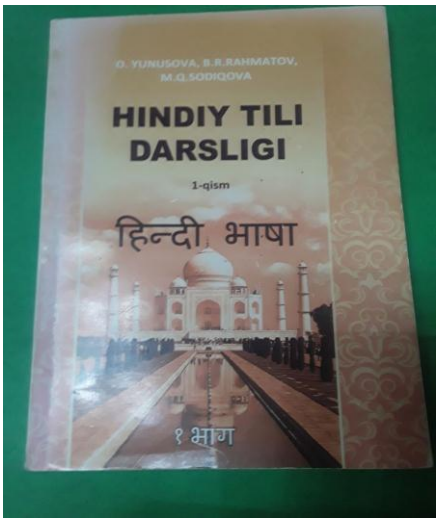

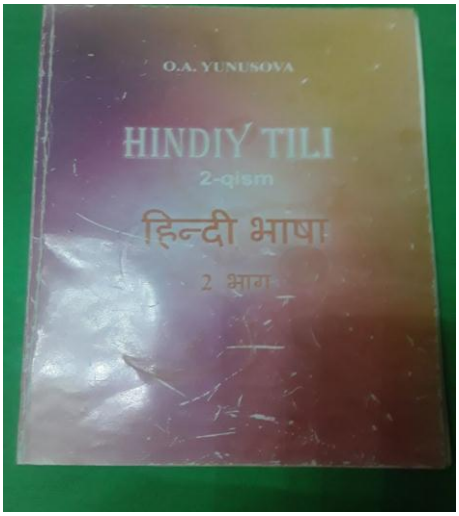

References

[1.] I.Karimov "On measures to further improve the system of learning foreign languages." Tashkent. Newspaper “Xalq so‘zi” (“ Word of the people”) , page 1. December 11, 2012

[2.] Shomatov O.N. Introduction to South Asian languages.Tashkent state Institute of Oriental studies. page 36. 2004.

[3.] R.A.Aulova, Rahmatov B, Sodiqova M. Hindi textbook.Part 1. page 56. Tashkent state institute of oriental studies. 2008

[4.] R.A. Aulova,O.N. Shomatov, B.R. Rahmatov, M.Q. Sodiqova. Hindi textbook. page 191.Tashkent state institute of oriental studies. 2015

[5.] Kostina E. A. Hindi. Initial course. page 109 .Saint Petersburg : KARO, 2016.

Hindi tesacher,
South and South-East Asian Languages Department,
Tashkent state University of oriental studies,
Uzbekistan

9

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका

डॉ. सुषमा देवी

शोध सारांश :
स्त्री किसी भी राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति होती है। यदि हम किसी देश की पहचान विकसित अथवा विकासशील स्तर पर करना चाहते हैं तो उस देश की स्त्रियों के जीवन से इसे सहज ही समझा जा सकता है। स्त्रियों के जीवन का निरंतर विस्तार ही राष्ट्र की आधारशीला बनती है। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति अतिउत्तम से उत्तम, अधम स्थिति को पार करते हुए पुनः मध्यम स्थिति तक पहुँच रही है। आधी आबादी विकास के तिहाई हिस्से तक ही पहुँच पाई है। जब तिहाई हिस्से के विकास में स्त्री गोताखोर से अंतरिक्षगामिनी बन गयी हैं तो उत्तम स्थिति तक पहुँचते –पहुँचते हमारा राष्ट्र स्वर्गादपि गरीयसी अवश्य ही बन जायेगा।

शब्द कुंजी :
ऋषिकुल, मातृसत्तात्मक, अस्तित्व, न्यौछावर, पुरुषवादी, राष्ट्र निर्माण, श्वेतकेतु, पौराणिकता, जीवन-शैली, संस्कृति, पूजनीय, शक्तिपुंज, परिमार्जन, भौतिकता, आध्यात्मिकता, आत्मनिर्भर, कन्या-भ्रूण, विडंबना, षड्यंत्र, मुगल शासन, ब्रिटिश शासन, पुनर्जागरण काल, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, अधिष्ठात्री, अंतरिक्ष।

प्रस्तावना:

भारतवर्ष धरा पर एक ऐसे देश के रूप में जाना जाता है, जहां विविधता में एकता के अद्भुत दर्शन होते हैं। विविध, धर्म, जाति, भाषा, खान-पान, पहनावा आदि में भी भारतीयों में एक अद्भुत एकता देखी जा सकती है। हमारे देश की सामासिक संस्कृति की पृष्ठभूमि का मूल आधार आध्यात्मिकता पर केंद्रित है जो समस्त धरा के जीव मात्र के प्रति करुणा और मंगल कामना से आकंठ डूबा रहता है। प्रायः बहुत अच्छे, सरल लोगों का शोषण करने वाले अधिक होते हैं। भारत की इसी अच्छाई ने ही भारतीय समाज में कई प्रकार के असंतुलन को जन्म दिया जिनमें लिंग के आधार पर स्त्रियों के साथ भेदभाव अमानवीयता की कोटि तक पहुंच गया। जिस नारी शक्ति का उपयोग राष्ट्र के उत्थान में होना चाहिए था, वही नारी भारत में मानवीय तो दूर पशु से भी बदतर स्थिति में पहुंच गई। भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण काल में हमारे देश के कर्णधारों ने देश की आधी आबादी की योग्यता को देशोत्थान में लगाने का आह्वान किया। फलतः स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खुलने लगे और वे राष्ट्र निर्माण हेतु सक्रिय रूप से जुड़ने लगी। प्रस्तुत लेख में स्त्रियों के इसी योगदान को विश्लेषित किया गया है।

उद्देश्य:

- स्त्रियों की योग्यता का चित्रण करना।
- स्त्रियों के नैसर्गिक गुणों का उल्लेख करना।
- विविध कालों में स्त्रियों की दीन स्थिति का उल्लेख करना।
- राष्ट्र निर्माण में स्त्रियों के योगदान का विवेचन करना। मानवता की रक्षा का उत्तरदायित्व वहन का उल्लेख करना।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण इतिहास पर आधारित है। स्त्रियों के योगदान को विश्वगुरु भारतवर्ष के प्रमुख कारक के रूप में जानने के लिए वैदिक, पौराणिक आधार पर शोध करते हुए रामायण, महाभारत जैसे उपजीव्य ग्रन्थ का सूक्ष्म अवलोकन किया गया है। स्वतंत्रता आन्दोलन काल में विविध स्तरों पर देशवासियों के योगदान का उल्लेरख किया गया है। कुछ सन्दर्भों को स्त्री जीवन पर आधारित समीक्षा पुस्तकों से लिया गया है।

विश्लेषण :

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को ईश्वरीय गरिमा प्रदान किया जाता है। वैदिक युग में ऋषिकुल धरती को माँ का स्थान देते हुए स्वयं को धरती की संतान कहते हुए अथर्ववेद में 'माता भूमिः पुत्रोअहम् पृथिव्याः' वाक्य के द्वारा स्त्री को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया करते थे। प्रकृति में माँ को देखने की दृष्टि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युगीन साहित्य सर्जकों में रही है। विश्व के समस्त देशों में आरंभिक ढांचा संभवतः मातृसत्तात्मक रहा। जितने भी महान देश के गौरवपूर्ण व्यक्तित्व रहे हैं, उनकी मातृस्वरूप स्त्री की गरिमा उतनी ही गौरवपूर्ण मानी जाती हैं। स्त्री प्रकृतितः अत्यंत शक्तिमयी रही है तभी तो महान सेनानायक विश्वविजेता नेपोलियन ने भी एक उत्कृष्ट राष्ट्र के निर्माण में स्त्री के महत्त्व को अपने इन शब्दों में व्यक्त किया है कि ...एक स्त्री को शिक्षित करना समस्त परिवार को शिक्षित करने के बराबर है। पुरुष को शिक्षित करने से अकेला एक पुरुष ही शिक्षित बनता है। स्त्री अपना अस्तित्व, अपनी पहचान मिटाकर भी अपने पति, संतान आदि के व्यक्तित्व निर्माण के लिए न्योछावर होती आई हैं। जब-जब धरा पर विपत्ति के बादल छाये हैं स्त्रियों ने ही उनका निदान ढूँढा है। आज संस्कृति तथा मानव सभ्यता के जो चिन्ह समस्त विश्व में दिख रहे हैं वे निश्चय ही स्त्रियों के कारण ही देखे जा सकते हैं। कुछ पुरुषवादी सोच के लोगों को आपत्ति हो सकती है कि सब स्त्रियों के कारण ही बचा हुआ है तो क्या पुरुषों का राष्ट्र और संस्कृति, मानवता के निर्माण में कोई योगदान नहीं है ? किन्तु ऐसा कदापि नहीं है। स्त्री की गरिमा, उपादेयता को रेखांकित करते समय मेरा यह ध्येय नहीं कि पुरुषों की उपेक्षा की जा रही है। राष्ट्र – निर्माण में पुरुष शरीर है तो स्त्री आत्मा। अतः यहाँ मेरा मंतव्य स्त्री – पुरुष के मध्य तुलना करना कदापि नहीं है। बल्कि भारतीय राष्ट्र के निर्माण में स्त्री की उपादेयता की विवेचना करना ही मेरा मंतव्य है। जिस समाज को हज़ारों वर्षों पूर्व महर्षि श्वेतकेतु ने समाज के सुचारू संगठन हेतु विवाह – व्यवस्था की नींव रखी, जिस 'लिव इन' को आधुनिक समाज आधुनिकता के परिचायक की तरह जीने लगा है, उस व्यवस्था को हमारे पूर्वजों ने हज़ारों वर्ष पूर्व जीकर उसके दुष्परिणाम को समझकर छोड़ दिया था। "आज स्वतंत्रता की अभिलाषा ने नारी को कहां से कहां तक पहुंचा दिया है। मुक्ति संघर्ष तो उनका जीवन बन गया है। परंतु मुक्ति कैसी और किससे? शरीर से, मन से, अपनी जिम्मेदारियों से, अधिकारों से, घर से या फिर अपने अस्तित्व से। कौन-सा अस्तित्व ? अपने होने का या अपने अकेलेपन का।"[1]

स्पष्ट है कि ऐसी मुक्त स्त्रियाँ राष्ट्र के निर्माण में कदापि सहभागी नहीं बन सकती हैं। जब विवाह संस्था की नींव रखी गई तो स्त्री और पुरुष सहगामी की तरह रहें, जिनमें एक - दूसरे के अधिकार और कर्तव्य समानधर्मी बने। जब परिवार की ठोस नींव समानता के आधार पर

रखी जाती है, तो ऐसे ही परिवार की संतति नागरिकता के नए-नए आयाम गढ़ते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि व्यक्तियों से परिवार, परिवारों से कुल, कुलों से ग्राम, ग्रामों से नगर, नगरों से राज्य, राज्यों के सम्मिलित शक्ति स्वरूप के मिलने से राष्ट्र का निर्माण होता है। भारतीय जीवनशैली में इसीलिए स्त्रियों को वंदनीय, पूजनीय स्थान दिया गया है क्योंकि वह परिवार की केन्द्रमबिंदु होती है।

हमारे देश की सुंदरतम् संस्कृति, संपन्नता पर मुग्ध अथवा आसक्त होकर अन्य देशों के लोग भारत में आए। भारत में आने वाले ऐसे लोग अपने राष्ट्र की संस्कृति को भी साथ लेकर आए जिनमें कुछ लूटने के बाद चले गये, तो कुछ मुग्ध होकर हमारे देश का महिमागान करते हुए अपने देश में भारत राष्ट्र के गौरव का प्रचार करने लगे। कुछ आगन्तुक आसक्त होकर भारत में ही बस गये। आदिम युग से ही स्त्री - पुरुष की जीवन शैली प्रकृतितः अलग-अलग होते हुए भी भारतीय समाज के बौध्दिक विकास के कारण हमारे देश में स्त्री-पुरुष को समान माना जाता रहा, किन्तु पौराणिक कथाओं के माध्यम से स्त्री के स्थान को जाना जा सकता है कि वे सदैव पूजनीय नहीं रहीं। कभी भोगी गयीं तो कभी प्रेरणास्रोत बनकर पूजी गयीं। अहल्या का इंद्र द्वारा भोगा जाना, सीता की अग्नि-परीक्षा, द्रौपदी का वस्त्र-हरण आदि हमारे देश के मस्तक पर लगे कुछ ऐसे कलंक है जिन्हें हमारे चरित्र नायक राम द्वारा स्त्री की रक्षार्थ समस्त राक्षस जाति का विनाश करते हुए अहल्या की पवित्रता का प्रमाण देते हुए तथा पांडवों द्वारा द्रौपदी की मान रक्षार्थ महाभारत युद्ध के बाद भी नहीं मिटाया जा सका।

राष्ट्र की धरोहर स्त्री के गर्भ में ही पनपता है। संस्कृति की सुदृढ़ता राष्ट्र की नींव को मजबूत बनाती है। अतः जब-जब राष्ट्र पर दानवीय कलुषता गहराती है मीराबाई, जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई, पन्नाधाय, रानी रूद्रमा, रजिया सुल्ताना, पद्मिनी, शिवरानी देवी, कस्तूरबा, सरोजनी नायडू, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा प्रभृति सहस्त्रों स्त्रियाँ संकल्पबद्ध होकर राष्ट्र की रक्षा में निमग्न हो जाती हैं। कोई शिवाजी को संस्कारित करती हैं, तो कोई हाथ में हथियार लेकर कमरबंद हो जाती है और यदि परिस्थिति इन सबकी न हो तो हाथ में कलम लेकर ही मानव संस्कृति का परिमार्जन करने में निमग्न हो जाती हैं। जिस राष्ट्र में स्त्रियों को घर की चारदीवारी में कैद करके रखा जाता रहा हो, स्त्री तब भी घर में रहकर ही संतति को संस्कार देती हुई संस्कृति का मार्जन करती रहीं। बाल विवाह प्रथा वाले राष्ट्र की स्त्रियाँ जन्मतः समझदारी के संस्कार लेकर आती हैं। जिस देश में अपने पुत्र भगत सिंह को फांसी होने पर मां विद्यावती इसलिए रोती है कि उन्होंने एक और भगत सिंह को क्यों नहीं जन्म दिया .... ताकि उसे भी राष्ट्र पर निछावर कर सकें।

विश्व भर के राष्ट्रों में वहां के विकास को स्त्रियों के माध्यम से ही जाना जा सकता है। यथा - पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ भौतिक स्वतंत्रता हेतु जानी जाती है, तो भारत की स्त्रियाँ आध्यात्मिक स्वतंत्रता, त्याग, तपस्या, सहनशीलता के लिए जानी जाती हैं। जिन स्त्रियों को शक्तिपुंज का अवतार मानकर सूर्य से उनकी उपमा दी जाती है तथा नवरात्रि में पूजा जाता है, वहीं स्त्री राष्ट्र का निर्माण करने में समर्थ है। हमारे देश का विकास हज़ार वर्षों तक अवरूद्ध रहा , क्योंकि स्त्रियों को घर में अशिक्षित बनकर जीने के लिए विवश होना पड़ा। ज्यों – ज्यों स्त्रियाँ शिक्षा के प्रकाश में आती

जा रही है, त्यों – त्यों उनकी सोच और जीवन से अकर्मण्यता का अंधकार दूर होता जा रहा है। स्त्री को आज शिक्षित होकर आत्मनिर्भर मात्र नहीं बनना है, बल्कि प्रकृति प्रदत्त धरती की सहनशीलता, सिंधु की गंभीरता, शशि की शीतलता के साथ ही अपने अगाध शक्तिपुंज के साथ राष्ट्र-निर्माण में निमग्न होना है। हमारे देश के स्त्रियों की एक बड़ी संख्या आज भी रूढ़ियों, परम्पराओं से जकड़ी हुई है तथा जो आत्मनिर्भर बन रही हैं, उनमें से अधिकांश स्त्रीवादी विचारधारा की अति की राह पर चल पड़ी हैं। परिवार संस्था के ध्वंस की दोषी अधिकांशतः स्त्रियों को माना जाता है। किन्तु यह उक्ति सभी पर चरितार्थ होती है कि 'दूसरों पर उंगली उठाने वाले की तीन उँगलियाँ स्वयं उसी पर उठी होती हैं ।' आज भी कन्या भ्रूण हत्या हमारे समाज से समाप्त नहीं हुआ है । गर्भ से ही जिस देश की स्त्रियों का संघर्ष आरम्भ हो जाता हो, ऐसे राष्ट्र के लिए विकास तो 'काश' ही बनकर रह जाता है। पितृसत्तात्मक सोच से हमारे देश के पुरुष ही नहीं वरन स्त्रियाँ भी जकड़ी हुई हैं। अतः स्त्रियों को इस सोच से स्वयं को मुक्त करना होगा। कन्या भ्रूण को धारण करने वाली एक स्त्री ही होती है। ऐसे ही समय में शिक्षा के प्रकाश में आत्मनिर्भरता का संबल काम आता है। जिस समाज में गर्भिणी सीता को वन में भेज दिए जाने पर वे अपने पुत्रों को स्वयं संस्कारित करने का सफलतम् कर्तव्य निभाती हैं, जहाँ राजा दुष्यंत के द्वारा शकुंतला को शापवश विस्मृत किए जाने पर वह अपने पुत्र भरत को सिंह शावक के साथ संस्कारित करती हो तथा पांच पतियों के होते हुए भी जिस देश की रानी द्रौपदी के सम्मान को भरी सभा में तार-तार किया जाता हो, तब भी रक्तबीज की भाँति पुनः अपनी शक्ति समेट कर व्यवस्थाओं की विडंबना को चुनौती देने हेतु स्त्रियाँ तत्पर हो जाती हैं। प्राचीन एवं मध्ययुग की भांति आज की परिस्थिति नहीं रही। आज स्त्रियों की जिम्मेदारी पारिस्थितिक अनुकूलताओं के कारण बढ़ गयी है। एक 'निर्भया कांड' हो या लाखों दुराचार, जो स्त्रियों के स्वयं के परिजनों द्वारा किये जाते हों, स्त्रियों को रुकना नहीं हैं । सम्पूर्ण षड्यंत्रों को ध्वस्त करते हुए स्त्रियों को उसी प्रकार आगे बढ़ना है, जैसे - बादल के बीच सूर्य की किरणें। स्त्रियों को न भूतो न भविष्यति के आगाज़ के साथ सन्नध्द होना है । जब मुगलों ने अपनी संस्कृति के साथ भारत को अपना निवास स्थान बनाया तो दो संस्कृतियों के मेल तथा टकराव में भारतीय संस्कृति में मुगल संस्कृति का मेल हुआ, जिससे हमारे समाज की आधी दुनिया बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा, देवदासी-प्रथा के कारण घर की चारदीवारी में बंद हो गयीं । अशिक्षित आधे समाज की योग्यता से हमारा देश वंचित होता गया । ब्रिटिश शासन के साथ भारत में नव विज्ञान क्रांति का प्रवेश हुआ, साथ ही जाति, धर्म का बंधन समाज को बिखराव की ओर ले जाने लगा । हमारे देश के कर्णधारों ने स्त्रियों की योग्यता को राष्ट्र के निर्माण में लगाने हेतु शिक्षा के द्वार प्रशस्त किए । सरोजनी नायडू, अरुणा आसफ अली, मैडम भीकाजी कामा, एनी बीसेंट, सुचेता कृपलानी, भगनी निवेदिता, दुर्गा भाभी, कैप्टन लक्ष्मी सहगल प्रभृत्ति ऐसी ही पुनर्जागरण काल की स्त्रियां हैं, जिन्होंने सक्रिय रुप से राष्ट्र का गौरव बढ़ाया। स्त्रियाँ आज जीवन के हर मोड़ पर राष्ट्र की उन्नति में संलग्न है। साहित्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा जब अपने स्वयं के परंपरागत वैवाहिक जीवन का परित्याग करती हैं तो अनगिनत परिवार की संबल बनकर राष्ट्रदीप में

उर्जा का संचार करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान जब कलम उठाती है तो जन मन के रक्त में देशप्रेम का संचार करती हुई जेल यात्रा को मंदिर यात्रा की भांति जीवन का क्रम बना लेती हैं। सिनेमा जगत देविका रानी, वैजयंती माला, सोनल मानसिंह, लता मंगेशकर, रीता फारिया जैसी सहस्त्रों कलाकारों की योग्यता से देदीप्यमान है। खेल जगत में मैरी कॉम, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, झूलन गोस्वामी, गीता फोगाट, पीवी सिंधु जैसी सैकड़ों स्त्रियाँ देश का गौरव बढ़ा रही हैं। सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला अंतरिक्ष तक देश का परचम लहरा चुकी हैं। रक्षा क्षेत्र में किरण बेदी, निर्मला सीतारमण प्रभृति सैकड़ों स्त्रियां जल, थल, वायु क्षेत्र में देश की रक्षा में सक्रिय रुप से सन्नध्द हैं। हमारे देश की कानून व्यवस्था भी स्त्रियों के समग्र विकास हेतु संकल्पित हैं। इस तरह से स्त्रियों के विकास हेतु 'हिंदू कोड बिल में महिलाओं को संपत्ति का अधिकार, विधवा पुनर्विवाह, पुरुषों को केवल एक विवाह करने का अधिकार इत्यादि थे, जिसका पुरजोर विरोध परंपरावादियो ने किया था।'[2]

राजनीति के क्षेत्र में प्रधानमंत्री बनी इंदिरा गांधी जी, राष्ट्रपति बनी प्रतिभा पाटिल जी की योग्यता को भला कौन नकार सकता है ? राजनीति में सैकड़ों स्त्रियाँ ग्रामीण से लेकर राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र का मान बढ़ा रही हैं। राष्ट्र का ऐसा कौन सा क्षेत्र है ? जहां स्त्रियाँ नहीं हैं। डॉ. टेसी थॉमस ने 'अग्नि -5' मिसाइलों की योजना को सफलतम् स्वरूप प्रदान करते हुए भारत की 'मिसाइल वूमेन' और 'अग्नि – पुत्री' कहलाने का सम्मान पाया। साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा, पुलिस, प्रशासन, व्यापार, समाज सेवा, सेना, मीडिया, कला, पत्रकारिता, खेल जगत, अंतरिक्ष आदि सर्वत्र स्त्रियाँ अपनी कर्मठता एवं योग्यता के परचम लहरा रही हैं। एक ओर वह घर, परिवार, समाज को जोड़ने, व्यवस्थित रखने हेतु प्रतिबद्ध हैं तो दूसरी ओर अपनी योग्यता की आभा से राष्ट्र का मस्तक आभामंडित कर रही हैं। जिस देश की नारी सशक्त होती हैं, उस देश की गाथा शाश्वत बन जाती है। स्त्रियों को हमारे समाज ने जब भी अवसर दिया, वे आशा से बढ़कर ही उन अपेक्षाओं पर खरी उतरी हैं। कोई भी राष्ट्र स्त्रियों की प्रतिष्ठा और सम्मान करके ही सशक्त बन सकता है। यूरोपीय देशों में जहां सौंदर्य की देवी 'वीनस' है तो बुद्धि की देवी 'एथेना', उसी प्रकार भारत में बुद्धि की अधिष्ठात्री 'सरस्वती', अर्थ शक्ति की केंद्र 'लक्ष्मी' तथा जीव शक्ति की केंद्रबिंदु 'दुर्गा' के रूप में प्रतिष्ठित है। हमारे देश की संस्कृति में शिव भी शक्ति के बिना शव बन जाते हैं। 'महिलाओं को विकास प्रक्रिया से जोड़ने और उनके सशक्तिकरण हेतु आवश्यक है कि परिवार समाज का दृष्टिकोण उनके प्रति सौहार्दपूर्ण हो, शारीरिक, मानसिक हिंसा रहित हो। यदि महिला विकास की अवधारणा पर विचार किया जाए तो वह व्यक्ति एवं समूह के सर्वांगीण विकास से जुड़ा प्रश्न है।'[3]

ऐसी संतुलित संस्कृति वाले देश में जब-जब स्त्रियाँ अबला बनी केवल सेविका के रूप में अपनी शक्ति से अपरिचित रहेंगी तो वस्त्र, घर और आभूषण में ही संतुष्ट होकर अपना जीवन व्यर्थ में गवाएंगी। हमारे समाज में व्याप्त हजारों वर्षों की रूढ़ियों, परंपराओं के जाले को हटाने में कुछ शतक तो लगेंगे ही। 'स्त्री के आगे-पीछे जितने मिथक खड़े किए गए हैं, उनका उद्देश्य स्त्री को एक ख़ास तरह का प्राणी बना देना है, ताकि कोई

स्त्री इस घेरेबंदी से बाहर निकलना चाहे तो अपनी ही निगाह में अजूबा हो जाए ।'[4]

8 मार्च को विश्व भर में महिला दिवस मनाने भर से स्त्रियाँ सशक्त नहीं बनेगी और न ही उनकी योग्यता का पूर्ण उपयोग राष्ट्र निर्माण में हो सकेगा। स्त्रियों की प्रजजनीयता उनका गौरव बनें न कि भय का कारण, हमें ऐसे ही समाज का निर्माण करना है । हिडिम्बा जैसी कोमल स्त्री घटोत्कच जैसे महावीर की मां बनती है तो मातृत्व महिमामंडित होता है । 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' यह वाक्य शत-प्रतिशत स्त्री के गौरव को बढ़ाने वाला है । भारतीय संस्कृति के आदि पुरुष मनु अपनी कृति 'मनु स्मृति' में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' कहते हुए स्त्री की शक्ति को महत्व देते हैं, उनको वंदनीय, पूजनीय स्थान प्रदान करते हैं । यदि हम यह कहें कि पृथ्वी पर शक्ति, सौंदर्य की पराकाष्ठा प्रकृति ने स्त्रियों में रोपित किए हैं तो अत्युक्ति न होगी।

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज की सोच में पर्याप्त परिवर्तन लाया हैं। हमारे देश के लोगों की संकीर्णता कई अर्थों में परिवर्तित होने लगी है । औद्योगिकीकरण ने पूंजीवादी व्यवस्था को सुदृढ़ किया । फलतः चारों ओर भौतिकता का बोलबाला होने लगा । 'औद्योगिक क्रांति, नई तकनीक, अविष्कारों और संचार क्रांति से पहले बाजार के लिए स्त्री की भूमिका सीमित थी । लेकिन इसके बाद बाजार को नई भूमिका मिली, जिसमें स्त्री की भूमिका उसकी आर्थिक उपयोगिता के हिसाब से व्यापक हो गई ।'[5]

आधुनिक भारत के सशक्तिकरण हेतु स्त्री को स्वयं की उपयोगिता को भौतिक स्तर पर नहीं अपितु आत्मिक स्तर पर सफल सिद्ध करना है । भारत ही नहीं अपितु विश्व भर की महिलाओं को आज अपने – अपने राष्ट्र के निर्माण का सूत्र अपने हाथों में लेना होगा। उन्हें स्वयं के मानवी होने के रूप में अनुभूत करना होगा । जगह-जगह विज्ञापनों में स्त्री की कामुक छबि, धारावाहिकों में खलनायकी चरित्र आधी दुनिया को स्याह सिद्ध करते हैं । स्त्री को न तो तन उघाडू संस्कृति को अपनाना है, न ही सामंती संस्कृति में तन, मन और बुद्धि को ताले लगाने है। राष्ट्र का पूर्ण विकास न तो स्त्री की देह मुक्ति से हो सकता है, न हीं मात्र आर्थिक आत्मनिर्भरता से । उन्हें अपनी जगह अपनी योग्यता से ही बनानी होगी। 'ब्यूटी विद ब्रेन' की अवधारणा ने स्त्री की योग्यता की नई परिभाषा गढ़ी है। 'पूँजी जब कोई जगह बनाएगी तो वह अपने निशान भी बनाएगी, लेकिन ये जो जगह बनी है, आप ध्यान दें कि एक डेढ़ सदी की ही है। मीरा और रजिया, मुमताज आदि को छोड़ दें, तो ज्यादातर नाम आधुनिक काल के ही हैं जो पूंजीवादी विकास के साथ ही बने हैं। जाहिर है कि आधुनिक समय में ही औरतों को ज्यादा सत्ता मिली है। लेकिन यह सत्ता शून्य में नहीं बनी है, विकास के रास्ते बनी है ।'[6]

वर्तमान परिवेश में राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों के योगदान की भूमिका और भी विस्तृत हो गई है । परमाणु युग में स्त्री के प्रकृति पदत्त गुणों का विस्तार ही मानवता का संरक्षण करने में सक्षम है । स्त्री जो केवल भोजन बनाने तथा संतान उत्पत्ति तक सीमित रहती थी, उन्हें अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार केवल स्वयं की पहचान के लिए ही नहीं, अपितु राष्ट्र के निर्माण के लिए भी करना है। राष्ट्र के ऋण को उतारने के लिए स्त्रियों को आत्मकेंद्रीयता से बाहर निकलते हुए स्वयं का, परिवार का, संस्कृति का, समाज का तथा

मानवता के विस्तार का गुरुभार उठाना ही होगा। राष्ट्रीय रथ के दोनों पहियों के संतुलित सक्रियता से यह कार्य संभव हो सकता है। उपर्युक्त शोध विश्लेषण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि भारत के आत्मनिर्भर होने का स्वप्न देश के समस्त मानव शक्ति का सदुपयोग करते हुए ही साकार किया जा सकता है । सैकड़ों वर्षो से हमारे साहित्यकार, समाज सुधारक स्त्री को अपने नैसर्गिक गुणों का सदुपयोग करने की प्रेरणा देते रहे हैं। शिव - शक्ति के सम्यक संतुलन से देश ही नहीं मानवता का भी कल्याण संभव है। अतः राष्ट्र निर्माण में स्त्रियों के योगदान को विविध कालों में देखते हुए निर्धारित किया जा सकता है । समयानुसार अपनी-अपनी योग्यता का योगदान स्त्रियों ने कभी घर के अंदर तो कभी घर के बाहर, तो कभी वन प्रांत में, तो कभी अंतरिक्ष में, सर्वत्र दिया है। राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों के योगदान की क्रियाशीलता क्रमशः बनी रहे, इसी में मानवता और देश का कल्याण है।

सन्दर्भ सूची :

1. हिंदी उपन्यास : नारी विमर्श, शोभा वेरेकर, अभय प्रकाशन, कानपुर, 2010, पृष्ठ 154
2. वैश्वीकरण : चुनौतियां और संभावनाएं सं. राजेंद्र सिंह पटेल, राजू बघेल, ए.के. पब्लिकेशन, दिल्ली 2014, पृष्ठ 125
3. महिला साक्षरता एवं सशक्तिकरण, मंजू शुक्ला, भारत प्रकाशन, लखनऊ, 2011, पृष्ठ 7
4. स्त्री-पुरुष: कुछ पुनर्विचार, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 77
5. भूमंडलीकरण और स्त्री, कुमार भास्कर, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 50

6 . हंस, मार्च, 2001, पृष्ठ 109

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
भाषा संकाय,
विवेकानंद कॉलेज,
हैदराबाद, तेलंगाना

10

ज्योतिष शास्त्र का उद्गम वेद

डॉ. मोहित शुक्ल

शोध सारांश

सत्त्व, रजस् एवं तमस् की साम्यावस्था से उत्पन्न परम सूक्ष्म एवं पृथक्-पृथक् परमाणु के प्रथम संयोग का आरंभ ही प्रकृति है। इन्हीं संयोग विशेष विभिन्न अवस्थाओं में सूक्ष्म से स्थूल का संसर्ग ही 'सृष्टि' कहलाती है।

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में अग्नि को पुरोहित कहकर सृष्टि आदि की रचना का कर्त्ता, संचालक, सम्पादक तथा ज्योति स्थापक बताया गया है। उसे 'यज्ञस्य देवं' कहकर ज्योति या ज्योतिर्गणों, ज्योतिपिण्डों में संयोगशील एवं संगति धर्मा बताया गया है। उसे ऋत्विजम् कहकर ऋतुओं, अयनों, संवत्सरों तथा मास, पक्ष अहोरात्र, सन्ध्यादि काल का जनक बताया गया है। होता - कहकर विविध आदान एवं विसर्ग क्रियाओं का कर्त्ता, ज्योतियों व पदार्थो के आगमन एवं प्रत्यावर्तन का निमित्त, भूत तथा ज्योतियों के प्रसारण स्वाभाव वाला बताया गया है तथा इनके विविध परिणामों से विश्व मे होने वाली ताप-प्रकाश की स्थिति का निर्देष दिया गया है। रत्नधातमम् - कहकर काल एवं ताप के विविध परिणामों से उत्पन्न होने वाले रत्नों का जनक-प्रकट किया गया है। ज्यातिर्विज्ञान के अनुसार सृष्टि की रचना अग्नितत्त्व प्रधान एक पिण्ड के निरन्तर विखण्डन से हुयी है तथा आकाषीय पिण्डों की स्थिति ग्रहां के परस्पर आर्कषण बल से यथावत बनी हुयी है। वैदिक शिक्षा मे ज्योतिर्विज्ञान पर क्या प्रकाश डाला गया है। इसी विषय पर प्रस्तुत शोध-पत्र मे विचार किया जाएगा।

(सत्त्व, रजस् एवं तमस् की साम्यावस्था से उत्पन्न परम सूक्ष्म एवं पृथक्-पृथक् परमाणु के प्रथम संयोग का आरंभ ही प्रकृति है। इन्हीं संयोग विशेष विभिन्न अवस्थाओं में सूक्ष्म से स्थूल का संसर्ग ही 'सृष्टि' कहलाती है।

सृष्टि उत्पत्ति के तीन कारण हैं :-

1. निमित्त कारण **2. उपादान कारण**

3. साधारण कारण

निमित्त कारण दो हैं - एक सृष्टि को बनाने, धारण और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था करने वाले मुख्य निमित्त कारण परमात्मा, दूसरा-परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यान्तर बनाने वाले साधारण निमित कारण 'जीव'।

उपादान कारण - प्रकृति परमाणु है।

साधारण कारण - जब कोई वस्तु बनाई जाती है, तब जिन-जिन साधनों से अर्थात् ज्ञान, दर्शन, बल, हाथ और नाना प्रकार साधन और दिशा, काल और आकाश साधारण कारण हैं।

ज्योतिर्विज्ञान का मूल आधार ज्योतिर्मय पदार्थ ही हैं। ऋग्वेद का प्रारम्भ ही परम ज्योतिर्मय प्रधान तत्त्व अग्नि से होता है। उसी की स्तुति, उसी के अनुसन्धान, उसी के विशिष्ट एवं व्यापक गुणों का दर्शन तथा उपयोग प्रकट करने के लिये सर्वप्रथम मन्त्र में - **'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्'।**[1] के रूप में

परमात्मा ने मानव हित के लिये प्रदान किया।

सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः।[2]

अग्नि तत्त्व के सृष्टि के विविध पदार्थों के विविध संयोगों से अनेक नाम से प्रतीत होता है। अग्नि तत्त्व से ही सूर्य का निर्माण हुआ है। अतः सूर्य ज्योति है और ज्योति सूर्य है। सूर्य या उसकी ज्योति ही ज्योतिर्मय शक्ति ही-सविता के रूप में इस विश्व में अनेक प्रकार की उत्पत्ति तथा विविध ऐश्वर्य उत्पन्न करती है। अतः यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र का देवता सविता ही है और-देवो वः सविता-हमारा देव भी सविता है। वह ईड्य है क्योंकि इष, उर्ज, वायवः (प्राणों) आदि का वह प्रसव करता है-उत्पन्नकर्त्ता है। सविता वै देवानां प्रसविता-बताया गया है।

मूर्वानदिवः।[3]

सविता रूप से हमारे चारों ओर ऐश्वर्य का उत्पादक अग्नि ही आदित्य रूप से द्युलोक में विराजता है। **सूर्यात् सामवेदः[4]** का भाव सामवेद के आदित्य$सूर्य से है। है वह भी अग्नि। अतः सामवेद का प्रथम मन्त्र भी- **अग्न आयाहि वीतये[5]** -अग्नि से, अग्नि के गुणों को व्यवहार में लेने के लिये उपदेश दे रहा है। सविता ही **'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च'[6]** रूप में पृथ्वी द्यौ अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में है।

उपहूतौ वाचस्पतिः।[7]

अथर्ववेद का प्रथम सूक्त वाचस्पति देवता का है। उपरोक्त मन्त्र वाक्य में वाणी के जिस पति की आराधाना की गई है एवं जिसका आह्वान किया गया है वह मूल रूप से अग्नि ही है। अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्-अर्थात् अग्नि ही वाक् रूप में होकर मुख में प्रवेश कर गई। वाक् का मूल अग्नि होने से वह वाचस्पति भी है। समस्त ब्रह्माण्ड में जड़-चेतन में अग्नि व्याप्त है और उसकी व्याप्ति से वाक् भी अखिल ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। अतः चारों वेदों के प्रथम मन्त्र ज्योति से ही प्रारम्भ होते हैं। उपरोक्त, चारों ज्योतियों से ज्योतिर्विज्ञान का भी प्रारम्भ होता है। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में अग्नि को पुरोहित कह कर सृष्टि आदि की रचना का कर्त्ता, संचालक, सम्पादक तथा ज्योति स्थापक बताया है। उ से-यज्ञस्य देवं-कहकर ज्योति या ज्योतिर्गणों, ज्योतिपिण्डों में नतियदाता संयोगशील, संगति धर्मा बताया है। उसे ऋत्विजम् कह कर ऋतुओं, अयनों, संवत्सरों तथा मास, पक्ष, अहोरात्र, सवन, सन्ध्यादि काल का जनक बताया है। होता-कहकर विविध आदान एवं विसर्ग क्रियाओं का कर्त्ता, ज्योतियों एवं पदार्थों के आगमन एवं प्रत्यावर्त्तन का निमित, भूत तथा ज्योतियों के आकुंचन एवं प्रसारण स्वभाव वाला बताया है तथा इनके विविध परिणामों से विश्व में होने वाली ताप-प्रकाश की स्थिति का निर्देश दिया है। रत्नधातमम्-कहकर काल एवं ताप के विविध परिणामों से उत्पन्न होने वाले रत्नों का जनक-प्रकट किया है।

एकं वा इदं विवभूव सर्वम्।[8]

वेद ने जिस अग्नि रूपी ज्योति का ज्ञान प्रथम दिया वही इस अखिल ब्रह्माण्ड में अनेक रूप से संगठित हुई है। इस विज्ञान को वेद निम्न शब्दों में प्रकट कर रहा हैः -

एक एबाग्नि बहुधा समिद्ध एकः
सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।
एकैवोषाः सर्वमिदं विभात्येकं वा इदं विबभुव सर्वम्।।[9]

अर्थात् वेद प्रतिपादित प्रथम अग्नि तत्व ही अनेक रूप में संगठित, समिद्ध एवं प्रदीप्त हुआ। एक सूर्य विश्व में विविध अनेक ज्योति रूप में प्रकट हुआ। एक ही उषा इस सब में प्रकाशित हो रही है। उस एक तथा आद्य प्रतिपादित अग्नि से ही ये सब

विविध ज्योतियां या विश्व के समस्त पदार्थ विविध सत्तामय हुए।

त्रीणिज्योतींषि सचते स षोडशी।[10]

विश्व तीन ज्योतियों से पूर्ण है। प्रत्येक ज्योति की सात सात समिधायें ही सप्त रश्मियां है। अतः **'त्रिः सप्त समिधाः'**[11] । इक्कीस ज्योतिर्मय समिधाओं से इस पिण्ड और ब्रह्माण्ड में यज्ञ समिद्ध हो रहा है जिसे - **'देवा यज्ञं तत्वानः'**[12] । सृष्टि के देव आदि सृष्टि से आज तक अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। ये ही अग्नियां उष्ण, शीत, अनुष्णशीत रूप से हमें अनुभूत हो रही उष्ण अग्नियां सूर्य केन्द्र से, शीताग्नियां चन्द्र केन्द्र से तथा अनुष्णाशीत अग्नियां नक्षत्रादि रूप से क्रियाशील हैं। आपोज्योतिः, अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितम्, ज्योतिव्यापः प्रतिष्ठितः आदि वाक्य शीताग्नियों की ओर ही संकेत कर रहे हैं। उनकी-

प्रजापतिः प्रजया संरराण स्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी[13]

वह प्रजापति प्रजा के हित, मंगल, आनन्द की कामना से उपरोक्त तीन ज्योतियों का निर्माण करता है।

इन्द्रोज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः।[14]

परमेश्वर्यप्रदाता, परमेश्वर्यवान् परमात्मा ज्योति है। ज्योति में विश्व का ऐश्वर्य है। **'सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि'**[15] उस परम ज्योतिर्मय सर्वप्रकाशक से, उससे निर्मित, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि ज्योतियों से काल के छोटे से छोटे अवयव निमेषादि उत्पन्न हुए। काल के छोटे और बड़े अवयवों का ज्योतियों के आधार पर होता है। इन्हीं ज्योतियों के आधार पर ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्त लोक में प्रचलित हुए। इन तीनों सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र ज्योतिर्मय पदार्थों की गति, स्थिति, गुण, धर्म, प्रभाव का ही वर्णन ज्योतिष शास्त्र या ज्योतिर्विज्ञान है।

ज्योतियों का त्रिचक्र

जो उपरेक्त तीन ज्योतियों के त्रिचक्र को जानता है वह ज्योतिर्विज्ञानविद् है। वेद में एक स्थल पर संक्षेप में निम्न प्रकार वर्णन आता हैः -

ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तंत्रिचकं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम्।
चित्रामघा यस्य योगोधिजज्ञे तं वां हुवे अतिरिक्तं पिबध्ये।।[16]

ज्योतिर्मय, केतुर्मय, त्रिचक्र वाला सुखद, सुषद, भूरिवार रथ कालचक्र का ही है जिनमें चित्रा, मघा आदि नक्षत्रों के, सूर्यचन्द्रादि के सामीप्य से विविध संयोग उत्पन्न होते हैं। ज्योतिर्विज्ञान का संक्षेप में या बीज रूप से यह मन्त्र है।

प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शनम्।[17]

ज्योतिर्विज्ञान के विशेष ज्ञान के लिये नक्षत्रों का ज्ञान आवश्यक है। इसलिये वेद ने कहा- **'नक्षत्रेभ्यः स्वाहा, नक्षत्रियेभ्येः स्वाहा'**[18]। नक्षत्रों के ज्ञान, उनके प्रभाव, उपयोगिता आदि के ज्ञान के लिये हमारा निरन्तर प्रयत्न होना चाहिये और नक्षत्रों के विभिन्न समूहों के भी ज्ञान का प्रयत्न करना चाहिये। नक्षत्रों का भी वर्णन उनकी उपयोगिता के साथ निम्न प्रकार वेद में वर्णित है :-

सुहवमग्ने कृतिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा।
पुनर्बसू सुनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे।।
पुण्यं पूर्वाफाल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्राशिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधेविशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्।।
अन्नं पूर्वां रासतां में अषाढ़ ऊर्जे देव्युत्तरा आ वहन्तु।

अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम्।।
आ मे महच्छतभिषग्वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आरेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु।।[19]

इन मन्त्रों में नक्षत्रों के नाम और उनके प्रभाव का निम्न प्रकार प्रदर्शन किया है :-

हे अग्ने, 1-कृतिका और (2) रोहिणी नक्षत्र मेरे लिये अच्छे प्रकार यज्ञ के लिये होवें। 3-मृगशिरा कल्याणप्रद, 4-आर्द्रा सुखकारी हो। 5-पुनर्वसु सुन्दर चेष्टा वाला, 6-पुष्य अनुकूलता देने वाला, 7-आश्लेषा प्रकाशमान और 8-मघा सुन्दर निवास देने वाला हो। 9-पूर्वा फाल्गुनी और 10-उत्तराफाल्गुनी पुण्य साधक हैं, 11-हस्त और 12-चित्रा कल्याणकारक हैं। 13-स्वाति सुखदाता, 14- विशाखा सिद्धिदाता है, 15-अनुराधा यज्ञसिद्धिदाता, 16- ज्येष्ठा श्रेष्ठ नक्षत्र और 17-मूल नक्षत्र अशुभ कारक है। 18-पूर्वाषाढ़ा अन्नप्रदाता, 19-उत्तराषाढ़ा बलदायक और 20-अभिजित पुण्य साधक है, 21-श्रवण नक्षत्र तथा 22-धनिष्ठा पुष्टिकर्ता एवं धनदाता हैं। 23-शतभिषग् महद्यशदाता है। 24-पूर्वाभाद्रपद और 25-उत्तराभाद्रपद सुखवृद्धिकर्ता है। 26-रेवती और 27-अश्विनी ऐश्वर्यप्रदाता तथा 28-भरणी नक्षत्र धन से परिपूर्ण करने वाला है। ज्योतिष शास्त्र में 27-नक्षत्र मानते जाते है। प्रधान रूप से परन्तु 28वां नक्षत्र अमिजित् भी माना जाता है।

नक्षत्रों के उपरोक्त गुणों का प्रभाव पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्युलोक में होता है और विशेष प्रभाव पृथ्वी मण्डल पर होता है। यथा कृतिका और रोहिणी से ताप की वृद्धि होना, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा से पृथ्वी में अन्न और बल की वृद्धि, रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रों में पृथ्वी में विविध प्रकार के धन ऐश्वर्यों की वृद्धि होती है।

सर्वाणि ममेतानि शिवानि सन्तु।[20]

नक्षत्रों का प्रभाव जिस प्रकार से जड़ जगत् पृथ्वी, जल, भूमि, पर्व दिशा आदि पर पड़ता है उसी प्रकार जीव सृष्टि पर भी किसी न किसी रूप में मृदु, मध्य या तीव्र रूप में पड़ता है उन प्रभावों को सूर्य और चन्द्र सामर्थ्य प्रदान करते हैं। वेद में इसके बारे में निम्न मन्त्र प्राप्त होता है।

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु।।[21]

अर्थात् जिन नक्षत्रों को आकाश के भीतर, अन्तरिक्ष में तथा जिन नक्षत्रों को जल में, भूमि में, वृक्षों पर, विविध दिशाओं में चन्द्रमा समर्थ करता हुआ गति करता है वे सब मेरे लिये सुखदाता हों। अर्थात् चन्द्रमा जिस-जिस नक्षत्र मण्डल के साथ गति करता है उससे उनका प्रभाव इस पृथ्वी मण्डल पर तथा हमारे लिये सुखकारक हो जाता है। इसी प्रकार सूर्य भी जिस-जिस नक्षत्र के साथ रहता है वह भी हमारे लिये सुखदाता है। अर्थात् चन्द्रमा जिस-जिस नक्षत्र मण्डल के साथ गति करता है उससे उनका प्रभाव इस पृथ्वी मण्डल पर तथा हमारे लिये सुखकारक हो जाता है। इसी प्रकार सूर्य भी जिस-जिस नक्षत्र के साथ रहता है वह भी हमारे लिये सुखदाता होते हैं।

शं नो दिविचराग्रहाः।[22]

द्युलोक में गति करने वाले जो ग्रह एवं उपग्रह हैं वे हमारे लिए सुखदाता होवें। इस प्रकार ग्रहों के अस्तित्व के बारे में वेद ज्योतिर्विज्ञान के इस

विषय का भी बीज रूप से संकेत करता है। इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र इस बारे में निम्न प्रकार वर्णित है :-

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नौ मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः।।[23]

इस मन्त्र में चन्द्र, सूर्य (इनके आश्रित जो मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि) राहु, केतु और धूमकेतु का भी वर्णन मिलता है। इसी प्रकार **'स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः'**[24] । मन्त्र द्वारा खगोल को चार भागो में विभक्त करके नक्षत्र मण्डल का ज्ञान कराया गया है।

पृथ्वी

चक्राणासः परीणाहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमाना।
न हिन्वानास्तितिरुस्त इन्द्रं परिस्पशो अधात् सूर्येण।।[25]

यहां सूर्य के चारों ओर घूमने वाली पृथ्वी गोल है, 'चक्राणासः परीग्रहं' शब्द से प्रकट होता है।

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्व।[26]

यह पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, स्पष्ट है कि इसी वेद-मन्त्र से प्रेरणा लेकर आज से लगभग 1600 वर्ष पूर्व, कुसुमपुर (पटना) में 20 वर्षीय ज्योतिर्विद श्री आर्य भट्ट ने पृथ्वी का चलना सूक्ष्म गणित से सिद्ध किया। इस खगोलशास्त्री महागणितज्ञ की मृत्यु 23 वर्ष की अवस्था में हो गयी। यद्यपि वराह मिहिर ने आर्य भट्ट का सिद्धान्त पृथ्वी का चलना नहीं माना है, किन्तु ब्रह्म गुप्त ने आर्यभट्ट के सिद्धान्त का समर्थन किया है तथा पृथ्वी की वार्षिक गति 365 दिन 6 घंटा 12 मिनट 9 सेकेण्ड निर्धारित की है। जबकि आधुनिक ज्योतिषी 365 दिन 6 घंटा 9।23।100 सेकण्ड वार्षिक चाल निर्धारित करते हैं। वेध की सूक्ष्मता के कारण हैं। सूर्यसिद्धान्त ने काल भेदोऽत्र कारणम् कहा है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष शास्त्र का उद्गम वेद है, वेदों में अनेकों प्रमाण प्राप्त होते हैं, जिनमें इसी प्रकार से ज्योतिर्विज्ञान का समुचित रूप से उल्लेख मिलता है। पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है इसका प्रमाण भी वेदों में प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय संस्कृति की महत्ता को उजागर करते हुए ज्योतिष शास्त्र को विज्ञान के रूप में सिद्ध करने का समुचित प्रयास किया गया है। गणित ज्योतिष का मूल यदि वेद है तो फलित ज्योतिष शास्त्र का मूल भी वेदों में ही मिलता है क्योंकि कौन सा नक्षत्र शुभ है और कौन सा अशुभ है इसका स्पष्ट उल्लेख प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है, साथ ही ब्रह्माण्ड में स्थित नक्षत्र, ग्रह-उपग्रह आदि से भी प्रार्थना की गई है कि वे हमारे लिए शुभकारी हों, ये सभी बातें वेदों में फलित ज्योतिष के मूल को उजागर करती हैं।

सन्दर्भ -:

1 ऋग्वेद 1/1/1
2 यजुर्वेद 3। 9
3 यजुर्वेद 7। 24
4 शतपथ ब्राह्मण 14। 5। 4। 10
5 सामवेद मं .सं .1
6 यजुर्वेद 7।42

[7] अथर्ववेद 1। 1। 4

[8] अथर्ववेद 8। 58। 2

[9] ऋग्वेद 8। 58। 2

[10] यजुर्वेद 32। 5

[11] यजुर्वेद 32।15

[12] यजुर्वेद 31।15

[13] यजुर्वेद 32।5

[14] सामवेद मं. सं. 1831

[15] यजुर्वेद 32।2

[16] ऋग्वेद 8। 58। 3

[17] यजुर्वेद 30। 10

[18] यजुर्वेद 22।28

[19] अथर्ववेद 19। 7। 2-5

[20] अथर्ववेद 19। 8। 1

[21] अथर्ववेद 19। 8। 1

[22] अथर्ववेद 19। 9। 7

[23] अथर्ववेद 19। 9। 10

[24] ऋग्वेद 1। 89। 6, सामवेद मं. सं. 1875

[25] ऋग्वेद 1। 33। 8

[26] ऋग्वेद 10। 189। 1

साहित्य विभाग,
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
लखनऊ उ.प्र., भारत

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

Reg. No. 124726035RC0001
ISSN : 2562-6086
PRICE : $ 10.00 - Rs. 175

वर्ष 3, अक्तूबर-दिसंबर, 2021 अंक 4

पुस्तक भारती के प्रकाशन

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक : प्रो. रत्नाकर नराले,
पुस्तक भारती, टोरंटो, कनाडा, 180 Torresdale Ave. M2R 3E4 से प्रकाशित.
Email : pustak.bharati.canada@gmail.com * Web: pustak-bharati-canada.com